Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SAHITYA PARICHAI

1984 G. K. U.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5-3-84
RT-0573

फरबरी 1984

साहित्य परिचय

परिचायक-पत्र

हिन्दी साहित्य जगत् में एक अभिनव ग्रन्थ

प्रेमचन्द : एक सिंहावलोकन

सम्पादक—प्रो० ह० श्री० साने
हिन्दी-विभागाध्यक्ष
सर परशुरामभाऊ महाविद्यालय, पुणे (महाराष्ट्र)
प्रास्ताविक—डा० आनन्दप्रकाश दीक्षित

● प्रेमचन्द हिन्दी-उर्दू कथा-साहित्य के गौरव थे। उनका कथा-साहित्य एक ऐसा प्रस्थान-बिन्दु है, जहाँ से हिन्दी में मनुष्य की, उसकी आशाओं आकांक्षाओं की, आस्था-अनास्था की, शील-सदाचार और भ्रष्टाचार की, साहस और कर्मठता की, पाखण्ड और सचाई की, कर्म और संघर्ष की, नैतिकता और अनैतिकता की, वैविध्यपूर्ण और व्यापक पहचान की शुरूआत होती है।

● प्रस्तुत ग्रन्थ में साहित्य समीक्षा के प्रतिमानों का विवेचन इसलिये किया कि जिन निबन्धों में प्रेमचन्द के साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत है और प्रेमचन्द सामाजिक सन्दर्भों से जुड़े हुये, जनसामान्य के प्रति हार्दिक और व्यापक सहानुभूति रखने वाले, गांधीजी के क्रियाशील और रचनात्मक जीवन-दर्शन से प्रभावित, सर्जक कलाकर के नाते प्रसिद्ध हैं। प्रेमचन्द की साहित्य-कृतियां न केवल सामाजिक संदर्भों का बोध कराती हैं, बल्कि परिवर्तन की प्रक्रिया को भी गतिशील कराती हैं और जन-सामान्यों को इस हेतु क्रियाशील भी बनाती हैं।

● प्रेमचन्द जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में प्रस्तुत निम्न 21 निबन्धों में प्रेमचन्द साहित्य की समीक्षा उक्त प्रतिमानों के आधार पर की गई है। निश्चय ही यह निबन्ध-संग्रह प्रेमचन्द और उनकी रचना-कला के विषय में कुछ ज्ञात और अज्ञात तथ्यों को सामने लाता है। आशा है कि प्रेमचन्द-साहित्य के अध्येताओं के लिए यह ग्रन्थ अध्ययन की दिशाओं को उद्घाटित करेगा।

अनुक्रम

आकार-डिमाई — शीघ्र ही प्रकाश्य

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शैक्षिक तकनीकी' विशेषांक 1983-84

शिक्षा के अभिनव प्रयोगों में शैक्षिक तकनीकी का विकास अत्यन्त द्रुतगति से हो रहा है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण सरकार द्वारा इन्सेट 1-बी के माध्यम से शिक्षा-प्रसार की योजना है।

पूर्व में A T S—6 पर प्रसारित कार्यक्रमों की सफलता से भारत में शैक्षिक तकनीकी के अर्थ, स्वरूप, क्षेत्र तथा शैक्षिक तकनीकी के कठोर उपागम (Hardware) तथा कोमल उपागम (Software) के क्षेत्र में अनेक विकास-कार्यों का प्रादुर्भाव हुआ है तथा शिक्षा में परिवर्तन की क्षमता की सम्भावना शैक्षिक तकनीकी के विकास एवं उपयोग में स्पष्ट परिलक्षित होती है तथा अनेक विश्वविद्यालयों ने इस विषय का अपने शिक्षक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में समावेश किया है, परन्तु इस विषय पर हिन्दी भाषा में स्तरीय पाठ्य-सामग्री का नितान्त अभाव है।

इसी अभाव की पूर्ति हेतु 'विनोद पुस्तक मन्दिर' ने 'साहित्य-परिचय' के विशेषांकों की कड़ी में 'शैक्षिक तकनीकी विशेषांक' निकालने का निश्चय किया है।

शैक्षिक तकनीकी विशेषांक दो भागों में निकल रहा है। प्रथम भाग में शैक्षिक तकनीकी : अर्थ, स्वरूप, क्षेत्र, उपयोग तथा हार्डवेयर से सम्बन्धित लेख हैं जो कि मार्च 1984 में आपके समक्ष आ रहा है :

विषय-सूची

[शेष आवरण के तृतीय पृष्ठ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112995

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 19 : अंक 1-2]
जनवरी-फरवरी, 1984

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर 18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा—2
फोन : 76486

अनौपचारिक शिक्षा

संसार के धर्मगुरु कहे जाने वाले देश को आज निरक्षरों का देश कहा जाता है। आँकड़े प्रस्तुत करने वालों की भाषा को तो वे ही विद्वान और तथाकथित शिक्षाविद् जानें, परन्तु यह सत्य है कि विश्व के समस्त निरक्षरों में से आधे भारतीय हैं जो आज भी अँगूठा लगाकर जीवन यापन करते हैं। बीसवीं सदी के ये लोग भारतीय प्रजातन्त्र को चलाये जा रहे हैं और पद-लोलुप नेताओं को राजनेता बनाए जा रहे हैं। स्वतन्त्रता-प्राप्ति से कुर्सी की लड़ाई प्रारम्भ हुई, पिछले कुछ वर्षों में इसकी गति तेज हुई और अब तो यह तीव्रतम हो गई है। लड़ते हुए राजनेताओं को अपनी निरक्षर जनता को देखने का अवकाश नहीं है और आँकड़ों की भाषा में यही कहा जाता है कि देश में साक्षरता हेतु जी तोड़ प्रयास किये गये हैं, परन्तु इस सबका परिणाम यही है कि 38% आबादी साक्षर हुई है और 62% निरक्षर है। देश में 'समग्र क्रान्ति' का नारा लगा परन्तु कुर्सी की भूख ने 'क्रान्ति को क्रान्ति' में परिवर्तित कर दिया और राजनेताओं ने अनौपचारिक शिक्षा को पुनः हमारी मानसिक कसरत के लिए छोड़ दिया जिससे वे दत्तचित्त होकर कुर्सी की दौड़ में भाग ले सकें। हमारे देश में पिछले बत्तीस वर्षों से यही कुछ हो रहा है और देश की दूषित राजनीति से ग्रसित जनता दिन-प्रतिदिन निरक्षर होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण यही है कि अभी तक 'निरक्षरता हटाओ' का प्रयास करने वाला सच्चा राजनेता सामने नहीं आया। इस सबका एक कारण यह भी हो सकता है कि राजनेताओं को राजनीति के कुचक्रों के अतिरिक्त और कुछ समझने का अवकाश ही न हो अथवा उन्हें अनौपचारिक शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि स्पष्ट न हो। यह सब कहने से अभिप्राय यही है कि बिना राज्य-सहायता के और राजनेता के आशीर्वाद के अनौपचारिक शिक्षा का प्रसार असम्भव नहीं, तो कठिन अवश्य है; क्योंकि स्वतन्त्रता-प्राप्ति से पूर्व अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में जितनी सफलता की प्राप्ति हुई वह स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् नहीं हुई।

अनौपचारिक शिक्षा के दार्शनिक आधार

अनौपचारिक शिक्षा की सभी के लिए आवश्यकता है। आज अनौपचारिक शिक्षा प्रायः असफल होती जा रही है। सर्वश्री इवान इलिच और रीमर ने औपचारिक शिक्षा की विफलता की ओर ध्यान दिया। औपचारिक शिक्षा की सारहीनता पर पुस्तकें लिखी गयीं और 'कम्पलसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस-एजूकेशन' और 'दि स्कूल इज डेड' ने यह स्पष्ट किया कि औपचारिक तरीके से दी जाने वाली विद्यालयी अथवा विश्वविद्यालयी शिक्षा निरर्थक है। आज शिक्षा राजनैतिक विचारधारा के प्रचार का माध्यम बन गयी है। अतः अनौपचारिक शिक्षा की आवश्यकता को महत्त्व प्रदान किया जाना स्वाभाविक है। इसे केवल साक्षरता अथवा गणित शिक्षा तक सीमित करना गलत है। अनौपचारिक शिक्षा तो व्यक्ति में अपने वातावरण को समझने की क्षमता का विकास करती है। उदाहरणार्थ, यदि व्यक्ति बाजार में परिवार नियोजन के पोस्टर देखता है, पोस्टर देखकर यदि एक स्वाभाविक विचारधारा का प्रारम्भ होता है और व्यक्ति वर्तमान जनसंख्या से सम्बन्धित समस्याओं के प्रति जागरूक होता है तो यह औपचारिक शिक्षा का प्रभाव माना जायेगा। इसी प्रकार यदि व्यक्ति सिनेमा में मनोरंजन हेतु जाता है और वहाँ जाकर उसे देश की अखण्डता का आभास होता है, अथवा राक्षस-प्रवृत्ति के प्रति घृणा उत्पन्न होती है तो यह अनौपचारिक शिक्षा का दार्शनिक पहलू है। कहने का तात्पर्य है कि जो शिक्षा बिना किसी औपचारिकता के सम्यक् दृष्टिकोण विकसित करने में समर्थ हो और व्यक्ति को साक्षर करने में सहायक हो सके, उसे अनौपचारिक शिक्षा दर्शन कहा जा सकता है।

अनौपचारिक शिक्षा का अर्थ

स्वाभाविक रूप से विकसित अनुभव, ज्ञान एवं अवधारणा से जो शिक्षा प्राप्त होती है वह अनौपचारिक शिक्षा की परिधि में आती है। अनौपचारिक रूप से वातावरण के साथ समायोजन करने के प्रयत्न और अनुभव ही अनौपचारिक शिक्षा है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि बिना साधन और अनौपचारिक व्यवस्था के स्वाभाविक स्थिति में प्राप्त ज्ञान और उसका किसी स्थिति-विशेष में प्रयोग ही अनौपचारिक शिक्षा है। इसका अर्थ यह हुआ कि जीवन में स्वाभाविक और आकस्मिक रूप से प्राप्त ज्ञान और अनुभव अनौपचारिक शिक्षा कहलाते हैं। इस प्रकार की शिक्षा में कार्यक्रम की तैयारी अध्यापक द्वारा न होकर शिक्षा प्राप्त करने वालों की आवश्यकतानुसार ही होती है।

इवान इलिच, पाल गुडमैन, एवरेट रैमर आदि शिक्षाविदों ने औपचारिक शिक्षा पर जो आक्रमण किए उससे अनौपचारिक शिक्षा का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। क्या आज की शिक्षा केवल औपचारिक मात्र रह गई है? वर्तमान में तो यही आभास होता है कि पाठशाला की चहारदीवारी से बन्द, पाठ्यक्रम में कसी हुई शिक्षा की औपचारिकताएँ निभाना ही आज की शिक्षा है। यदि ठीक इसके विपरीत सकारात्मक रूप से देखा जाय तो कहा जा सकता है कि पाठशाला के बन्धन से मुक्त, निर्धारित पाठ्यक्रम से परे, समाजसेवियों द्वारा औपचारिक रूप से नागरिकों में देश हित की भावना और वातावरण के प्रति समायोजन करने की प्रवृत्ति तथा नागरिक चरित्र विकास ही अनौपचारिक शिक्षा है। वास्तव में यदि देखा जाए तो अनौपचारिक शिक्षा ही व्यावहारिक शिक्षा है जिसमें औपचारिकताओं का नाटक नहीं है और पाठ्यक्रम का आडम्बर नहीं है।

["शिक्षा में नव-चिन्तन" से साभार उद्धृत]

हिन्दी साहित्य ☼ संस्कृत ☼ मनोविज्ञान ☼ गृह विज्ञान एवं ☼ शिक्षा
के अधिकारी लेखकों की श्रेष्ठ पुस्तकों के प्रकाशक

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
की प्रमुख विशेषताएँ

शीघ्र एवं सतोषजनक सेवा
उचित कमीशन एवं मधुर व्यवहार
प्राप्त आदेशों की तुरन्त आपूर्ति

केवल आदेशित पुस्तकें भेजने की व्यवस्था, प्रत्येक पत्र का तुरन्त एवं समुचित उत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य के भण्डार की समृद्धि हेतु—

हमारे प्रकाशित शोध प्रबन्ध

● सूरदास और संतकवि नटनगोपाल नायकी स्वामिगल का तुलनात्मक अध्ययन	डा० के० आर० विट्ठलदास	60·00
● चैतन्य सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य	डा० नरेशचन्द्र बंसल	75.00
● हिन्दी-चित्रपट का गीति-साहित्य	डा० ओंकारप्रसाद माहेश्वरी	32·00
● माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डा० कृष्णदेव शर्मा	50·00
● भारतीय उपन्यासों में वर्णन-कला का तुलनात्मक मूल्यांकन	डा० इन्दिरा जोशी	50·00
● हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ	डा० शशिभूषण सिंहल	40·00
● प्रसाद-दर्शन	डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना	25·00
● वृन्द-ग्रन्थावली	डा० जनार्दनराव चेलेर	40·00
● वृन्द और उनका साहित्य	,,	40·00
● हिन्दी और तेलुगु वैष्णव-भक्ति साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन	डा० के० रामनाथन्	40·00
● रीतिकाल और आधुनिक हिन्दी कविता	डा० रमेशकुमार शर्मा	30·00
● कृष्णभक्ति साहित्य में रीतिकाव्य परम्परा	डा० राजकुमारी मित्तल	30·00
● ब्रज और बुन्देली लोकगीतों में कृष्णकथा	डा० शालिग्राम गुप्त	40·00
● हिन्दी और कन्नड में भक्ति आन्दोलन का तुलनात्मक अध्ययन	डा० हिरण्मय	40·00
● नाथपंथ और निर्गुण सन्तकाव्य	डा० कोमलसिंह सोलंकी	40·00
● सन्त वैष्णव काव्य पर तांत्रिक प्रभाव	विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	40·00
● आलवार भक्तों का तमिल प्रबन्धम् और हिन्दी कृष्ण-काव्य	डा० मलिक मोहम्मद	50·00
● कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन	डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	30·00
● हिन्दी में प्रत्यय विचार	डा० मुरारीलाल उप्रैतिः	40·00
● हिन्दी समास रचना का अध्ययन	डा० रमेशचन्द्र जैन	20·00
● आधुनिक हिन्दी कविता की भूमिका	डा० शम्भूनाथ पांडेय	40.00
● भारतीय साहित्य : तुलनात्मक अध्य०	सं० डा० ब्रजेश्वर वर्मा	20.00
● 'नवीन' और उनका काव्य	प्रो० जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव	20.00
● ब्रज साहित्य का मूल्यांकन	डा० भगवान सहाय पचौरी	40.00
● सूफी काव्य विमर्श	डा० श्याममनोहर पांडेय	20.00

हिन्दी वाङ्मय

● हिन्दी वाङ्मय : बीसवीं शती	सं० डा० नगेन्द्र	100·00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा –२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा द्वारा प्रकाशित

बी० एड० छात्रों के लिये उपयोगी पुस्तकें

प्रश्नोत्तर शैली में

पुस्तक	लेखक	मूल्य
● बी० एड० दिग्दर्शन (गाइड)	सं० भाई योगेन्द्रजीत, दिनेशचन्द्र भारद्वाज, विनोद कुमार अग्रवाल	५०.००
● शिक्षा में सरल सांख्यिकी	डा० रामपालसिंह वर्मा	८.००
● शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● शिक्षा मनोविज्ञान	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● शिक्षा सिद्धान्त की रूपरेखा	,,	१२.५०
● शिक्षा-सिद्धान्त	,,	९.००
● तुलनात्मक-शिक्षा	,,	८.५०
● भारतीय शिक्षा का इतिहास	कपूरचन्द जैन	११.००
● भारतीय शिक्षा की आधुनिक समस्याएँ	दिनेशचन्द्र भारद्वाज	१२.५०
● विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा	,,	१८.००
● विद्यालय प्रशासन	,,	९.००
● पाठशाला प्रबन्ध	,,	६.००
● स्वास्थ्य-विज्ञान	,,	८.००
● हिन्दी भाषा-शिक्षण	,,	७.००
● भूगोल-शिक्षण	,,	५.००
● विज्ञान-शिक्षण	डी० सी० शर्मा	५.००
● Teaching of English in India	P. D. Pathak	8.00
● गणित अध्यापन	जी० डी० सत्संगी, साहबदयाल	६.००
● इतिहास-शिक्षण	जी० डी० सत्संगी	६.००
● सामाजिक अध्ययन-शिक्षण	,,	५.५०
● नागरिक शास्त्र-शिक्षण	,,	६.००
● अर्थशास्त्र-शिक्षण	,,	५.००
● सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	(प्रेस में)
● समाज-मनोविज्ञान	प्रो० सक्सेना	८.००
● असामान्य मनोविज्ञान	प्रो० सक्सेना	९.००
● बाल-विकास की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	९.००
● बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) प्रथम वर्ष	शर्मा एवं सत्संगी	१५.००
● बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) द्वितीय वर्ष	,, ,,	१२.५०

नोट—१. शिक्षण विधियों पर उच्चकोटि के लेखकों की नवीनतम संस्करण की पुस्तकें सरल भाषा में उपलब्ध हैं।

२. सूचीपत्र के लिये कार्यालय को लिखें।

३. प्राध्यापकों से निवेदन है कि नमूनार्थ (स्पेसीमेन) पुस्तकें मँगाने हेतु अपना पता निवास का और कॉलेज का पद सहित स्पष्ट लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी बाल-साहित्य की अवदशा

कमलापति ओझा
विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, राजा श्रीकृष्णदत्त महाविद्यालय, जौनपुर

यह एक नग्न सत्य है कि हिन्दी साहित्य का सबसे दुर्बल अंग उसका बाल-साहित्य है। आधुनिक युग में हिन्दी साहित्य स्रष्टाओं ने इसकी बड़ी उपेक्षा की है जबकि हमारा संस्कृत वाङ्मय इस दृष्टि से पर्याप्त परिपुष्ट है। आदिकवि वाल्मीकि ने अपनी रामायण में बाल-चरित्र का अनुपम चित्रण किया है, महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भव में इस सन्दर्भ का अद्वितीय साहित्य प्रस्तुत किया है। अभिज्ञान शाकुन्तल में जब भरत सिंह से खेल रहे हैं तो शेरनी के बच्चे का दाँत गिनने को कहते हैं। यहाँ बालक की सहज स्वाभाविक साहसिक प्रवृत्ति का अनूठा वर्णन है। कादम्बरी में बाणभट्ट ने भी चन्द्रापीड की उत्पत्ति से लेकर दिग्विजय वर्णन तक बाल-जीवन का अत्यन्त मार्मिक वर्णन किया है। श्री हर्ष ने भी नैषध चरित महाकाव्य में नल की बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था का बड़ा सफल चित्रण किया है। आज का बँगला साहित्य भी इस दृष्टि से पर्याप्त सम्पन्न है। कवीन्द्र रवीन्द्र ने 'शिशु' और 'सहज पाठ' जैसी अमर कृतियों से बाल-साहित्य की उपयोगिता स्पष्ट की है और ईश्वरचन्द विद्यासागर, दक्षिणारंजन मित्र मजूमदार, उपेन्द्र किशोर, राय चौधरी, सुकुमार राय, सुखलता राय, योगीन्द्रनाथ सरकार, रामानन्द चट्टोपाध्याय, सीतादेवी, शान्तादेवी, प्रियम्बरा देवी आदि ने अपनी रचनाओं से बँगला साहित्य को समृद्ध किया है।

हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन महाकवि सूरदास ने "मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो।" अथवा "मैया कबहिं बढ़ेगी चोटी" इत्यादि पदों की रचना कर बाल-साहित्य के सहज प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। परन्तु खेद का विषय है कि बाद के कवियों और साहित्यकारों ने महाकवि के इस मार्गदर्शन की घोर अवहेलना की है। सूरदासजी जहाँ शृङ्गार रस के जाने-माने कवि हैं, वहीं उनकी वात्सल्य रस की रचनायें भी बाल-जीवन की प्रायः सभी मनोरम परिस्थितियों का सजीव चित्रण प्रस्तुत करने में सिद्ध-हस्त हैं। जन्म से अन्धे कवि सूरदास के शिशु-जीवन तथा मातृ-हृदय की सूक्ष्म एवं मनोवैज्ञानिक चेष्टाओं के मुखर चित्रण उनके पुनीत अन्तःकरण की अगाध प्रेममयी धारा में घुलकर अत्यन्त मर्मस्पर्शी बन गये हैं। इस वात्सल्य वर्णन में संसार का कोई साहित्य सूर की समता करने में समर्थ नहीं है। यहाँ 2-3 उदाहरण अनुपयुक्त नहीं होंगे :

माता यशोदा जल में चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब दिखाकर श्रीकृष्ण को बहलाने का प्रयास करती हैं, इस स्थिति में सूर का बाल-मनोविज्ञान का ज्ञान मुखर हो उठा है :—

आन बतावति आन दिखावति बालक तौ न पतीजै।
खसि-खसि परत कान्ह कनिया तैं सुसकि सुसकि मन खीजै॥

बाल-सहज अज्ञानता का अनूठा वर्णन करते हुए सूरदास जी लिखते हैं—

किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।
मनिमय कनक नन्द के आँगन मुख-प्रतिबिम्ब पकरिवे धावत॥

शिशुओं के इस भोलेपन और कौतूहलपूर्ण स्थिति को देख-कर किसका हृदय शिशुत्व पर न्यौछावर न हो जायगा?

इन रचनाओं से प्रकट है कि सूरदासजी में बाल-साहित्य रचना की मौलिक प्रतिभा थी। लोक-जीवन एवं लोक-संस्कृति को प्रतिबिम्बित करने वाली गति-विधियों की भली-भाँति सूक्ष्म अनुभूति उन्होंने की थी तथा बालकों की मानसिक क्रियाओं, संवेगों एवं अनुभूतियों का गहन अध्ययन किया था। बाल्यकाल के क्रमिक विकास में विभिन्न रुचियों के सक्रिय होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का भी उन्हें अच्छा ज्ञान था। तुलसीदास जी भी बाल-चरित्र वर्णन में बड़े सिद्धहस्त हुए हैं। यह सर्व-विदित है कि प्राचीन जातक कथायें, कथा सरित्सागर, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि बाल-साहित्य की अति ख्याति-प्राप्त रचनायें हैं। अतिरंजित कल्पना-क्षेत्र की ये सब अमर कृतियाँ हैं। इनकी सार्थकता का प्रमाण यह है कि संसार की अनेक भाषाओं में इनका अनुवाद किया जा चुका है और इन रचनाओं ने अनेक भाषाओं के बाल-साहित्यकारों को युगों से प्रभावित किया है। इतनी अच्छी विरासत तथा सूरदास, तुलसीदास एवं भारतेन्दु जैसे मार्गदर्शकों के होते हुए भी आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों द्वारा बाल-साहित्य की उपेक्षा सोचनीय है।

इस उपेक्षा के कई कारण हो सकते हैं जिनमें प्रमुख कारण हिन्दी-भाषी क्षेत्र की जनता का प्रायः निर्धनता से पीड़ित रहना है। इस क्षेत्र के अध्ययन में रुचि रखने वाले नागरिक चाहते हुए भी अपने बालकों के लिए पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त पुस्तकें खरीदने में प्रायः असमर्थ होते हैं। कुछ थोड़े लोग, जो समर्थ होते हैं वे इस बाल-साहित्य की आवश्यकता की अनुभूति नहीं करते अथवा इसके महत्त्व से अवगत नहीं रहते। थोड़े-से लोग जो अपने बालकों के लिए बाल-साहित्य खरीदना चाहते हैं वे क्रय करते हैं तो उनको यह साहित्य बहुत मँहगा पड़ता है। माँग कम होने के कारण प्रकाशक बाल-साहित्य का प्रकाशन सीमित संख्या में करते हैं इसलिए इसका मँहगा होना स्वाभाविक है। दूसरी ओर प्रकाशक साहित्यकार को समुचित पुरस्कार नहीं दे पाता, इसलिए साहित्यकार भी बाल-साहित्य की रचना से मुख मोड़कर अपनी प्रतिभा का प्रयोग अन्य दिशा में करता है। आजकल बाल-साहित्य में जो कुछ प्रकाशन हुआ है उसका श्रेय साहित्यकारों से अधिक प्रकाशकों को है। बाल-साहित्य की जो कुछ थोड़ी-बहुत माँग होती है, उसकी पूर्ति के लिए आर्थिक लाभ की दृष्टि से प्रकाशकों ने लेखकों को पकड़ा है। अस्तु, हिन्दी के बाल-साहित्य में अधिकतर पौराणिक गाथाओं के संक्षिप्त संस्करण हैं अथवा दूसरी भाषाओं के बाल-साहित्य के अनुवाद मात्र हैं। उसमें साहित्य-कारों की प्रतिभा, ज्ञान अथवा अनुभूति की मौलिकता का नितान्त अभाव है। हिन्दी में बाल-साहित्य के नाम पर जो पौराणिक कथाओं का रूपान्तर हुआ है वह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। क्योंकि प्रत्येक समाज की संस्कृति के अनुकूल कुछ विशिष्ट मान्यतायें एवं आदर्श होते हैं, जिनका बाल-साहित्य में समावेश अपेक्षित होता है। परन्तु यह समावेश रुचिकर तथा मनोवैज्ञानिक ढंग से होना चाहिए। प्रत्यक्ष रूप से इनका ज्ञान प्रदान करना बहुत संगत नहीं प्रतीत होता। जहाँ तक अनूदित साहित्य का प्रश्न है वह हमारी राष्ट्रीय भावना को प्रेरित करने में समर्थ है। इसमें प्रभावोत्पादक, व्यंजनापूर्ण शब्द-विन्यास का सर्वथा अभाव है, जो किसी भी भाषा एवं साहित्य की प्रौढ़ता और क्षमता की अभिवृद्धि के लिए अति आवश्यक है।

हिन्दी में बाल-साहित्य की अवदशा का दूसरा प्रमुख कारण मनोवैज्ञानिक माना जा सकता है। साधारणतया हम मान बैठते हैं कि बालक के लिए कुछ विशेष लिखने की आवश्यकता ही नहीं है। परन्तु हम भारी भूल करते हैं जब यह भूल जाते हैं कि बालक की जिज्ञासा बड़ी बलवती होती है, उसकी कल्पना बड़ी विलक्षण होती है और भावना भी बड़ी ब्यापक होती है जो निरन्तर कुछ जानना या पाना चाहती है। उसकी जिज्ञासा किसी बन्धन में बँधना नहीं जानती जबकि हमारी जिज्ञासा रूढ़ हो जाती है; यथा—किसी व्यापारी की जिज्ञासा मात्र अपने लाभ में सीमित होती है अथवा लिपिक की जिज्ञासा अपने आफीसर को प्रसन्न रखने अथवा अपनी फाइल पूरी करने से बँधी होती है, परन्तु बालक की जिज्ञासा असीमित एवं सदैव उल्लसित रहती है। अतएव बाल-साहित्य में सदा यह प्रयास होना चाहिए कि बालक की यह कल्याणकारी जिज्ञासा कहीं कुण्ठित न होने पाये। लेखक अथवा कवि को यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रौढ़ तो यथार्थ का सामना करने के लिए कल्पना का सहारा मान लेता है परन्तु बालक तो कल्पना में ही जीता है। उसके आदर्श और यथार्थ अथवा सत्य और असत्य में विशेष अन्तर नहीं होता।

इन मनोवैज्ञानिक तथ्यों की अवहेलना होने से बालक मानसिक ग्रन्थियों का शिकार बन सकता है। चीनी महिला के पैरों की तरह बालक की मानसिक वृत्तियाँ जीवन-भर के लिए लाइलाज़ हो सकती हैं।

[शेष पृष्ठ 13 पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-विकास में समाज का योगदान

प्रो० आर० के० श्रीवास्तव
शिक्षाशास्त्र विभाग, गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, टिहरी

प्राणी का मूल लक्ष्य है—उदय, विकास और अन्त। मानव के सन्दर्भ में इन्हें जन्म, विकास और मृत्यु की संज्ञा दी जाती है। मानव का विकास एक सतत् प्रक्रिया है। इस विकास की चार भिन्न-भिन्न स्थितियाँ हैं :—

(i) शैशव, (ii) बाल्य, (iii) कैशोर्य, तथा (iv) प्रौढ़।

मानव के विकास में सबसे अधिक महत्त्व बाल-विकास का है।

बचपन—मानव के व्यक्तित्व का उद्गम-स्थल है। बालक ही देश के भविष्य हैं। वे ही संसार रूपी बगिया के आशा-प्रसून हैं। अतः विश्व में जो भी सुख हैं उन्हें इन बालकों के बचपन पर न्यौछावर कर देना चाहिए। बालक ही हमारी आशाओं का केन्द्र है। वही हमारे धर्म-कर्म, शिक्षा, संस्कृति का रक्षक है। बालक की उपेक्षा, मानवता की उपेक्षा है। आज का बालक ही तो कल का कर्णधार है। बालकों पर पड़ने वाले संस्कारों एवं चरित्र-निर्माण पर राष्ट्र के भावी जीवन का विकास अवलम्बित होता है। आज के बालक के मन में कल का जिम्मेदार और देशभक्त नागरिक बनने का बीज बोना न केवल देश की महानतम् सेवा है, अपितु श्रेष्ठतम रचना कार्य भी है। एक शिक्षा-शास्त्री ने कहा था कि किसी भी समाज की प्रगति का मापदण्ड इस बात से निर्धारित किया जाता है कि उस समाज के बालक कितना ज्ञान अर्जित करते हैं, और कितना सुसंस्कृत होते हैं।

बालक का सम्पूर्ण जीवन समाज का ही दिया हुआ होता है। वह लिखना-पढ़ना, बोलना-चालना तथा अन्य व्यक्तियों के साथ व्यवहार करना, सभी कुछ समाज में ही रहते हुए सीखता है। बालक का व्यक्तित्व रहस्य से परिपूर्ण होता है। उसके व्यक्तित्व के विकास में ही हमारे समाज का व्यक्तित्व निहित है।

मानव-समाज का आधार सामाजिक समूह है। सामाजिक समूह का निर्माण दो या दो से अधिक व्यक्तियों द्वारा होता है। बालक का सबसे छोटा एक मूलभूत सामाजिक समूह उसका परिवार होता है। बालक परिवार में जन्म लेते ही अपने माता-पिता के सम्पर्क में आता है। इसके पश्चात् वह अपने भाई-बहिनों एवं अन्य सदस्यों के बीच में रहते हुए अपनी प्रकृति के अनुसार विकसित होता है। प्रत्येक परिवार कुछ अन्य सामाजिक समूहों से सम्बन्धित होता है; जैसे—जाति, व्यावसायिक समूह, धार्मिक समूह, आर्थिक समूह, राजनैतिक समूह आदि। बालक जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे वह अन्य समूहों की सदस्यता ग्रहण करता जाता है। ये सभी समाज के प्रमुख समूह, वर्ग एवं संगठन बाल-विकास में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में अपना प्रभाव डालते हैं। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री मैकाइवर एवं पेज के मतानुसार भी बालक अपने पालन-पोषण, सुरक्षा, आराम, शिक्षा तथा अन्य महत्त्व-पूर्ण अवसरों एवं सेवाओं के लिए समाज पर निर्भर रहता है। वह समाज में रहकर ही अपने विचार एवं इच्छाएँ भली प्रकार व्यक्त व पूरी कर पाता है।

समाज में रहकर ही बालक का पालन-पोषण होता है। उसके अन्दर प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, अनुकरण और समझ आदि गुणों का विकास होता है।

बालक जन्म के समय पूरा पशु होता है। समाज में रहकर जब उसका विकास होता है तभी वह सच्चे अर्थों में मनुष्य बन पाता है। बाल-विकास में समाज अपना योगदान अपनी विभिन्न इकाइयों के माध्यम से देता है। इनमें से प्रमुख इकाइयाँ—परिवार, पड़ोस, स्कूल, खेल-कूद, जाति, समुदाय, धर्म और सह संगति आदि हैं। बच्चे को मुख्य रूप से प्रेम, स्नेह तथा सुरक्षा की आवश्यकता होती है। इन सबकी पूर्ति बच्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ में परिवार, तदुपरान्त पाठशाला में शिक्षक, अन्य व्यक्तियों तथा बच्चों के सान्निध्य से करता है। समाज में ही बालकों को प्रेरणा मिलती है और वे पढ़ने-लिखने, समझने तथा भाव व्यक्त करने में धीरे-धीरे समर्थ होने की योग्यता हासिल कर लेते हैं।

प्रायः परिवार का ही यह उत्तरदायित्व होता है कि वह बालकों का उचित रूप से पालन-पोषण एवं सुरक्षा करे। परिवार में रहते हुए ही बालक में प्रेम, त्याग, सहानुभूति जैसे गुण उत्पन्न होते हैं। घर से निकलकर पड़ोस में रहने वाले बालकों के साथ मिलकर बालक खेलकूद एवं मनोरंजन हेतु अन्य बालकों के सम्पर्क में आता है। इस प्रकार पड़ोस भी बाल-विकास में अपना अनुपम सहयोग देता है। विद्यालय में बालक को आचार-विचार की शिक्षा, पुस्तकीय शिक्षा एवं अनुशासन की शिक्षा मिलती है।

विद्यालय में सबसे गुरुतर भार शिक्षकों पर है, क्योंकि शिक्षक अपनी सूझ-बूझ एवं विद्वतापूर्ण आचरण से एक सामाजिक क्रान्ति ला सकता है। बाल-विकास की प्रक्रिया में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। विद्यालय को तो वैसे भी एक लघु समाज की संज्ञा दी जाती है। समाज अपने विद्यालय के माध्यम से ही बाल-विकास की प्रक्रिया को सुचारु रूप से सही दिशा में चला पाता है।

बाल्यकाल के बाद ही क्रमशः किशोर, युवा और प्रौढ़ काल आते हैं। इन तीनों कालों में मानव के ज्ञान एवं कला-कौशल में निरन्तर वृद्धि होती रहती है। परन्तु बाल्यकाल 'संचय-काल' कहलाता है। क्योंकि इसी दौरान उसके अन्दर मानवीय गुणों—प्रेम, सहानुभूति, दया, क्षमा, सहनशीलता, परोपकार आदि का विकास होने लगता है। बाल-विकास की अवधि में बालक को छल, कपट, द्वेष, ईर्ष्या जैसे अवगुणों से बचाना होता है। हमें बाल-विकास के समय बालक रूपी पौधे को बुराइयों-रूपी दीमक, कीटाणु, घास-फूस जैसी बीमारियों से बचाना होता है। इस प्रकार यदि समाज की विभिन्न इकाइयाँ अपने-अपने कार्यक्रमों के माध्यम से बाल-विकास में योगदान करेंगी तो निःसन्देह हमारे स्वप्नों के बालकों का निर्माण हो सकेगा। बालक ही राष्ट्र की सम्पत्ति हैं। अतः उनका दायित्व केवल परिवार पर ही नहीं अपितु सारे समाज पर होता है। इसके लिए सभी को अपनी-अपनी भूमिका का निर्वाह, पूर्ण निष्ठा से करना पड़ता है।

समाज को बाल-विकास के लिए विभिन्न योजनाओं का भी सहारा लेना पड़ता है। गाँधी जी का भी यह मत था कि बच्चों की सेवा ही राष्ट्र की सही व उत्तम सेवा है।

बाल-विकास के दौरान प्रत्येक बालक अपनी जाति के रीति-रिवाज व प्रथाओं से अवगत होता है। धार्मिक समूह का सदस्य होने से बालक को कुछ आदर्श, मूल्य एवं संस्कार तथा परम्पराएँ मिलती हैं। इस प्रकार समाज की ये विभिन्न बाल-विकास में अपना-अपना योगदान देकर बालक का बहुमुखी विकास करती हैं।

बच्चे का वास्तविक विकास अपने समाज के सदस्यों के बीच ही होता है। इसलिए जैसा समाज होता है, वैसे ही उसके बच्चे बनते हैं। बाल-विकास के विभिन्न पक्षों पर समाज अधोलिखित रूप से प्रभाव डालता है—

(i) **बालक का शारीरिक विकास**—बाल-विकास में शारीरिक विकास सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि जब तक बालक का शरीर स्वस्थ नहीं होगा, उससे कोई भी अपेक्षा करना सम्भव नहीं है। समाज इस प्रक्रिया में अपनी प्रमुख इकाइयों—परिवार, पड़ोस, समुदाय, राज्य आदि का सहयोग लेता है। समाज ने इसके लिए खेलकूद, व्यायाम आदि कार्यक्रमों की व्यवस्था की है।

(ii) **बालक का मानसिक विकास**—बालक का मानसिक विकास सबसे पहले अपनी माता के द्वारा किया जाता है। परिवार में माता ही बालक की प्रथम शिक्षिका मानी जाती है। तदुपरान्त परिवार के अन्य सदस्य इसमें सहयोग देते हैं। प्रत्यक्ष रूप से मानसिक विकास के सबसे बड़े साधन विद्यमान होते हैं। बाल-विकास के इस पक्ष पर समाज अपनी विभिन्न इकाइयों का सहयोग लेकर कार्य करता है।

(iii) **बालक का चारित्रिक एवं नैतिक विकास**—बच्चा अधिकतर अनुकरण के आधार पर सीखता है। समाज इसके लिये अपनी विभिन्न इकाइयों के माध्यम से वांछित आचरण की शिक्षा देता है। यह कार्य व्यावहारिक एवं अनौपचारिक साधनों द्वारा ही अधिकतर किया जाता है। चारित्रिक एवं नैतिक विकास ही बालक के भावी जीवन का आधार होता है।

[शेष पृष्ठ 13 पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य ☆ ☆ का ☆ ☆ विद्यार्थी उपयोगी प्रकाशन ☆ ☆

पुस्तक	लेखक	मूल्य
कादम्बरी कथामुखम्	डा० कृष्ण अवतार बाजपेयी	१२.००
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ	डा० जयकिशन प्रसाद	१८.००
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० बाबूराम त्रिपाठी	१६.००
संस्कृत नाट्य साहित्य	डा० जयकिशन प्रसाद	१२.००
प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह, उषा यादव	२८.००
भारतीय संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह	२०.००
संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत व्याकरणम्	डा० बाबूराम त्रिपाठी	२४.००
भारतीय दर्शन	डा० रामकृष्ण आचार्य एवं बाबूराम त्रिपाठी	१२.००
संस्कृत निबन्धांजलिः	डा० रामकृष्ण आचार्य	१५.००
ऋक्-सूक्त-समुच्चयः	डा० रामकृष्ण आचार्य	२०.००
मेघदूतम् [सम्पूर्ण, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	९.००
मेघदूतम् [पूर्वमेघ, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	६.५०
संस्कृत वाङ्मय : मौखिकी	डा० गोविन्द त्रिगुणायत	६.००
वैदिक साहित्य का इतिहास	डा० राजकिशोर सिंह	८.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद	११.००
काव्यप्रकाश : एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	९.००
ध्वन्यालोक: एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००
कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तलम्	डा० जयकिशन प्रसाद	५.५०
चतुर्वेद	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
कालिदास और मेघदूत	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
सुबोध संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
साहित्य दर्पण : एक अध्ययन	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	५.५०
रघुवंशम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	४.५०
रघुवंशम् [द्वितीय सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
रघुवंशम् [१३ वाँ सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	३.००
अभिज्ञान शाकुन्तलम् : चतुर्थ अंक	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्र से)	डा० पारसनाथ द्विवेदी	४.५०
शिशुपालवधम् महाकाव्यम् [सर्ग १, २]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	१०.००
शिशुपाल वधम् [सर्ग १]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
कुमार सम्भवम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
कुमार सम्भवम् [पंचम सर्ग]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
किरातार्जुनीयम् [प्रथम सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
किरातार्जुनीयम् [द्वितीय सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
भारतीय दर्शन (प्रश्नोत्तर)	डा० राजकिशोरसिंह	८.००
भारतीय संस्कृति [प्रश्नोत्तर में]	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास तथा संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल	७.००
व्याकरण कौमुदी [भाग—१]	डा० बाबूराम त्रिपाठी	३.००
भरतमुनि प्रणीतम्—नाट्यशास्त्रम् [प्रथम एवं द्वितीय अध्याय]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००
सदानन्द प्रणीत—वेदान्तसार	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
संस्कृत गद्य रत्नाकर : दिग्दर्शन	डा० शर्मा, खण्डेलवाल	८.००

[आ० वि० प्रकाशन [illegible]]

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय विश्वविद्यालयों की बी० एड० परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रमानुसार
प्रशिक्षण विद्यालयों में तहलका मचाने वाली विद्यार्थियों की एकमात्र लोकप्रिय पुस्तक

बी० एड० दिग्दर्शन (गाइड)

[पूर्णतः संशोधित एवं परिमार्जित चौदहवाँ संस्करण १९८४]

सम्पादक

भाई योगेन्द्रजीत   दिनेशचन्द्र भारद्वाज   विनोदकुमार अग्रवाल

अद्यतन चौदहवाँ संस्करण में मेरठ, गोरखपुर, फैजाबाद एवं विशेष रूप से म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के नवीन पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न प्रकरण जोड़कर साथ ही अन्य विश्वविद्यालयों के वर्ष 1983 तक के नवीन प्रश्नों का सारांश देकर पुस्तक को अधुनातन रूप दिया गया है।

अनुक्रमणिका

- शिक्षा सिद्धान्त तथा भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक विचारधारा
- शिक्षा मनोविज्ञान
- भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएँ
- पाश्चात्य शैक्षिक विचारधारा
- विद्यालय प्रशासन, संगठन और स्वास्थ्य-विज्ञान
- शिक्षण-कला एवं विभिन्न विषयों का शिक्षण

प्रमुख विशेषताएँ

- प्रस्तुत संस्करण में 'शिक्षा-सिद्धान्त' के प्रथम प्रश्नपत्र में शिक्षा और समाज, शिक्षा और राजनीति, शिक्षा और अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान, नैतिक शिक्षा, शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियाँ—मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक एवं समाहारक तथा स्वतन्त्रता और अनुशासन आदि नवीन अध्यायों का समावेश किया गया है।
- द्वितीय प्रश्नपत्र में मनोविज्ञान व्यवहार के रूप में, अध्ययन आदतों का विकास, निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण, समाजमितिक एवं क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रायोजना आदि विशेष प्रकरणों का समावेश।
- अन्य प्रश्नपत्रों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, आजीवन शिक्षा, औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा विद्यालय तथा समुदाय, जनसंख्या-शिक्षण, शैक्षिक तकनीकी आदि कतिपय विशिष्ट अध्यायों का उल्लेख विशेष रूप से उ० प्र० एवं म० प्र० की शिक्षा के सन्दर्भ में किया गया है।
- इसमें प्रश्नों का विस्तार एवं आकार विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार दिया गया है। जटिल एवं सूक्ष्म विषयों का प्रतिपादन, सरल, स्पष्ट और वैज्ञानिक ढंग से सरल भाषा में किया गया है।
- प्रस्तुत संस्करण का मुख्य आकर्षण : शिक्षणकला नामक खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न विषयों—हिन्दी, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, गणित तथा गृहविज्ञान की शिक्षण-पद्धतियों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण सामग्री को सरल एवं सुबोध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सूचना—म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का अनुपूरक ३·०० रु० में उपलब्ध है।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण सभी दृष्टियों से उत्तम एवं उपलब्ध गाइडों में सर्वश्रेष्ठ व सस्ता है।

आकार : डिमाई   पृष्ठ संख्या : १४५०   मूल्य : ५०·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिभावकों से अपील :

अपने को समझें; बच्चों को समझें

सुरेश भटनागर
अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, डी० ए० वी० कालेज, देहरादून

बालक—ईश्वर का रूप है। यों कहें कि ईश्वर के दर्शन करने हैं, तो बालक के दर्शन करो। क्यों? बालक का मन कोमल, निर्मल, स्वच्छ और पूर्वाग्रह रहित होता है। उसके मन में किसी के प्रति राग नहीं, द्वेष नहीं, उसमें क्षम्यता का भाव है। उसके लिए न कोई बड़ा है, न कोई छोटा; न कोई ऊँचा है, न कोई नीचा; सभी धर्म, वर्ग, जाति तथा ऊँच-नीच का क्रम उसके लिए व्यर्थ है। यह तो हमारा, यानि हम बड़ों का प्रदूषण उसे प्रभावित करता है। 'बड़ों' के चिन्तन-प्रदूषण से राष्ट्र की अपार एवं अमूल्य सम्पत्ति का क्षय हो रहा है। इसे बड़ों के चिन्तन-प्रदूषण से बचाये रखना है।

टेलर का कथन है—जीवन के प्रत्येक क्षण मनुष्य में, जो कुछ वह अभी है, उससे बदल कर भिन्न हो जाने की प्रक्रिया चलती रहती है, जीवन की विशेष शैली का निर्माण होने लगता है। यही जीवन-शैली बालक के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। हम भारतीय संस्कारों पर विश्वास करते हैं। माता-पिता के संस्कारों का हस्तान्तरण आने वाले शिशु में होता है। अतः माता-पिता का दायित्व और भी बढ़ जाता है। अभिभावकों को चाहिए कि वे बालक के स्वाभाविक विकास की विभिन्न प्रक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करें तथा उनको अपने जीवन में धारण करें।

यों अभिभावकों का दायित्व बालक के पूर्ण, सजग सर्वांगीण तथा संतुलित विकास के प्रति हो जाता है।

बालक का विकास

बालक के विकास का वैज्ञानिक अध्ययन करने की दिशा में अनेक प्रयत्न किये जा रहे हैं। जेम्स ड्रेवर, हरलॉक, गैसेल, पावलव, टाइडमैन, स्टेनले हाल, टरमेन, विने, साइमन, एण्डरसन आदि अनेक अनुसंधानकर्त्ताओं ने अभिभावकों के समक्ष चिन्तन के द्वार खोले हैं। उन्हें चुनौती दी है—बालक का विकास उनके सहयोग के अभाव में कुण्ठित एवं दिशा-हीन हो जायगा। बालक का आरम्भिक विकास शारीरिक दिशा में होता है। आकार, भार, शारीरिक अनुपात एवं पुरानी रूपरेखा में परिवर्तन होता है। बालक नवीन रूपरेखा ग्रहण करता है। इन्हीं आधारों पर नवजात शिशु में होने वाले दिन-प्रति-दिन के विकास और परिवर्तन की घोषणा की जा सकती है। ऐसे विकास को दिशा निर्देश किया जा सकता है। ध्यान रखना है स्वामी विवेकानन्द की वाणी का—नैतिक बनो, वीर बनो, सम्पूर्ण हृदय वाले नैतिक तथा विकट परिस्थितियों से जूझने वाले मनुष्य बनो … ।

बालक का विकास सरल तथा स्वाभाविक ढंग से होना चाहिए। जुड़वाँ बच्चों के अध्ययन से स्पष्ट हो गया है कि संस्कार कैसे भी हों, उत्तम वातावरण प्रदान करके बालक को अच्छा नागरिक बनाया जा सकता है। पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में परिवर्तन से बालक को वांछित दिशा दी जा सकती है। सच तो यह कि अभिभावकों में यह कुशलता विकसित होनी चाहिए कि वे बालक व उसकी आवश्यकताओं तथा विकल्पों को समझें।

स्वस्थ शरीर : स्वस्थ मस्तिष्क

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। शरीर में विकसित हो रहे अंगों पर मस्तिष्क का विकास निर्भर करता है। शरीर में अनेक ग्रन्थियाँ ऐसी हैं जिनमें अवरोध व्यवहार में असामान्य कुण्ठाएँ जन्म लेने लगती हैं। ब्रस ने इस समय बालक के लिए माता-पिता के समुचित प्यार की आवश्यकता अनुभव की है।

स्वस्थ शरीर के कारण ही बालक में बुद्धि का विकास होता है। शब्द-ज्ञान, उपमायें, रिक्त-पूर्ति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपरीत अर्थ, संकल्पना, कल्पना, स्थान, समय, दिशा, संख्या तथा कारण का ज्ञान तथा उसके उपयोग करने की क्षमता विकसित होने लगती है। शैशव से किशोरावस्था तक अनेक प्रकार की मानसिक क्रियाओं के विकास के कारण बालक का व्यक्तित्व मुखरित होने लगता है। इसी समय उसकी उचित देखभाल की आवश्यकता है। अमूर्त्त चिन्तन का विकास होने लगता है। रोमांच तथा उसकी भावनायें विकसित होने लगती हैं। स्वतंत्र पाठन तथा स्वतन्त्र कार्य करने की प्रवृत्ति विकसित होने लगती है।

संवेग प्राणी की उद्वेलित अवस्था का नाम है और इसका विकास बालक में आरम्भ से ही होता है। भय, क्रोध, वात्सल्य, घृणा, करुणा, आश्चर्य, आत्महीनता, आत्मानुभूति, आत्माभिमान, एकाकीपन, कामुकता, भूख, अधिकार-भावना, कृति-भाव तथा आमोद जैसे संवेग बालक के विकासशील व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। जन्म से दो वर्ष तक की आयु में उत्तेजना, पीड़ा, आनन्द, क्रोध, परेशानी, डर, प्रेम, ईर्ष्या आदि की अभिव्यक्ति का क्रम बनने लगता है।

समाज में बालक रहता है। समाज की मान्यताओं और परम्पराओं के अनुरूप बालक का विकास होना चाहिए। सामाजिक अनुक्रिया, सामूहिक क्रिया, सामाजिक प्रतिबोध, प्रतिरोधी व्यवहार, लड़ाई-झगड़े, सहानुभूति, प्रतिस्पर्धा, सहयोग, संवेग, खेल, दल, सामाजिक-आर्थिक स्तर बालक की सामाजिकता को प्रभावित करते हैं। एलिजाबेथ हरलॉक ने कहा है—शिशु दूसरे बच्चों के सामूहिक जीवन के अनुकूल उनसे लेन-देन करना, अपने-अपने खेल के साथियों को अपनी वस्तुओं में साझीदार बनाना सीखता है। वह जिस समूह का सदस्य होता है, उसके स्वीकृत प्रतिमानों के अनुसार अपने को बनाने का प्रयत्न करता है। इसलिए बालक का समाजीकरण होना चाहिए।

समाजीकरण

बालक को समाज में वांछित स्थान दिलाने का दायित्व अभिभावक का है। परिवार बालक का पहला विद्यालय है। सरोजिनी नायडू ने इसीलिए कहा था—वे हाथ जो पालना झुलाते हैं, विश्व पर शासन करते हैं। बांसी ने कहा है—परिवार वह स्थल है जहाँ पर हर नई पीढ़ी नागरिकता का पाठ सीखती है। यों घर को प्रभावशाली बनाने के लिए ये कदम उठाने चाहिए :

1—परिवार का मुखिया परिवार की पूर्ण व्यवस्था करे। इससे वातावरण शुद्ध होगा और बालक पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

2—समुदाय के वातावरण का निर्माण करने में परिवार के सदस्य सहयोग दें।

3—परिवार में पढ़ने-पढ़ाने, समझने-समझाने तथा लेन-देन का क्रम बना रखना चाहिए।

अभिभावकों की अपनी समस्याएँ भी उन्हें बालकों के प्रति दायित्व का निर्वाह नहीं करने देती हैं। अपनी समस्याओं में उलझे रहने के कारण वे बालकों की पूरी तरह उपेक्षा करते हैं। इससे बालकों का व्यक्तित्व अविकसित रह जाता है। साथ ही, यह बात भी है कि अभिभावक भी यह नहीं जान पाते कि बालक अनिश्चित व्यवहार क्यों कर रहा है। बालक का आरम्भिक व्यवहार मूलप्रवृत्त्यात्मक होता है। यह व्यवहार सार्वभौम होता है। परिस्थितियों को देखकर पलायन कर जाना, झगड़ा करना, पितृभाव, संवेदना, काम व्यवहार, जिज्ञासा, दैन्य, आत्मगौरव, सामूहिकता, भोजनान्वेषण, संग्रहवृत्ति, सर्जनात्मकता एवं हास्य सम्बन्धी अनेक व्यवहारों की अधिकता ऐसी ही समस्यायें बालकों में पाई जाती हैं। इन समस्याओं के कारण बालकों का व्यक्तित्व असन्तुलित हो जाता है। कुछ बालकों में भ्रम तथा विभ्रम जैसी प्रतिबोधात्मक समस्यायें भी पाई जाती हैं। घर की असामान्य दशाओं, सांवेगिक अव्यवस्था, दमित इच्छायें, दिवास्वप्न आदि व्यवहार सम्बन्धी विचलनात्मक समस्यायें भी बालकों में उत्पन्न हो जाती हैं।

कुछ बच्चों में तोड़-फोड़, जिद् एवं अवज्ञा, झगड़ा, झूठ बोलना, शर्मीलापन आदि भी पाये जाते हैं। इन गुणों के कारण ही बालकों में व्यवहार-सम्बन्धी विसंगतियां पाई जाती हैं।

अभिभावक क्या करें ?

जरशील्ड ने ठीक ही कहा है—'बालक अपनी विकास-प्रक्रिया के दौरान माता-पिता एवं परिजनों के सम्पर्क में आता है। सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति धीरे-धीरे एक से अनेक हो जाते हैं। इन सभी का अपना-अपना प्रभाव बालक पर पड़ता है। बालकों का सन्तुलित विकास करने के लिए आवश्यक है—बच्चों को समझा जाय, उनकी आवश्यकताओं को जाना जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालकों के साथ संवेगात्मक सम्पर्क बनाये रखना जरूरी है। बालक की देखभाल और आत्म-खोज की प्रक्रिया और प्रतिवेदन के व्यवहार, यौन-विकास, अनुशासन आदि पर ध्यान दिया जाना चाहिये। समय-समय पर बालकों को उनकी सफलता पर पुरुस्कार तथा असफलता पर दण्ड या भर्त्सना अवश्य करनी चाहिए। उनमें प्रतियोगिता की भावना का विकास भी किया जाना चाहिए।

प्रतिभावान बालकों में सर्जनात्मक प्रवृत्तियाँ विकसित की जानी चाहिए। पिछड़े बालकों के लिए विशेष शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। विकलांग बालकों को उसी तरह की शिक्षा देने वाले विद्यालयों में भेजा जाय। कहने का तात्पर्य है कि बालक मन के सच्चे होते हैं। उनका मस्तिष्क कोरी पटिया के समान होता है। उस पर स्थायी रूप से बालक का भविष्य लिखने से पहले अभिभावक स्वयं सोचें और समझें।

[पृष्ठ 6 का शेषांश]

इसलिए बाल-साहित्य के साहित्यकार को बालक के सारे सांसारिक रागात्मक सम्बन्धों को सुरक्षित रखते हुए उसके बौद्धिक आकाश को उन्मुक्त रखने का प्रयास करना चाहिए। सामान्य साहित्य हमारे अनुभवों की अभिवृद्धि अथवा अनुभूतियों को समृद्ध करता है, रागात्मक वृत्तियों को परिष्कृत करता है, बौद्धिक वृत्तियों को औचित्य प्रदान करता है और मानसिक शक्तियों को एक दिशा देता है। बाल-साहित्य में इन सबको ध्यान में रखते हुए साहित्यकार को बालक की असीम जिज्ञासा और उन्मुक्त कल्पना को अप्रत्यक्ष रूप में ऐसी दिशा देनी है जो बालक को उसकी मंजिल तक पहुँचाने का सफल साधन बन सके। इतना ही नहीं, बाल-साहित्य की भाषा और शब्दावली भी बालक के लिए सार्थक होनी चाहिए और विषय-वस्तु भी उसकी जिज्ञासा तथा कल्पना को सन्तुष्ट करने में सक्षम होनी चाहिए। अन्यथा परिचित से परिचित को परिचित कराने का नीरस कार्य करने से कोई लाभ नहीं होगा। यह कार्य सरल नहीं है अपितु नदी की धारा को बिना किसी अवरोध के वांछित दिशा देने के लिए तटों के निर्माण के समान जटिल है। जटिलता और घनीभूत हो गयी है जबकि वैज्ञानिक वातावरण में आज का बालक जान गया है कि चन्दा मामा थाली में उतरते नहीं, वहाँ तो जाना होता है। इसके साथ ही वातावरण में व्याप्त वैज्ञानिकता के अतिरिक्त विषाक्त क्षोभ, द्वेष और अन्य निम्न प्रवृत्तियों का बोलबाला है जिसमें बालक विकसित हो रहा है। इसलिए आज साहित्यकार को बड़ी सावधानी और जागरूकता से अति संवेदनशील होकर बालक की तादात्म्य की प्रवृत्ति को शक्ति प्रदान करनी है जिसमें उसकी अवस्था एवं संस्कृति का भीअपना विशेष प्रभाव है।

आशा है, हिन्दी के बाल-साहित्यकार, समाजसेवी एवं शिक्षाशास्त्री इन विचारों को व्यावहारिक बनाकर हमारा श्रम सार्थक सिद्ध करेंगे तथा चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट और अन्य शासकीय संगठन भी इस समस्या के समाधान का कारगर प्रयास करने का यथोचित उपक्रम करेंगे।

[पृष्ठ 8 का शेषांश]

(iv) **बालक में सामाजिक गुणों का विकास**—समाज में रहकर ही बालक के अन्दर प्रेम, सहानुभूति, सहयोग जैसे आदर्श गुण स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं।

समाज ही बालक की मूलभूत प्रवृत्तियों का मार्गान्तरीकरण एवं शोधन करता है। इसके लिए खिलौने एवं अन्य मनोरंजन के साधन उपलब्ध किये जाते हैं ताकि बालक की पाशविक प्रवृत्तियों को दैवी प्रवृत्तियों में परिवर्तित किया जा सके।

(v) **बालक में अर्न्तनिहित शक्ति का विकास**—प्रत्येक बालक की अपनी रुचि, क्षमता एवं योग्यताएँ होती हैं, जिन्हें पहचानना एवं विकसित करना समाज का ही कर्त्तव्य है।

सबसे पहले परिवार में बालक को यह आभास कराया जाता है कि उसके क्या अधिकार एवं कर्त्तव्य हैं। उससे नकारात्मक व्यवहार कर उसके अवांछनीय व्यवहारों पर अंकुश लगाया जाता है जिससे कि वह अपराधी प्रवृत्ति से दूर होता रहे।

बाल-विकास में समाज अपनी हर इकाई के माध्यम से योगदान देता है, जिससे कि समाज के लोग, बाल-विकास की प्रक्रिया को समझ सकें, बाल-विकास के स्वरूप से परिचित हो सकें और समाज का हर सदस्य इसमें कुछ-न-कुछ सहयोग दे सके। जब तक बाल-विकास सही दिशा में नहीं होगा तब तक बालक सामाजिक रीतियों, परम्पराओं, आदतों एवं संस्कृति आदि से परिचित नहीं हो सकेगा, और न उसे सीख ही सकेगा; जिसका परिणाम यह होगा कि बालक समाज का एक श्रेष्ठ सहयोगी और कुशल सदस्य नहीं बन सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

हिन्दी का श्रेष्ठ आलोचनात्मक साहित्य

✡ ✡ ✡

हिन्दी वाङ्मय

- हिन्दी वाङ्मय : बीसवीं शती
  सं० डा० नगेन्द्र — १००.००
- 'नवीन' और उनका काव्य
  प्रो० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव — २०.००

साहित्यिक निबन्ध

- नवीन साहित्यिक निबन्ध
  डा० गोविन्द त्रिगुणायत — २२.५०
- साहित्यिक निबन्ध (७३ साहित्यिक निबन्ध)
  राजनाथ शर्मा — ३५.००
- विशिष्ट साहित्यिक निबन्ध
  राजनाथ शर्मा — २५.००
- अभिनव साहित्यिक निबन्ध
  डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी — ३०.००
- चिन्तन की बीथियाँ
  वेदव्रत शर्मा — १५.००
- आदर्श निबन्ध
  रमेशचन्द्र कुल श्रेष्ठ एवं विद्याराम शर्मा — ७.००

लोक साहित्य

- लोक साहित्य : सिद्धान्त और प्रयोग — १८.००
  डा० श्रीराम शर्मा पु० सं० — ३०.००

काव्यशास्त्र

- समीक्षा के सिद्धान्त
  डा० सत्येन्द्र — ८.००
- भारतीय काव्यशास्त्र — २८.००
  डा० रामानन्द शर्मा पु० सं० — ४०.००
- समीक्षा-सिद्धान्त
  डा० कृष्णदेव शर्मा — ३२.००
- भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धान्त
  डा० कृष्णदेव शर्मा — १६.५०
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त
  डा० कृष्णदेव शर्मा — २१.००
- पाश्चात्य समीक्षा : सिद्धान्त और वाद
  सत्यदेव मिश्र — २०.००
- रस, अलंकार, पिंगल
  डा० शम्भुनाथ पाण्डेय — ४.५०
- रचना रश्मि भाग–१ — ५.००
- रचना रश्मि भाग–२ — ४.८०

इतिहास

- हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास
  राजनाथ शर्मा — २५.००
- हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास
  राजनाथ शर्मा — ५.३०
- हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ
  डा० जयकिशनप्राद खण्डेलवाल — ३२.००
- हिन्दी साहित्य चिंतन
  डा० इन्द्रपालसिंह 'इन्द्र' — २०.००
- हिन्दी साहित्य : मौखिक परीक्षा पथप्रदर्शिका
  डा० जयकिशनप्रसाद — ७.५०
- ब्रज लोक साहित्य और संस्कृति
  डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी — ८.००

साहित्यिक पुस्तकें

- आधुनिक हिन्दी कविता की भूमिका
  डा० शम्भुनाथ पाण्डेय — ४०.००
- ब्रज साहित्य का मूल्यांकन
  डा० भगवान सहाय पचौरी — ४०.००
- सूफी-काव्य-विमर्श
  डा० श्याम मनोहर पाण्डेय — २०.००

भाषाविज्ञान

- हिन्दी भाषा का विकासात्मक इतिहास
  डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना — १५.००
- हिन्दी भाषा का विकास एवं नागरी लिपि
  डा० राजकिशोरसिंह — १०.००

कलाकार

- संत कबीर (एक यथार्थ परक मूल्यांकन)
  डा० लक्ष्मीदत्त बी० पंडित — १५.००
- सूरदास और उनका साहित्य
  डा० देशराजसिंह भाटी — २०.००
- बिहारी और उनका साहित्य
  डा० देशराजसिंह भाटी — १२.००
- हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि — १६.६०
  डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना पु० सं० — ३०.००
- हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि
  डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना — २०.००
- हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार
  डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना — २४.००
- हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकीकार
  डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना — ३०.००
- रत्नाकर की साहित्य साधना
  दानबहादुर पाठक — २०.००
- हिन्दी के कवि और लेखक
  राजनाथ शर्मा — ७.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृति और कृतिकार

- जायसी और उनका पदमावत : एक सर्वेक्षण
  राजनाथ शर्मा — १०.००
- साकेत : एक अध्ययन
  डा० दानबहादुर पाठक — ८.००
- श्रीरामचरितमानस की काव्यकला
  डा० हरिहरनाथ हुक्कू — १५.००
- मानस में परसर्ग योजना
  विजयदत्त शर्मा — १२.००
- कामायनी-भाष्य
  डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना — ३५.००
- आँसू-भाष्य
  डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना — १०.००
- ध्रुवस्वामिनी में कला, संस्कृति और दर्शन
  द्वारिकाप्रसाद सक्सेना — ८.००
- साकेत में काव्य संस्कृति और दर्शन
  डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना — १५.००
- पदमावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन
  डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना — ५०.००
- जयशंकर प्रसाद और स्कन्दगुप्त
  डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी — १०.००
- महादेवी वर्मा और 'संधिनी'
  डा० देशराजसिंह भाटी — १०.००
- रामधारीसिंह दिनकर और 'कुरुक्षेत्र'
  डा० तारकनाथ बाली — ८.५०
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और चिन्तामणि
  राजनाथ शर्मा एम० ए० — १०.००
- भगवतीचरण वर्मा और टेढ़े मेढ़े रास्ते
  राजनाथ शर्मा एम० ए० — १०.००
- महादेवी वर्मा और अतीत के चलचित्र
  राजनाथ शर्मा एम० ए० — ६.५०
- माधव जी सिन्धिया : एक मूल्यांकन
  डा० कृष्णदेव शर्मा — ६.००
- 'पुनर्नवा' और हजारीप्रसाद द्विवेदी
  राजनाथ शर्मा — ११.००
- बाणभट्ट की आत्मकथा : एक अध्ययन
  राजेन्द्र मोहन भटनागर — ११.००
- निराला और 'राम की शक्तिपूजा'
  डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी — ६.००
- निराला और 'राग विराग'
  डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी — १०.००
- 'तारापथ' और सुमित्रानंदन पंत
  राजनाथ शर्मा — १२.५०

प्राचीन काव्य-ग्रन्थ (सटीक)

- कबीर ग्रन्थावली
  सं० डा० भगवत्स्वरूप मिश्र — ३५.००
- भ्रमरगीत-सार
  सं० राजनाथ शर्मा — १८.००
- विनय पत्रिका
  सं० राजनाथ शर्मा — २५.००
- पंचवटी
  डा० कृष्णदेव शर्मा — ७.५०
- विद्यापति पदावली
  डा० देशराजसिंह भाटी — २२.००
- जायसी ग्रन्थावली (पद्मावत)
  सं० राजनाथ शर्मा — ३५.००
- घनानन्द की वाग्विभूति
  डा० देशराजसिंह भाटी — ६.५०
- केशव काव्य-संकलन
  डा० श्रीभगवान् शर्मा — ६.००
- पृथ्वीराज रासो (पदमावती समय)
  डा० हरिहरनाथ टण्डन — ६.००
- कयमास वध
  राकेश एम० ए० — १२.००
- बिहारी-सतसई
  देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' — १८.००
- जायसी कृत संक्षिप्त पदमावत
  सं० राजनाथ शर्मा — १५.००
- तुलसीदास कृत संक्षिप्त विनय पत्रिका
  सं० राजनाथ शर्मा — ७.००

टीकाएँ

- कामायनी की टीका
  डा० तारकनाथ बाली — १२.५०
- साकेत की टीका
  फूलचन्द जैन 'सारंग' — १५.००
- भ्रमरगीत-सार की टीका
  डा० नरेन्द्रसिंह शास्त्री, डा० राजेन्द्र शर्मा — १२.५०

काव्य

- कवि-हृदय
  अलख मुरारीलाल हजेला — ८.००
- मृगदाव
  त्रिवेदी रामानन्द शास्त्री — १५.००
- चित्रकूट
  त्रिवेदी रामानन्द शास्त्री — ६.००

नोट—निःशुल्क सूचीपत्र के लिये लिखें। अधिक पुस्तकें मँगाने पर कमीशन की विशेष सुविधा।

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा, मनोविज्ञान एवं गृहविज्ञान

आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (संशोधित एवं परिवर्द्धित पंचम संस्करण 1984) डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा, डा० डी० एन० श्रीवास्तव, डिमाई, पृष्ठ 704, मूल्य 30.00, पुस्त० संस्करण 40.00।

Abnormal Psychology : A Dynamic Approach (Ist Edition, 1984) Dr. Govind Tewari and Roma Pal, Demy, pp. 424, Price Rs. 30.00, Lib. edn. Rs. 40.00।

बाल मनोविज्ञान : बाल विकास (संशोधित एवं परिवर्द्धित तृतीय संस्करण 1984) डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा, डा० डी० एन० श्रीवास्तव, डिमाई, पृष्ठ 596, मूल्य 27.00, पुस्त० संस्करण 35.00।

हिन्दी-शिक्षण (संशोधित षष्ठ संस्करण 1984) डा० रामशकल पाण्डेय, डिमाई, पृष्ठ 360, मूल्य 15.00

भारतीय शिक्षा का इतिहास (संशोधित चौदहवाँ संस्करण 1984) बी० पी० जौहरी, पी० डी० पाठक, डिमाई, पृष्ठ 526, मूल्य 21.00 पुस्त० संस्करण 27.00।

स्वास्थ्य विज्ञान (प्रश्नोत्तर रूप में, तेरहवाँ संशोधित संस्करण 1984), दिनेशचन्द्र भारद्वाज, डिमाई, पृष्ठ 216, मूल्य 12.00।

गृह व्यवस्था एवं गृह कला (पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्द्धित बारहवाँ संस्करण 1984) डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी, डिमाई, पृष्ठ 460, मूल्य 18.00।

पोषण एवं आहार विज्ञान (पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्द्धित ग्यारहवाँ संस्करण 1984), डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी, डिमाई, पृष्ठ 472, मूल्य 18.00।

नागरिकशास्त्र का शिक्षण (संशोधित तेरहवाँ संस्करण 1984) डा० गुरसरनदास त्यागी, डिमाई, पृष्ठ 252, मूल्य 11.00।

सामाजिक अध्ययन का शिक्षण (संशोधित षष्ठ संस्करण 1984) डा० गुरुसरनदास त्यागी, पृष्ठ 250, मूल्य 10.00।

बी० एड० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) (पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्द्धित चौदहवाँ संस्करण 1984) भाई योगेन्द्रजीत, दिनेशचन्द्र भारद्वाज, विनोदकुमार अग्रवाल, डिमाई, पृष्ठ 1450, मूल्य 50.00।

विविध

हिन्दी पद्य-सुमन (संशोधित संस्करण 1984) परेशचन्द्र देव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ 104, मूल्य 8.00।

घनानन्द-कवित्त का काव्य-वैभव (सप्तम संस्करण 1984) रामप्रकाश दीक्षित, क्राउन, पृष्ठ 196, मूल्य 7.50।

वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड—(संशोधित तेरहवाँ संस्करण 1984) शिवकुमार व्यास, क्राउन, पृष्ठ 392, मूल्य 18.00।

वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड—(संशोधित आठवाँ संस्करण 1984) शिवकुमार व्यास, क्राउन, पृष्ठ 672, मूल्य 22.50।

तुलसीदास—आलोचनात्मक अध्ययन—(संशोधित पाचवाँ संस्करण, 1984) प्रो० भारत भूषण 'सरोज' एवं डा० कृष्णदेव शर्मा, काउन, पृष्ठ 274, मूल्य 9.00।

भाषा-विज्ञान—आलोचनात्मक अध्ययन—(संशोधित नवाँ संस्करण 1984) प्रो० भारत भूषण 'सरोज' एवं डा० कृष्णदेव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ 318, मूल्य 10.00।

जायसी—आलोचनात्मक अध्ययन—(संशोधित चतुर्थ संस्करण 1984) प्रो० भारत भूषण 'सरोज' एवं डा० कृष्णदेव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ 264 मूल्य 9.00।

विनय पत्रिका—आलोचनात्मक अध्ययन—(नवाँ संस्करण 1984) डा० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', क्राउन, पृष्ठ 180, मूल्य 7.00।

सदानन्द प्रणीत : वेदान्तसार (प्रथम संस्करण 1984) डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल, क्राउन, पृष्ठ 104, मूल्य 5.00।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय भाग में शैक्षिक तकनीकी के कोमल उपागम तथा इस क्षेत्र में किए गए शोधकार्य तथा भारत एवं विदेश में शैक्षिक तकनीकी की वर्तमान स्थिति से सम्बन्धित लेख हैं। यह विशेषांक जुलाई-अगस्त '84 में आपके कर-कमलों में होगा।

पाठकों से निवेदन

'साहित्य-परिचय' के पाठकों को विदित हो कि वर्ष 1983 का विशेषांक "शैक्षिक तकनीकी" पर मार्च, 1984 में निकल रहा है। इस विशेषांक की प्रतीक्षा में आपको जो कष्ट हुआ, उसका हमें हार्दिक खेद है।

कृपया अपनी विशेषांक की प्रति अग्रिम सुरक्षित करा लें। जैसा कि विशेषांक के नाम से ही विदित है कि 'शैक्षिक तकनीकी' विशेषांक अपने आप में ही काफी दुरूह व तकनीकी विषय पर आधारित है, जिस पर हिन्दी में अद्यतन एवं उच्चकोटि की पुस्तकों का अभाव है। निश्चय ही विषय-वस्तु के महत्त्व को देखते हुए इसकी अत्यधिक माँग होना स्वाभाविक ही है।

यदि आप अभी तक 'साहित्य-परिचय' के सदस्य नहीं हैं, तो मात्र 18·00 रु० वार्षिक शुल्क देकर अपनी विशेषांक की प्रति आज ही रजि० पोस्ट से आरक्षित करा लें। जो पाठक सदस्य हैं, और उन्होंने वार्षिक शुल्क मात्र 15·00 ही भेजा है, उनसे निवेदन है कि डाक-व्यवस्था की स्थिति को देखते हुए, वे भी मात्र 4·00 रु० धनादेश अतिरिक्त भेजकर अपनी विशेषांक की प्रति रजि० पोस्ट से आरक्षित करा लें। आपको एक बार विशेषांक भेजने पर, किसी कारणवश न मिलने पर, दुबारा विशेषांक की प्रति अमूल्य भेजना सम्भव न हो सकेगा।

आशा है, आप विशेषांक के महत्त्व को देखते हुए तदनुसार शीघ्र ही धनादेश भेजने की व्यवस्था करेंगे।

—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा विश्वविद्यालय के एम. ए. उत्तरार्द्ध परीक्षा 1983-84 के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

एम० ए० हिन्दी-दिग्दर्शन (गाइड)

दो भागों में (प्रथम भाग एवं द्वितीय भाग)

सम्पादक एवं लेखक—**डा० कृष्णदेव शर्मा**, एम. ए., पी-एच. डी.

● प्रस्तुत दिग्दर्शन, (गाइड) में एम. ए. उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिये नवीन पाठ्यक्रमानुसार निर्धारित पुस्तकों की आलोचना, समीक्षा, व्याख्या एवं संक्षिप्त परिचय आदि प्रश्नोत्तर में देकर गाइड को पूर्णरूपेण छात्रोपयोगी बनाने की चेष्टा की है।

● उत्तरार्द्ध (प्रथम खण्ड) की गाइड में पंचम, अष्टम्, नवम् एवं दशम् प्रश्नपत्र दिये गये हैं एवं उत्तरार्द्ध (द्वितीय खण्ड) की गाइड में षष्ठ एवं सप्तम प्रश्नपत्र (भाषा-विज्ञान एवं साहित्यालोचन) छात्रों की सुविधा हेतु दिये गये हैं।

● प्रश्नपत्र में दिए पाठ्यक्रम के आधार पर ही प्रस्तुत गाइड में उत्तर दिये गये हैं। आवश्यक स्थलों पर विस्तृत रूप से व्याख्या की गई है। भाषा विज्ञान एवं साहित्यालोचन जैसे कठिन विषयों को बहुत ही सरल तथा सरस भाषा में समझाया गया है। साहित्यिक निबन्धों के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण एवं इस वर्ष के सम्भावित निबन्धों को दिया गया है। मौखिक परीक्षा के लिये भी महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश है।

अनुक्रम

भाग—१

✡ पंचम प्रश्नपत्र—**आधुनिक काव्य**

● **आधुनिक काव्य-सग्रह** (आ० वि० वि० प्रका० संख्या ७५) ● **कामायनी** (जयशंकर प्रसाद) चिंता और काम सर्ग— आलोचना तथा समीक्षा ● **तारापथ** (सुमित्रानन्दन पंत) कविता सं० ४, ६, ७, २०, २१, ३३, ५२ और ५४ की व्याख्या एवं समीक्षा ● **उर्वशी** (दिनकर)— आलोचना तथा समीक्षा

✡ अष्टम प्रश्नपत्र—**निबन्ध एवं गद्य की अन्य विधाएँ** (क) आलोचनात्मक निबन्ध (आ० वि० वि० प्रकाशन संख्या ७६) (ख) निबन्ध ललिता— श्रीराम शर्मा (ग) हिन्दी गद्य ललिता—श्रीराम शर्मा

✡ नवम् प्रश्नपत्र—**उच्च साहित्यिक निबन्ध** (१२ महत्त्वपूर्ण निबन्धों का संग्रह)

✡ दशम् प्रश्नपत्र—**मौखिक परीक्षा**
हिन्दी का समस्त विधाओं से एवं सभी प्रश्न-पत्रों पर आधारित तैयार किये गये मौखिक प्रश्न एवं उत्तर।

भाग—२

✡ षष्ठ प्रश्न पत्र—**भाषा विज्ञान**

● **भाषा और समाज**, भाषा अध्ययन, भाषा **संरचना का परिचय**—ध्वनि, अक्षर, पद, शब्द विभक्ति, परसर्ग, पद बन्ध, वाक्य आदि का परिचय, हिन्दी ध्वनियों और रूपों का वर्गीकरण, भाषा का व्याकरण, लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल, वाच्य आदि का परिचय, **भाषा विकास**—हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास—भारोपीय परिवार, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि के विकास की स्थूल रूपरेखा, आधुनिक आर्य भाषाओं का वर्गीकरण, हिन्दी की उपभाषाएँ, खड़ीबोली का विकास—उर्दू, रेख्ता, हिन्दुस्तानी, दक्खिनी, हिन्दी का विकास तथा देवनागरी लिपि का विकास आदि।

✡ सप्तम प्रश्नपत्र—**साहित्यशास्त्र एवं समालोचना** (अ) **भारतीय काव्यशास्त्र**—
काव्य लक्षण और स्वरूप, काव्य-हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य सम्प्रदाय—अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि रस और औचित्य, काव्य के तत्त्व, काव्य के भेद, रूपक के तत्त्व, शब्द शक्ति, समीक्षा के स्वरूप, लक्षण, उद्देश्य, समीक्षा के मानदण्ड, सिद्धान्त और व्यवहार।

(ब) **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**—
काव्य और कला, काव्य का स्वरूप, प्लेटो, अरस्तू, लोंजिनस, होरेस, आई. ए. रिचर्ड्स, टी. एस. इलियट आदि की धारणाएँ, प्रमुख वाद—स्वच्छन्दतावाद, कला—कला के लिए, प्रकृतवाद, अति यथार्थवाद, अभिव्यंजनावाद, प्रतीकवाद एवं अस्तित्ववाद।

मूल्य : प्रथम भाग २४·०० द्वितीय भाग २१·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा—२

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च
1983

साहित्य परिचय

शैक्षिक जगत के ख्याति प्राप्त एवं विद्यार्थियों के लोकप्रिय लेखक

श्री पी० डी० पाठक द्वारा लिखित

छात्रोपयोगी मौलिक कृतियाँ

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

☆ ☆ ☆

● शिक्षा मनोविज्ञान

(संशोधित तेरहवाँ संस्करण 1983)

विभिन्न विश्वविद्यालयों के बी. ए., बी. एड. विद्यार्थियों में अत्यन्त लोकप्रिय। विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमानुसार संशोधन, यथा :—अध्ययन की उत्तम आदतों का विकास, निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण, मनोविज्ञान —व्यवहार विज्ञान के रूप में, अपवादात्मक बालकों की शिक्षा आदि। **पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ हैं**—दैनिक प्रयोग की चलती हुई भाषा, स्पष्टता के लिये दुर्बोध हिन्दी शब्दों के साथ अंग्रेजी के पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग, प्रमुख अनुवादित अवतरणों की मौलिक अंग्रेजी आदि।

आकार : डिमाई   पृष्ठ 608   मूल्य 16·40

● भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ

(संशोधित षष्ठ संस्करण 1983)

इस पुस्तक का लेखन बी. ए. एवं बी. एड. परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के परिवर्तित स्वरूप को निरन्तर ध्यान में रखकर किया गया है। भारतीय शिक्षा की समस्याओं के सम्बन्ध में विभिन्न समितियों एवं आयोगों, विशेषत: कोठारी कमीशन के विचारों को संकलित करके यथास्थान प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले विभिन्न परीक्षणों एवं सर्वेक्षणों पर आधारित आँकड़ों एवं तथ्यों को भी दिया गया है।

छात्रगण—भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याओं का गहन एवं विस्तृत अध्ययन करने के लिए इस अकेली पुस्तक पर निस्संकोच रूप से निर्भर हो सकते हैं और प्रश्नपत्रों के उत्तर देने में अपनी विशेष योग्यता का परिचय दे सकते हैं।

आकार : डिमाई   पृष्ठ संख्या 640   मूल्य 24·00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Teaching English in India

By

Dr. (Miss) A. R. Bisht
Reader in Education,
Kumaun University, Almora

✡✡✡

- This book deals with the method of English teaching in Indian schools. It is useful for teacher trainees doing L. T., B. Ed., or B. T. C. courses because it is designed according to their syllabi. It can beneflt teachers teaching at senior and junior levels also. All the matter is arranged under relevant headings clearly, briefly, and simply. Examples of lesson planning (objective based too) are given in appendix. For enthiusiastic readers, a comprehensive bibliography has been included.
- The book is the result of a long teaching experience of the author.

Size Demy **pp 250** **Price Rs. 12.00**

बी० ए० गृह-विज्ञान की छात्राओं के लिए—

डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी द्वारा लिखित

गृह-व्यवस्था एवं गृहकला
ग्यारहवां संस्करण, १९८३
मूल्य : सोलह रुपये पचास पैसे

पोषण एवं आहार विज्ञान
दसवां संस्करण, १९८१
मूल्य : तेरह रुपये पेंतीस पैसे

गृह-विज्ञान साहित्य

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त
तेरहवाँ संस्करण, १९८२
मूल्य : आठ रुपये पचास पैसे

मातृकला एवं शिशु कल्याण
ग्यारहवाँ संस्करण, १९८२
मूल्य : चौदह रुपये

स्वास्थ्य विज्ञान तथा जन स्वास्थ्य
जी० डी० सत्संगी
चतुर्थ संशोधित संस्करण, १९८३ **मूल्य : बारह रुपये**

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 18 : अंक 3]
मार्च, 1983

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर 18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा—2
फोन : 76486

स्वामी दयानन्द एवं शिक्षा

स्वामी दयानन्द एक उच्चकोटि के शिक्षा-चिन्तक के रूप में हमारे सामने आते हैं। हिन्दू समाज तो उनका बहुत ऋणी है। उन्होंने हिन्दू-धर्मशास्त्रों की छानबीन करने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने पुराणों का खण्डन किया और इसका एक शुभ परिणाम यह हुआ कि पुराणों का विश्लेषण, मनन, चिन्तन तथा पठन-पाठन आदि छानबीन के साथ होने लगा तथा इस साहित्य के प्रति अनुसन्धानात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाने लगा।

× × ×

वेदों को नया अर्थ प्रदान करके स्वामी जी ने हिन्दू समाज के मनस् में वेदों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कर दी। वेदों के पठन-पाठन के प्रति लोगों में रुचि उत्पन्न हुई और वैदिक वाङ्मय का महत्त्व बढ़ा। जनता में पराधीनता के परिणामस्वरूप जो नैराश्य छाया हुआ था उसे स्वामी जी ने अपने वर्चस्व से छाँटने का प्रयास किया और हिन्दू जाति में आशा की नयी ज्योति जगा दी। आर्य जाति में श्रेष्ठता का भाव भरने का कार्य स्वामी जी ने ही किया।

× × ×

स्वामी जी की यह मान्यता थी कि जब तक हमारे देश की जनता शिक्षित न होगी तब तक न देश, विदेशियों की गुलामी से मुक्त हो सकेगा, न सुखी व समृद्ध ही हो पायेगा। लार्ड मैकाले द्वारा संचालित अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति का भारतीय युवकों पर क्या कुप्रभाव पड़ रहा है, इससे भी वे बहुत चिन्तित थे ही। इसके लिए उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से बालक व बालिकाओं को धार्मिक प्रणाली से शिक्षा देने की आवश्यकता अनुभव की तथा प्राचीन गुरुकुल प्रणाली पर आधारित गुरुकुलों व कन्या गुरुकुलों की स्थापना सबसे पहले उत्तर प्रदेश में ही की गई। तीन बड़े गुरुकुल—कांगड़ी, वृन्दावन तथा ज्वालापुर—उत्तर प्रदेश में ही स्थापित किये गये। इसी प्रकार महिलाओं की शिक्षा के लिये कन्या गुरुकुल—देहरादून एवं हाथरस में स्थापित किये गये। फर्रुखाबाद में स्वामी जी ने काफी समय तक विश्राम किया था। स्वामी जी द्वारा संचित धनराशि से वहाँ कन्या विद्यालय की स्थापना हुई। बालकों का गुरुकुल भी फर्रुखाबाद में ही सबसे पहले स्थापित हुआ। यह गुरुकुल सिकन्दराबाद में कुछ दिन चला और अब वही गुरुकुल वृन्दावन में चल रहा है।

स्वामी जी के प्रवचनों तथा आर्य समाज की जगह-जगह स्थापना के कारण उत्तर प्रदेश उन दिनों राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख केन्द्र बन गया

[शेष पृष्ठ ३ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा विश्वविद्यालय के एम. ए. उत्तरार्द्ध परीक्षा 1982-83 के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

एम० ए० हिन्दी-दिग्दर्शन (गाइड)

दो भागों में (प्रथम भाग एवं द्वितीय भाग)

सम्पादक एवं लेखक—**डा० कृष्णदेव शर्मा**, एम. ए., पी-एच. डी.

● प्रस्तुत दिग्दर्शन, (गाइड) में एम. ए. उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिये नवीन पाठ्यक्रमानुसार निर्धारित पुस्तकों की आलोचना, समीक्षा, व्याख्या एवं संक्षिप्त परिचय आदि प्रश्नोत्तर में देकर गाइड को पूर्णरूपेण छात्रोपयोगी बनाने की चेष्टा की है।

● उत्तरार्द्ध (प्रथम खण्ड) की गाइड में पंचम, अष्टम्, नवम् एवं दशम् प्रश्नपत्र दिये गये हैं एवं उत्तरार्द्ध (द्वितीय खण्ड) की गाइड में षष्ठ एवं सप्तम प्रश्नपत्र (भाषा-विज्ञान एवं साहित्यालोचन) छात्रों की सुविधा हेतु दिये गये हैं।

● प्रश्नपत्र में दिए पाठ्यक्रम के आधार पर ही प्रस्तुत गाइड में उत्तर दिये गये हैं। आवश्यक स्थलों पर विस्तृत रूप से व्याख्या की गई है। भाषा विज्ञान एवं साहित्यालोचन जैसे कठिन विषयों को बहुत ही सरल तथा सरस भाषा में समझाया गया है। साहित्यिक निबन्धों के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण एवं इस वर्ष के सम्भावित निबन्धों को दिया गया है। मौखिक परीक्षा के लिये भी महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश है।

अनुक्रम

भाग—१

✡ पंचम प्रश्नपत्र—**आधुनिक काव्य**

● **आधुनिक काव्य-संग्रह** (आ० वि० वि० प्रका० संख्या ७५) ● **कामायनी** (जयशंकर प्रसाद) चिंता और काम सर्ग— आलोचना तथा समीक्षा ● **तारापथ** (सुमित्रानन्दन पंत) कविता सं० ४, ६, ७, २०, २१, ३३, ५२ और ५४ की व्याख्या एवं समीक्षा ● **उर्वशी** (दिनकर)— आलोचना तथा समीक्षा

✡ अष्टम प्रश्नपत्र—**निबन्ध एवं गद्य की अन्य विधाएँ** (क) आलोचनात्मक निबन्ध (आ० वि० वि० प्रकाशन संख्या ७६) (ख) निबन्ध ललिता—श्रीराम शर्मा (ग) हिन्दी गद्य ललिता—श्रीराम शर्मा

✡ नवम् प्रश्नपत्र—**उच्च साहित्यिक निबन्ध** (१२ महत्त्वपूर्ण निबन्धों का संग्रह)

✡ दशम् प्रश्नपत्र—**मौखिक परीक्षा**
हिन्दी का समस्त विधाओं से एवं सभी प्रश्नपत्रों पर आधारित तैयार किये गये मौखिक प्रश्न एवं उत्तर।

भाग—२

✡ षष्ठ प्रश्न पत्र—**भाषा विज्ञान**

● **भाषा और समाज, भाषा अध्ययन, भाषा संरचना का परिचय**—ध्वनि, अक्षर, पद, शब्द विभक्ति, परसर्ग, पद बन्ध, वाक्य आदि का परिचय, हिन्दी ध्वनियों और रूपों का वर्गीकरण, भाषा का व्याकरण, लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल, वाच्य आदि का परिचय, **भाषा विकास**—हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास—भारोपीय परिवार, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि के विकास की स्थूल रूपरेखा, आधुनिक आर्य भाषाओं का वर्गीकरण, हिन्दी की उपभाषाएँ, खड़ीबोली का विकास—उर्दू, रेख्ता, हिन्दुस्तानी, दक्खिनी, हिन्दी का विकास तथा देवनागरी लिपि का विकास आदि।

✡ सप्तम प्रश्नपत्र—**साहित्यशास्त्र एवं समालोचना** (अ) **भारतीय काव्यशास्त्र**—
काव्य लक्षण और स्वरूप, काव्य-हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य सम्प्रदाय—अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि रस और औचित्य, काव्य के तत्त्व, काव्य के भेद, रूपक के तत्त्व, शब्द शक्ति, समीक्षा के स्वरूप, लक्षण, उद्देश्य, समीक्षा के मानदण्ड, सिद्धान्त और व्यवहार।

(ब) **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**—
काव्य और कला, काव्य का स्वरूप, प्लेटो, अरस्तू, लौंजिनस, होरेस, आई. ए. रिचर्ड्स, टी. एस. इलियट आदि की धारणाएँ, प्रमुख वाद—स्वच्छन्दतावाद, कला—कला के लिए, प्रकृतवाद, अति यथार्थवाद, अभिव्यंजनावाद, प्रतीकवाद एवं अस्तित्ववाद।

मूल्य : प्रथम भाग २४·०० द्वितीय भाग २१·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ १ का शेषांश]

था। स्वामी जी अपने प्रवचनों में जहाँ अन्धविश्वास व रूढ़ियों पर प्रहार करते थे वहाँ गौ हत्यारे, विधर्मी व देश को गुलाम बनाने वाले ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भी खुलकर प्रचार करते थे। अंग्रेजी शिक्षा, अंग्रेजी खान-पान व अंग्रेजी वेशभूषा के विरुद्ध उनके तर्कों को सुनकर प्रत्येक देशवासी के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना जाग उठती थी।

× × ×

स्वामी दयानन्द जी अपने समय के आचार्य थे। एक उत्तम आचार्य के समस्त लक्षण उनमें विद्यमान थे। उन्होंने यह भली-भाँति निश्चय कर लिया था कि जैसे आत्मज्ञान-प्राप्ति के लिए विद्या-प्राप्ति की आवश्यकता है, उसी प्रकार प्रत्येक विद्वान-ज्ञानी को आवश्यक है कि निज विद्या का अन्य पुरुषों में प्रचार करे। मनुष्य श्रेणी की बनावट इस विचार की पुष्टि करती है। यह समय नहीं कि हम इस विषय को खोलकर वर्णन करें, निर्देश मात्र इतना ही कहना पर्याप्त है कि स्वामी दयानन्द जी ने अपने कर्त्तव्य को पूरी तरह निभाया और जो शिक्षा उन्होंने अपने गुरु से पाई व अन्य विचार तथा अभ्यास द्वारा प्राप्त की थी, उसका सर्व-साधारण में प्रचार किया, जो कुछ उनको आया उन्होंने सदैव परोपकार के लिए लगाया। परमात्मा के ज्ञान-भण्डार से जो कुछ उन्होंने सीखा था, उसे दूसरों पर प्रकट करने में किसी प्रकार की त्रुटि न की। स्वामी विरजानन्द से शिक्षा पाने के पीछे उनकी सारी आयु इसी काम में व्यतीत हो गई।

× × ×

मैडम ब्लैवटस्की ने उनके विषय में ठीक ही कहा है—"उनका प्रत्यक्ष आकार भी अतीव विचित्र है। उनका कद लम्बा, वर्ण प्रकाशयुक्त श्वेत और आकार देशियों की अपेक्षा अंग्रेजों से अधिक मिलता था; नेत्र बड़े, लम्बे और प्रकाशयुक्त थे और बाल भूरे रंग के लम्बे थे।..............उनकी ध्वनि साफ और बड़े जोर की थी जिससे हर प्रकार की गम्भीरता को अतीव सुगमता से वह प्रकट कर सकते थे, उनका भाषण उपदेश के समय बच्चों का सा मीठा होता है, और वही जिस समय ब्राह्मणों की मिथ्या शिक्षा और बुरे आचारों के विपरीत उठता है, तो क्रोध में भरकर सिंह के समान हो जाता है। इनके गुणों का पुञ्ज हिन्दुओं की शुद्ध भूमि में अकथनीय प्रभाव डालता है। जहाँ-जहाँ दयानन्द जाते हैं, मनुष्यों के समूहों के समूह उनके चरण-रज को शिरोधार्य करते हैं। परन्तु वे उनको केशव चन्द्रसेन के समान किसी नवीन मत की शिक्षा नहीं देता, और न नये नियम रचता है।"

—'विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा-शास्त्री' से उद्धृत—साभार

समाचार पत्र रजिस्ट्रेशन (केन्द्रीय) कानून १९५६ के आठवें नियम के अन्तर्गत अपेक्षित (फार्म ४)

१.	प्रकाशन का स्थान	आगरा
२.	प्रकाशन की अवधि	मासिक
३.	मुद्रक का नाम	विनोद कुमार अग्रवाल
	क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
	पता	११/७, डा० रांगेय राघव मार्ग आगरा
४.	प्रकाशक का नाम	विनोद कुमार अग्रवाल
	क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
	पता	११/७, डा० रांगेय राघव मार्ग, आगरा
५.	सम्पादक का नाम	विनोद कुमार अग्रवाल
	क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
	पता	११/७, डा० रांगेय राघव मार्ग, आगरा
६.	उन व्यक्तियों के नाम और पते, जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-३

मै विनोद कुमार अग्रवाल, एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गये विवरण सत्य हैं।

—विनोदकुमार अग्रवाल
(प्रकाशक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा द्वारा प्रकाशित

बी० एड० छात्रों के लिये उपयोगी पुस्तकें

प्रश्नोत्तर शैली में

पुस्तक	लेखक	मूल्य
● बी० एड० दिग्दर्शन (गाइड) सं० भाई योगेन्द्रजीत, दिनेशचन्द्र भारद्वाज, विनोद कुमार अग्रवाल		४५.००
● शिक्षा में सरल सांख्यिकी	डा० रामपालसिह वर्मा	८.००
● शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● शिक्षा मनोविज्ञान	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● शिक्षा सिद्धान्त की रूपरेखा	,,	१२.५०
● शिक्षा-सिद्धान्त	,,	९.००
● तुलनात्मक-शिक्षा	,,	६.००
● भारतीय शिक्षा का इतिहास	कपूरचन्द जैन	११.००
● भारतीय शिक्षा की आधुनिक समस्याएँ	दिनेशचन्द्र भारद्वाज	१२.५०
● विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा	,,	१८.००
● विद्यालय प्रशासन	,,	९.००
● पाठशाला प्रबन्ध	,,	६.००
● स्वास्थ्य-विज्ञान	,,	८.००
● हिन्दी भाषा-शिक्षण	,,	७.००
● भूगोल-शिक्षण	,,	५.००
● विज्ञान-शिक्षण	डी० सी० शर्मा	५.००
● Teaching of English in India	P. D. Pathak	8.00
● गणित अध्यापन	जी० डी० सत्संगी, साहबदयाल	६.००
● इतिहास-शिक्षण	जी० डी० सत्संगी	६.००
● सामाजिक अध्ययन-शिक्षण	,,	५.५०
● नागरिक शास्त्र-शिक्षण	,,	४.००
● अर्थशास्त्र-शिक्षण	,,	५.००
● राजस्थान विश्वविद्यालय बी० एड० प्रश्नपत्र उत्तर सहित (१९७५ से १९८२ तक)	आर० पी० वर्मा	२४.७५
● आगरा विश्वविद्यालय बी० एड० प्रश्नपत्र उत्तर सहित (१९७४ से १९८० तक)	प्रो० सक्सेना	२२.५०
● सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● समाज-मनोविज्ञान	प्रो० सक्सेना	८.००
● असामान्य मनोविज्ञान	प्रो० सक्सेना	(प्रेस में)
● बाल-विकास की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	९.००
● बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) प्रथम वर्ष (सं० १९८२-८३)	शर्मा एवं सत्संगी	१५.००
● बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) द्वितीय वर्ष (सं० १९८२-८३)	,, ,,	१२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-शिक्षा की समस्याएँ : मनो-सामाजिक परिप्रेक्ष्य में

डा० पी० सी० शर्मा
शिक्षा संकाय एवं विभाग, मेरठ कालेज, मेरठ

शिक्षा के क्षेत्र में एक बहुचर्चित नारा है—"शिक्षा का उद्देश्य—बालक का सर्वांगीण विकास।" मनोवैज्ञानिक शोध कार्यों के आधार पर ही इस नारे का विकास सम्भव हो सका है। जो भी विधियाँ एवं तकनीकी, उल्लेखित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बतलाई जाती हैं उनका जन्म मूलतः मनोविज्ञान-प्रयोगशाला में जानवरों पर प्रयोग करके ही हुआ है। जब ऐसी युक्तियों का उपयोग हम बालक पर करते हैं, तो कदाचित यह भूल जाते हैं कि वह किसी प्रयोगशाला के बंद पिंजरे का पंछी नहीं है, अपितु समाज में स्वच्छन्द रूप से रह रहा एक प्राणी है। उसकी आन्तरिक मनोवैज्ञानिक क्रियाओं पर सामाजिक पर्यावेश का अनवरत रूप से प्रभाव पड़ रहा है। अतएव बालक के विकास के संदर्भ में जहाँ हम एक ओर मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का उपयोग करते हैं, वहाँ दूसरी ओर उसे सामाजिक प्रभाव से अछूता नहीं रख सकते। यही कारण है कि आज विद्यालयों में बाल-शिक्षा सम्बन्धी समस्याएँ जितनी मनोविज्ञान से जुड़ी हुई हैं उससे कहीं अधिक उनका स्रोत सामाजिक विसंगतियों एवं कुरीतियों में पाया जा सकता है। आज बालक को पठन-पाठन सम्बन्धी सुविधा उपलब्ध कराना इतनी बड़ी समस्या नहीं है जितनी कि उसे शारीरिक, और उससे भी अधिक मानसिक रूप से विद्यालयों तक लाने की है। इसी दृष्टिकोण को अपनाते हुए इस लेख में बाल-शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं की विवेचना की गई है।

यद्यपि 'बालक' शब्द को परिभाषित करते समय आयु सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोण सामने आते हैं, तथापि गत वर्षों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करते समय सरकार द्वारा १५ वर्ष एवं इससे अधिक आयु के लोगों को प्रौढ़ की संज्ञा दी गई थी। अतएव यह सर्वथा तर्कसंगत होगा कि जन्म से १४ वर्ष तक के आयुकाल को ही बाल्यकाल माना जाय। शिक्षाविदों के अनुसार, इस काल को मोटे तौर पर निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा जा सकता है :—

१. **शैशवकाल** (Period of Infancy) : लगभग १ से ५ वर्ष तक।

२. **बाल्यकाल** (Period of Childhood) : लगभग ५ से १२ वर्ष तक।

३. **पूर्व-किशोरावस्था** (Period of Early Adolescence) : लगभग १२ से १४ वर्ष तक।

क्योंकि बालक समय बीतने के साथ एक चरण (Stage) से अगले चरण में अनवरत रूप से स्वतः ही प्रविष्ट हो जाता है, इसीलिए इन तीन कालों के विभाजन का औचित्य प्रत्येक कालान्तर में कुछ विशिष्ट मनो-सामाजिक समस्याओं के आधार पर ही सिद्ध किया जा सकता है। ये समस्याएँ अपने में अनगिनत हो सकती हैं, किन्तु यहाँ केवल कुछ ऐसी समस्याओं का उल्लेख करना पर्याप्त होगा, जो आज के संदर्भ में बाल-शिक्षा से सीधे सम्बन्धित हैं।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, शैशव-काल में बालक की उपेक्षा कुछ ऐसी समस्याओं को जन्म दे देती है जिनका निदान आगे चलकर संभव नहीं हो पाता। जन्मजात ही बालक को कुछ विशेषताएँ जीन्स (Genes) के माध्यम से विरासत में मिल जाती हैं। किन्तु सही पौष्टिक आहार के अभाव में इस वंशक्रम (Heredity) की विशेषताओं का अपेक्षित विकास संभव नहीं होता। यहाँ तक देखा गया है कि शैशव-काल के बाद इस प्रकार की कमियों को पूरा करना असम्भव रहा है। ये प्रारम्भिक पोषण प्रक्रियाएँ बालक के अधिगम (Learning) के लिए अधिकतम सीमा निर्धारित करने में सहायक सिद्ध होती हैं।

जब हम अपने देश के बालकों के शारीरिक एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक स्तर को विकसित देशों के बालकों की तुलना में निम्न पाते हैं, तो सामान्यतः विद्यालय के शिक्षकों को ही इसके लिए दोषी ठहराया जाता है और शिक्षक-वर्ग आवश्यक सुविधाओं के अभाव की दुहाई देकर इस दोषारोपण के मुक्त होने की चेष्टा करते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि देशी और विदेशी बालकों के स्तरों में यह अन्तर जन्म के ठीक बाद से ही प्रारम्भ हो जाता है। पौष्टिक भोजन के अभाव में हमारे बालकों का शारीरिक एवं मानसिक विकास पाश्चात्य विकसित देशों की तुलना में कहीं भी नहीं ठहरता। क्योंकि बालकों की अधिगम-क्षमता इसी विकास के ऊपर आधारित है, इसलिए किसी भी शिक्षक द्वारा एक निश्चित सीमा से आगे यत्न करने का कोई भी प्रभाव बालक के पठन-पाठन पर पड़ने ाला नहीं।

भारत में, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा भाग गरीबी की रेखा के नीचे रहता है, बाल-कुपोषण की समस्या बहुत गम्भीर है। ऐसा नहीं है कि हमारे देश के वैज्ञानिक इस समस्या के प्रति जागरूक न हों। यदा-कदा सस्ते पौष्टिक आहार के विषय में विशेषज्ञों के सुझाव पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने और आकाशवाणी एवं दूरदर्शन कार्यक्रमों में सुनने-देखने को मिल जाते हैं। किन्तु इस प्रकार के संचार माध्यमों का लाभ शहरी-पैसे वाले लोगों को ही प्राप्त होता है। विडम्बना यह है कि अधिकतर शहरी लोग ऐसे सस्ते आहार में आस्था नहीं रखते और वे अपने बालकों के लिए केमिस्ट की दुकानों से 'टॉनिक' आदि का प्रबन्ध करने में भी सक्षम हैं। गाँव और शहर की गरीब जनता तक, या तो इस प्रकार की सूचनाएँ पहुँचती नहीं है, और यदि उन्हें बतला भी दिया जाय तो भी दिन-रात दो-जून रोटी जुटाने में रत इनके थके मस्तिष्कों को इस ओर सोचने की फुरसत ही कहाँ है! यही कारण है कि देश में ८० से ९० प्रतिशत बालक कुपोषण के शिकार हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे समाज-सेवी उन चिथड़ों में लिपटे बालकों का पेट केवल खोखले नारों से न भरें अपितु उनको यथेष्ट पौष्टिक आहार उपलब्ध करायें।

उत्तर-शैशवकाल और बाल्यकाल में पौष्टिक आहार के साथ-साथ उपयुक्त पर्यावरण (Environment) की आवश्यकता पर भी बल दिया जाना आवश्यक है। इस काल में बालक के संवेगात्मक (Emotional) और सामाजिक (Social) विकास की गति अपेक्षाकृत तेज़ हो जाती है। इस प्रकार के विकास को विकृत होने से बचाने के लिए बालक का निकट-पर्यावरण (Immediate Environment), स्नेह, सौहार्द्र एवं कोमलता से परिपूर्ण होना चाहिए, अन्यथा बालक अपने को अरक्षित (Insecure) और असहाय महसूस करने लगता है, जिसके कारण इस बात की पूरी सम्भावना हो जाती है कि वह दूषित वातावरण की ओर खिंचे और बड़ा होकर अपनी गिनती असामाजिक तत्त्वों में कराने लगे। यहीं से बाल-अपराधियों (Delinquents) का निर्माण प्रारम्भ हो जाता है। ऐसे बालक विद्यालयों में अपना चित्त पढ़ने-लिखने में नहीं लगा पाते और झूठ, चोरी, मार-पीट आदि के द्वारा अपराधों की प्रथम सीढ़ी पर पैर रख देते हैं।

बालक के संवेगात्मक और सामाजिक विकास को वांछनीय स्वरूप देने के लिए, सर्वप्रथम दायित्व परिवार के सदस्यों का है। पाश्चात्य देशों में अब यह अनुभव किया जाने लगा है कि भारत की पारम्परिक कुटुम्ब व्यवस्था (Joint-Family System) बालक के संवेगात्मक विकास और समाजीकरण के उद्देश्य को प्राप्त कराने में पूर्णरूपेण सक्षम है; किन्तु बढ़ती मँहगाई और आधुनिकीकरण की होड़ ने, भारत की इस पारम्परिक व्यवस्था को इस कदर तोड़ दिया है कि अब परिवार का स्वरूप दिन-प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। कुटुम्ब यदि देखे जा सकते हैं तो केवल गाँवों में। शहरों में तो कुटुम्ब टूट कर छोटे परिवारों (Small Families) में विभाजित हो गये हैं। और अब तो इन परिवारों के आकार माता-पिता और बच्चों (Nuclear Families) तक ही सीमित होकर रह गये हैं। परिवार के इस सूक्ष्म स्वरूप का औचित्य किसी हद तक आर्थिक आधार पर सिद्ध किया जा सकता है, किन्तु बालक से संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास में यह एक मुख्य व्यवधान है। माता और पिता दोनों के नौकरी पर जाने के बाद और घर में दादा-दादी के अभाव में, अधिकतर शिशुओं को नौकरों के संरक्षण में छोड़ दिया जाता है। सामान्यतः नौकरों द्वारा की गई देखरेख (चाहे वे महिलाएँ ही हों), माँ के द्वारा स्वयं की गई वात्सल्य से ओतप्रोत सेवा से किसी भी प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुल्य नहीं है। यही कारण है कि ऐसे बालकों में अधिकतर संवेगात्मक असंतुलन देखने को मिलता है।

बालकों की शिक्षा के लिए अधिकतर महिलाओं को ही नियुक्त किया जाता है और उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे नन्हे-मुन्नों को मातृ-तुल्य स्नेह दे सकेंगी। किन्तु यह दुर्भाग्य ही है कि कुछ अपवादों को छोड़कर अधिकतर अध्यापिकायें इन बालकों को पढ़ाने में डाँट-डपट एवं शारीरिक दण्ड को प्रयुक्त करने से किंचिन्मात्र भी नहीं हिचकतीं। कक्षाओं में बालकों के सहमे-डरे चेहरे आसानी से देखे जा सकते हैं। बालक को कठोर अनुशासन में बाँध कर पढ़ाने की पद्धति आज भी अपने को आधुनिकतम कहलाने वाले विद्यालयों में लागू है। शिक्षा के क्षेत्र में शोध-कार्य के आधार पर स्वीकार किया गया है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, अच्छे कार्यों की सराहना, खेल-खेल में पढ़ाई, स्नेह से भरे स्वच्छन्द आकर्षक वातावरण आदि के माध्यम से ही बालकों में संवेग और समाजीकरण के सही स्वरूप को विकसित किया जा सकता है। क्या ही अच्छा हो, यदि हमारे विद्यालय इन सिद्धान्तों के आधार पर ही अपनी शिक्षा-व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन लाएँ और उन्हें संकल्प एवं दृढ़ता से लागू करें।

लगभग ५ वर्ष की आयु प्राप्त करने पर ही बालक को अक्षर-ज्ञान कराया जाता है और इसी के साथ ही दृष्टिगोचर होती है—उपयुक्त बाल-साहित्य के अभाव के रूप में एक और दुरूह समस्या। यद्यपि हमारे देश में लगभग सभी क्षेत्रीय भाषाओं में बाल-साहित्य उपलब्ध है, किन्तु इनके मूल्यांकन (Evaluation) से यह आभास होता है कि इसका निर्माण या तो बालक को कल्पनालोक की सैर कराने के उद्देश्य से हुआ है, या ऐतिहासिक और पौराणिक गाथाओं से अवगत कराने हेतु। इतिहास एवं पुराण-आधारित साहित्य का औचित्य तो कुछ समझ में आता है, किन्तु कोरी कल्पना की उड़ान भरने वाले साहित्य की सार्थकता प्रश्नसूचक ही है। हर्ष का विषय है कि अब साहित्यकारों में इस पारम्परिक लीक से हटने का विचार पनपने लगा है। इस नई विचारधारा के अनुसार, यद्यपि मनोरंजन बालकों के लिए आवश्यक है, किन्तु उसे केवल भूत-प्रेत, दानव और परियों के काल्पनिक कथानकों से जोड़ने का कोई औचित्य नहीं। यदि हम बालक को समाज का एक कारगर सदस्य बनाना चाहते हैं, तो यह आवश्यक है कि मनोरंजन ऐसे कथानकों के माध्यम से हो, जो बालक के यथार्थ-पर्यावरण पर आधारित हों और जिनमें समाज की दशा और वास्तविक समस्याएँ परिलक्षित हों।

लेखन चाहे कितना भी सशक्त हो, किन्तु सही प्रकार के प्रकाशन के अभाव में सब परिश्रम व्यर्थ सिद्ध होता है। अतएव, प्रकाशकों से भी आशा की जाती है कि वे कागज, छपाई, रंगीन चित्रों, साज-सज्जा एवं जिल्दसाजी के स्तर को किसी भी प्रकार विदेशी पुस्तकों की तुलना में नीचे न गिरने दें। यह क्षोभ का विषय है कि स्वतन्त्रता के तीन दशकोपरांत भी विदेशों में प्रकाशित पुस्तकें बालक को अनायास ही आकर्षित कर लेती हैं जब कि ऐसा प्रायः स्वदेशी पुस्तकों के साथ देखने में नहीं आता। बाल-साहित्य का सही सृजन, प्रकाशन स्तर में आवश्यक सुधार और न्यूनतम कीमत पर उसे बाल-पाठकों तक पहुँचाना, भारतीय लेखकों, प्रकाशकों और सरकार के पारस्परिक सहयोग से ही सम्भव हो सकता है। देखना है कि ये तीनों इस चुनौती का सामना कितनी तत्परता से करते हैं।

किशोरावस्था के आरम्भ होते ही दो और मुख्य समस्याएँ उभर कर सामने आती हैं। पहली, बाल-श्रमिकों (Child labourers) की और दूसरी, यौन-शिक्षा (Sex Education) सम्बन्धी। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के द्वारा दिये गये आँकड़ों के अनुसार हमारे देश में लगभग दो करोड़ बाल-श्रमिक हैं। सर्वेक्षण के द्वारा जो तथ्य सामने आये हैं, उनसे सहज ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह समस्या माँ-बाप की गरीबी, बेरोज़गारी और बीमारी से जुड़ी है। निर्धन बालक अल्प आयु में ही अपने घरों की टूटी-फूटी अर्थ-व्यवस्था को सँवारने में अपना योगदान प्रारम्भ कर देते हैं। यही कारण है कि इस उम्र में ऐसे बालक स्कूलों में न जाकर दूसरे के घरों में व दुकानों पर बर्तन साफ करने, कूड़ा उठाने, कपड़े धोने, बोझ ढोने आदि का कार्य करते हैं। इन क्षेत्रों से निकालकर बालकों को स्कूल में ले जाना अपने में एक टेढ़ी खीर है। एक प्रोजेक्ट के दौरान, सोशल वर्क में डिग्री प्राप्त कार्यकर्ताओं ने अनुभव किया कि नई दिल्ली के क्षेत्र में निःशुल्क शिक्षा के साथ-साथ गरीब छात्रों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मु.फ्त ड्रेस, ऊन और नाश्ते की सुविधायें उपलब्ध कराने पर भी प्राइमरी स्कूलों में झुग्गी-झोंपड़ी से आये बालक नहीं ठहरते।

कारण स्पष्ट है—यद्यपि शिक्षा-आयोग ने कार्यानुभव (Work Experience) को स्कूली पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाने का सुझाव दिया है, किन्तु किस सीमा तक कार्यानुभव के अन्तर्गत चयन किए गए क्रिया-कलाप (Activities) बालकों को आर्थिक सहायता पहुँचाने में समर्थ रहे हैं—यह एक विचारणीय प्रश्न है। जब तक गरीब बालकों के लिए स्कूल की पढ़ाई के साथ ऐसे रोजगार की व्यवस्था नहीं होगी जिसके द्वारा वे आवश्यक धन अर्जित कर सकें, तब तक वे पढ़ने की ओर उन्मुख नहीं होंगे। केवल निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था अपने-आप में अपूर्ण है।

लगभग १४ वर्ष की अवस्था में बालक-बालिकाओं में कुछ विशिष्ट शारीरिक परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों से विस्मित किशोर कई प्रकार की मनो-सामाजिक समस्याओं से घिर जाता है। अतः इस स्थिति का सामना करने के लिए उन्हें पहले से ही तैयार कर देना परम आवश्यक है; तभी वे सहज भाव से इस प्रकार के परिवर्तनों को स्वीकार कर सकेंगे। इसी संदर्भ में यौन-शिक्षा का उल्लेख महत्त्वपूर्ण है।

जब कभी इस प्रकार की शिक्षा को छात्रों तक पहुँचाने की बात कही गई है, तब-तब नैतिक मूल्यों के नष्ट होने का भय दिखाकर, इसके विरोध में जोरदार आवाजें उठाई जाती रही हैं। इसी कारणवश स्कूली पाठ्यक्रम में यौन-शिक्षा अपना स्थान नहीं बना सकी। विचारणीय तथ्य यह है कि जब सब ओर परिवार नियोजन सम्बन्धी विज्ञापनों का बाहुल्य हो—चाहे वह सड़क हो या सिनेमाघर, रेडियो हो या दूरदर्शन; जब पत्र-पत्रिकाओं, चलचित्रों और व्यावसायिक विज्ञापनों में भौंड़े यौन-प्रदर्शन का समावेश हो, तब हम बालकों की यौन-सम्बन्धी उत्कंठाओं को कब तक दबा सकेंगे? बालक इस उत्कंठा को साथियों से या और किसी प्रकार से जानकारी प्राप्त कर शान्त करने की चेष्टा करता है। किन्तु जो ज्ञान उसे इस प्रकार मिलता है वह उसके सन्मुख एक अस्पष्ट, विकृत किन्तु रोमांचक चित्र अंकित करता है। परिणामतः अधिकतर अनचाहे ही, किशोर पथभ्रष्ट हो जाते हैं। और तब, नैतिक मूल्यों के प्रहरी—हम प्रौढ़, अपनी नादानी पर सिर पीट कर रोते हैं।

यौन-शिक्षा के सम्बन्ध में कुछ और भी कठिनाइयाँ हैं। जनसाधारण में यह भ्रांति व्याप्त है कि यौन-शिक्षा का क्षेत्र केवल यौन-सम्बन्धी तथ्यात्मक ज्ञान को देने तक ही सीमित है, और इस प्रकार के ज्ञान को कब, किसके द्वारा एवं किस प्रकार दिया जाय, इन विषयों पर भी बहुत मतभेद है। शिक्षक एवं अभिभावक इस कार्य को करने में झिझक महसूस करते हैं। इस संदर्भ में दो बातें स्पष्ट कर देनी बहुत आवश्यक हैं। प्रथम, यौन-शिक्षा सम्बन्धी कुछ तथ्यात्मक भाग अब भी हमारे विद्यालयों के जीव-विज्ञान के पाठ्यक्रमों में पढ़ाया जा रहा है। दूसरे यह कि यौन-शिक्षा वास्तव में पुरुष और स्त्री में परस्पर एक स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करने से अधिक सम्बन्धित है। अतएव, यौन-शिक्षा के पाठ्यक्रम में सही दृष्टिकोण के निर्माण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और इसी संदर्भ में जहाँ कहीं तथ्यात्मक ज्ञान की आवश्यकता हो, उसे समाविष्ट करना चाहिए। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा जनसंख्या-शिक्षा (Population Education) के क्षेत्र में किया गया कार्य भी यौन-शिक्षा की संकल्पना (Concept) को विकसित करने में यथेष्ट योगदान कर सकता है। आश्चर्य का विषय है कि अमेरिका और इंगलैंड जैसे विकसित देशों में अभी तक यौन-शिक्षा एक विवादास्पद विषय बना हुआ है। किन्तु पश्चिमी जर्मनी, आस्ट्रिया और नीदरलैंड ऐसे देश हैं जहाँ बालकों के द्वारा यौन-शिक्षा भली प्रकार ग्रहण की जा रही है, हमें ऐसे ही देशों से आवश्यक मार्ग-निर्देशन प्राप्त करने की चेष्टा करनी चाहिए।

बाल-शिक्षा सम्बन्धी उल्लेखित समस्याओं में से कुछ को सरकार ने संवैधानिक व्यवस्था के द्वारा हल करने की चेष्टा की है, किन्तु जब तक कानूनी शिकंजे को ठीक से कसा नहीं जाएगा, तब तक इन अवस्थाओं का लाभ बालकों तक पहुँचने वाला नहीं। इतना ही नहीं, इन समस्याओं को सुलझाने में समाज के प्रत्येक वर्ग का योगदान आवश्यक है—चाहे वह अभिभावक हो या अध्यापक, दुकानदार हो या डाक्टर। समाज-सेवी संस्थाओं से भी अपेक्षा की जाती है कि वे दिखावा छोड़ कर, निःस्वार्थ भाव से इन समस्याओं से जूझें। तब ही हमारे देश के 'बाल-कुसुम' का कल्याण होगा, अन्यथा "बच्चों की मुस्कान—राष्ट्र की शान" नारे की भी वही नियति होगी, जो समय-समय पर दिए गए अन्य असंख्य नारों की हुई है। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थानी कहावतों में माँ की वेदना

डॉ० हरिशंकर लाल विद्यार्थी
प्रवक्ता, बी० एड० विभाग, शिवपति महाविद्यालय, शोहरतगढ़ (बस्ती)

[प्रस्तुत लेख में प्रयुक्त राजस्थानी कहावतों का अर्थ पाठकों की सुविधा हेतु कोष्ठक में दिया है।]

भरे-पूरे परिवार में बेटे, बेटियों के वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने की परम्परा बहुत प्राचीन है। आज भी माता-पिता अथवा भाई में से किसी एक का भी न होना बुरा समझा जाता है। भाई के न होने पर तो बेटियाँ कानी हो जाती हैं। उनके विवाह में बहुत बाधा पड़ती है। क्योंकि साले बिना क्यों को सासरो? (साले बिना ससुराल कैसा?) माता-पिता के मृत्योपरान्त ससुराल का सम्बन्ध भी बहुधा टूट जाता है। अतः लोग सम्बन्धी बनने में कतराते हैं। माता-पिता को इस बात की जानकारी रहती है कि बेटी और बलद जूड़ो कोनी गेरयो (बेटी और बैल हमेशा बन्धन में रहते हैं।) फिर तो बेटे की लालसा में कई पुत्रियाँ पैदा हो जाती हैं। परिवार नियोजन के सम्बन्ध में किसी की भी बात बेटियों की माँ की समझ में नहीं आती। आर्थिक दंदुशा उसे कम कष्टकर प्रतीत होती है।

ऐसे लोगों की संख्या अब भी कम है जो केवल सम्पत्ति के लालच में हाथ बढ़ायें और ऐसा जामाता भी कठिनाई से मिलता है जो ससुराल में रहने का इच्छुक हो। तुम्हारे कोई और नहीं, हमें कहीं ठौर नहीं, ऐसा सम्बन्ध खोज निकालना बेटी के बाप के लिए एक टेढ़ी खीर होती है। सासरै को वास, आप कै कुल को नास (जो ससुराल में रहता है वह अपने कुल की प्रतिष्ठा में बट्टा लगाता है।) भाण कै घर भाई, अर सास रै जँवाई (बहिन के घर रहने वाला भाई और ससुराल में रहने वाले जामाता की प्रतिष्ठा घटती है।) पंजाबी लोकोक्ति में ससुराल में रहने वाले जामातों की तुलना कुत्ते से तथा हिन्दी कहावतों में भेड़ (मूर्ख) एवं गदहे से की गई है। उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा घटती है और वह एक उपहास का विषय बन जाता है। फिर किस बेटे का परिवार अपने बेटे, बहू को प्रसन्नतापूर्वक अपने से दूर देखना चाहेगा?

ऐसे परिवारों में बेटियों को भाई और माँ को बेटे मिलते ही रहते हैं। किन्तु ऐसे लोग प्रायः स्वार्थ-प्रेरित होते हैं। रक्तसम्बन्धों की अपनी ही बात होती है। उनमें से बेटियों के विवाह में सहयोग करने वाला कोई बिरला ही माई का लाल काम आता है। दहेज-दोहन में आस्था रखने वाले कितने महानुभाव ऐसे परिवारों के प्रति भी पसीजते हैं? सभी कष्ट बेटियों के माता-पिता को ही भोगना पड़ता है।

ज्येष्ठः पितृ समो भ्राता—ज्येष्ठ भाई को पिता के समान माना गया है। शास्त्रों ने उसे धर्म-पुत्र कहा है। वह कुल का दीपक-रक्षक होता है। अतः बेटियों के परिवार में बेटे की कमी दिन-रात खटकती है। इस मानसिक क्लेश से मुक्ति पाने के लिए भ्रमित माँ, बाप—बेटी को बेटे के बराबर, बल्कि बढ़कर होने के सम्बन्ध में हजार तर्क प्रस्तुत करते हैं। बेटे से भी अधिक बेटियों का लाड़-प्यार करते हैं। बेटियों को बेटा कहकर सम्बोधित करते हैं। ऐसे परिवारों में बेटियों को कुछ अधिक छूट भी मिल जाती है और वे, बेटों की वेशभूषा तक धारण करके माँ-बाप को संतुष्ट रखने का प्रयत्न करती हैं। असुरक्षा का वातावरण कुसमायोजित व्यक्तित्व उत्पन्न करता है। बेटियाँ अपने मानसिक तनावों तथा द्वन्द्वों के कारण मनोदैहिक रोगों से ग्रस्त हो जाती हैं जिससे इनका नारी-स्वरूप निखर नहीं पाता। किन्तु समझदार माता-पिता इस यथार्थ को ध्यान में रखते हुए अपनी बेटियों का पालन-पोषण करते हैं। स्वस्थ दृष्टिकोण रखने से बेटियाँ और भी अधिक समझदार एवं सहनशील हो जाती हैं। उनमें सामंजस्यपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए गृहस्थी सुचारु रूप से चलाने तथा अपने कर्त्तव्यों के पालन की सराहनीय क्षमता विकसित हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटे का सहारा न होने पर आर्थिक बोझ पिता पर ही पड़ता है जिससे बेटियाँ अपने को परिवार में भार समझने लगती हैं। ग्रामीण परिवारों में अधिकांश बेटियाँ इस घुटन को सहन करने के लिए विवश होती हैं। किन्तु शहरी परिवारों में बेटियाँ पढ़-लिख कर काम पर लगने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। वे कुछ कमाकर माँ-बाप का बोझ हल्का करती हैं। दिखा देना चाहती हैं कि वे बेटों से कम नहीं हैं। परन्तु ऐसी कमाऊ बेटियों के विवाह में विलम्ब का कोई न कोई कारण निकल आता है। कुछ तो अविवाहित ही रह जाती हैं। बिंध गया सो मोती, रह गया सो सीप, फिर तो जीवन काटना ही पड़ता है।

ऐसे परिवारों में माँ, बाप बेटियों के विवाह के लिए बहुत चिन्तित रहते हैं। कै जागै जैं कै घर में साँपा कै जागै बेटी कै बाप (जिसके घर में साँप होता है वह जागता है या फिर बेटी का बाप) अन्धे की मक्खी भगवान उड़ाता है। बेटियों का ब्याह हो जाता है और माँ-बाप की छाती से पत्थर टल जाता है।

बेटा से घर भरेला, बेटो से घर सून हो ला; टेयों के विवाह से परिवार का तमाशा ही समाप्त जाता है। सब सूना लगता है। माँ-बाप का मन अनेक उधेड़बुन में रमा रहता है। उनकी रुचि अपनी बेटियों की सुख-सुविधा तथा उनके पारिवारिक सम्बन्धों में अधिक होती है। पूर्वाग्रह से प्रेरित माँ, बाप, बेटियों के पक्षधर बने ही रहते हैं। उनकी बेटियाँ जामातों से किसी प्रकार कम नहीं हैं, इस भावना की तुष्टि के लिए वे जामातों की तुलना अपनी बेटियों से करते तथा उनमें कुछ न कुछ कमी खोज ही निकालते हैं। परिवार के सभी सदस्यों को भी अनेक सुझाव देते रहते हैं। बेटे का परिवार इसे अपनी व्यवस्था में अनुचित एवं असह्य हस्तक्षेप मानता है। ऐसी स्थिति में बहुधा परिवार की सामूहिक प्रतिक्रिया होती है, जिसे प्रायः बेटी को ही अधिक सहन करना पड़ता है। वह दो चक्की के बीच पिस कर रुग्ण तक हो जाती है। उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है। गृहस्थ जीवन का तनावग्रस्त होना तो स्वाभाविक है। ऐसे द्वन्द्व के कुप्रभाव से पति तथा बच्चे भी कैसे बच सकते हैं?

बेटियों के माँ बाप जो कुछ करते हैं, वह उनकी मानसिक बाध्यता होती है। घर में बहुयें होतीं तो उन्हें बेटियों की समस्याओं के सम्बन्ध में सोचने के लिए इतना समय ही कहाँ रहता? उनका बेटी, दामाद से अधिक आशायें रखना भी बहुत स्वाभाविक है; उदाहरणार्थ—जामातों से यह आशा करना कि वह घाघरी सम्बन्धों को (पत्नी से जुड़े हुए सम्बन्ध) पूर्ववत् बनाये रक्खेंगे, कितना भ्रामक है, जबकि बेटे आज स्वयं अपने कुल के सम्बन्धों के प्रति उदासीन दिखाई दे रहे हैं।

बेटियों के परिवार में उनके विवाह के बाद कष्ट पिता को भी होता है, क्योंकि प्रायः ज्येष्ठ पुत्रियाँ पिता का बड़ा ध्यान रखती हैं। किन्तु अधिकतम कष्ट माँ को होता है। नपूती माँ हीन भावना से ग्रस्त रहती हैं। बेटियों की माँ राणी, मरै बुढ़ापे पाणी—जब तक कन्याओं का विवाह नहीं होता तब तक सब काम वे करती हैं। माँ रानी सदृश हुकूमत चलाती है। वृद्धावस्था में बेटियाँ ससुराल में रहती हैं जिससे माँ को सब काम अपने ही हाथों करना पड़ता है। माँ का कुंठित मन कहता है—बेटी जाम जमारो हारयो (बेटी पैदा करके जन्म व्यर्थ ही खोया)।

समस्त मानव-समस्याओं का समाधान मानवीय दृष्टिकोण से ही सम्भव है। वर्तमान आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में ऐसे पंगु परिवारों के प्रति विशेष रूप से उदार बने रहने की आवश्यकता है। बेटियों एवं जामातों का दायित्व सबसे अधिक है। साथ ही बेटे के परिवार वालों को भी सहृदयता से काम लेना चाहिए। उनका भी नैतिक कर्त्तव्य है कि वे अपनी बहू के माँ-बाप की कठिनाइयों के प्रति उदासीन न रहें। परिवार से जुड़े सभी सम्बन्धियों को ऐसे परिवारों के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह अवश्य करना चाहिए। सरकार ऐसे परिवारों का सर्वेक्षण कराके उनकी सुख-सुविधा की योजना बना सकती है, अन्यथा ऐसे परिवारों को संरक्षण कौन प्रदान करेगा? ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पूर्णत: संशोधित एवं परिमार्जित तेरहवाँ संस्करण १९८३]

बी० एड० दिग्दर्शन (गाइड)

सम्पादक
भाई योगेन्द्रजीत
दिनेशचन्द्र भारद्वाज
विनोदकुमार अग्रवाल

विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० एड० परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रमानुसार प्रश्नोत्तर शैली में लिखित प्रशिक्षण विद्यालयों में तहलका मचाने वाली विद्यार्थियों की लोकप्रिय पुस्तक

★

अद्यतन तेरहवें संस्करण में मेरठ, गोरखपुर, फैजाबाद एवं विशेष रूप से म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के नये पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न प्रकरण जोड़कर पुस्तक को अधुनातन रूप दिया गया है।

अनुक्रमणिका

- शिक्षा सिद्धान्त तथा भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक विचारधारा
- शिक्षा मनोविज्ञान
- भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएं
- पाश्चात्य शैक्षिक विचारधारा
- विद्यालय प्रशासन, संगठन और स्वास्थ्य-विज्ञान
- शिक्षण-कला एवं विभिन्न विषयों का शिक्षण

प्रमुख विशेषताएँ

- प्रस्तुत संस्करण में 'शिक्षा-सिद्धान्त' के प्रथम प्रश्नपत्र में शिक्षा और समाज, शिक्षा और राजनीति, शिक्षा और अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान, नैतिक शिक्षा, शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियाँ—मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक एवं समाहारक तथा स्वतन्त्रता और अनुशासन आदि नवीन अध्यायों का समावेश किया गया है।
- द्वितीय प्रश्नपत्र में मनोविज्ञान व्यवहार के रूप में, अध्ययन आदतों का विकास, निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण, समाजमितिक एवं क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रायोजना आदि विशेष प्रकरणों का समावेश।
- अन्य प्रश्नपत्रों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, आजीवन शिक्षा, औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा विद्यालय तथा समुदाय, जनसंख्या-शिक्षण, शैक्षिक तकनीकी आदि कतिपय विशिष्ट अध्यायों का उल्लेख विशेष रूप से उ० प्र० एवं म० प्र० की शिक्षा के सन्दर्भ में किया गया है।
- इसमें प्रश्नों का विस्तार एवं आकार विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार दिया गया है। जटिल एवं सूक्ष्म विषयों का प्रतिपादन, सरल, स्पष्ट और वैज्ञानिक ढंग से सरल भाषा में किया गया है।
- **प्रस्तुत संस्करण का मुख्य आकर्षण** : शिक्षणकला नामक खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न विषयों—हिन्दी, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, गणित तथा गृहविज्ञान की शिक्षण-पद्धतियों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण सामग्री को सरल एवं सुबोध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सूचना—म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का अनुपूरक ३·०० रु० मे उपलब्ध है।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण सभी दृष्टियों से उत्तम एवं उपलब्ध गाइडों में सर्वश्रेष्ठ व सस्ता है।

आकार : डिमाई | पृष्ठ संख्या : १४५० | मूल्य : ४५·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा

शिक्षा में नवचिन्तन (प्रथम संस्करण १९८३) सं० डा० रामपाल सिंह, डिमाई, पृष्ठ ३६८, मूल्य २०·००

Teaching English in India (1st Edition) Dr. (Miss) Abha Rani Bisht, Demy, Pages 250, Price Rs. 12.00

सफल शिक्षण कला (आठवाँ संशोधित संस्करण) पी० डी० पाठक, डॉ० गुरुसरनदास त्यागी, डिमाई, पृष्ठ ४७०, मूल्य १६·००

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन (संशोधित सोलहवाँ संस्करण) श्रीमती एस० पी० सुखिया, डिमाई, पृष्ठ ४६६, मूल्य १५·५५, पुस्त० संस्करण २५·००

भाषा$_{1,2}$ की शिक्षण विधियाँ और पाठ-नियोजन (संशोधित द्वितीय संस्करण १९८३) डा० लक्ष्मी नारायण शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ४१२, मूल्य २०·००

जीव-विज्ञान शिक्षण (संशोधित एवं परिवर्द्धित तृतीय संस्करण) शैलेन्द्रभूषण, डिमाई, पृष्ठ १७०, मूल्य ७·५०

इतिहास शिक्षण (संशोधित पन्द्रहवाँ संस्करण) डॉ० गुरुसरनदास त्यागी, डिमाई, पृष्ठ ३१८, मूल्य १२·००

Teaching of English in India (Eleventh Edition) P. D. Pathak, Demy, Pages 164, Price Rs. 8.00

विविध

भारतीय काव्यशास्त्र (प्रथम संस्करण १९८३) डॉ० रामानन्द शर्मा, डिमाई, पृष्ठ ४३२, मूल्य २८·००, पुस्तकालय संस्करण ४०·००

हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि (संशोधित एवं परिवर्द्धित सप्तम् संस्करण १९८३) डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, डिमाई, पृष्ठ ५१०, मूल्य १६·९०, पुस्त० संस्करण ३०·००

हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार (संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण १९८३) डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, डिमाई, पृष्ठ ४३४, मूल्य २४·००

एम० ए० हिन्दी दिग्दर्शन-गाइड (उत्तरार्द्ध परीक्षा—भाग १) आगरा विश्वविद्यालय के एम० ए० उत्तरार्द्ध परीक्षा के पाठ्यक्रमानुसार, डॉ० कृष्णदेव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ ७००, मूल्य २४·००

एम० ए० हिन्दी दिग्दर्शन-गाइड (उत्तरार्द्ध परीक्षा—भाग २) आगरा विश्वविद्यालय के एम० ए० उत्तरार्द्ध परीक्षा के पाठ्यक्रमानुसार, डॉ० कृष्णदेव शर्मा, क्राउन, पृष्ठ ८०८, मूल्य २१·००

साहित्य दर्पण (संशोधित तृतीय संस्करण) डॉ० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल, क्राउन, पृष्ठ २२२, मूल्य ६·००

केशवदास—आलोचनात्मक अध्ययन (संशोधित सातवाँ संस्करण) डॉ० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल, क्राउन, पृष्ठ १८६, मूल्य ६·००

पृथ्वीराज रासो : पद्मावती समय (संशोधित पन्द्रहवाँ संस्करण) डॉ० हरिहरनाथ टण्डन, क्राउन, पृष्ठ १९०, मूल्य ६·००

कहानी-कानन (संशोधित द्वितीय संस्करण) डॉ० कैलाशचन्द्र अग्रवाल, क्राउन, पृष्ठ १४४, मूल्य ५·५०

चित्रकूट (खण्ड काव्य) (गुजरात वि०वि० के पाठ्यक्रम में स्वीकृत पाठ्यपुस्तक) (संशोधित पंचम संस्करण, १९८३) पृष्ठ १५६, मूल्य ६·००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

EDUCATION & PSYCHOLOGY

OUR ENGLISH PUBLICATIONS

1. **Educational Psychology** (*Ninth Edition*) 25·50
   Dr. S. S. Mathur *Lib. edn.* 40·00
2. **A Sociological Approach to Indian Education** (*Sixth Edition*) 28·00
   Dr. S. S. Mathur
3. **Philosophical and Sociological Foundations of Education** (*First Edition*) 20·00
   Dr. S. P. Chaube, Akhilęsh Chaube *Lib. edn.* 30·00
4. **Principles of Education** 20·00
   Dr. R. S. Pandey *Lib. edn.* 30 00
5. **An Introducation to Major Philosophies of Education** (*First Edition, 1982*) 14.00 *Lib. edn.* 20·00
   Dr. R. S. Pandey
6. **Educational Administration** 22·00
   S. P. Sukhia *Lib. edn.* 30·00
7. **Measurement and Evaluation in Psychology and Education** (*First Edition, 1983*) 25 00
   Dr. Bipin Asthana, Dr. R. N. Agrawal *Lib. edn.* 35·00
8. **School Health Education and Public Health** 20·00
   Dr. S. P. Chaube *Lib. edn.* 30·00
9. **Essentials of English Teaching** (*Sixth Edition, 1981*) 20·00
   R. K. Jain
10. **Teaching English in India** (*First Edition, 1983*) 12.00
    Dr. (Miss) Abha Rani Bisht
11. **Let Us Learn English** 14·00
    M. S. Sachdeva

IN Q. A. SERIES

1. **B. Ed. Guide** (*Second Edition, 1981/82*) 51·00
   N. R. Sharma
2. **Principles of Education** (*Second Edition*)
   P. D. Patak and G. S. D. Tyagi 12·00
3. **Basic Education** (*First Edition*)
   Pathak & Tyagi 5·00
4. **Principles and Practice of Education** (*Revised Second Edition*) 11·00
   Indra Sharma
5. **Educational Psychology** (*Third Edition*) 15·00
6. **History and Problems of Indian Education** (*Revised Second Edition*) 13·50
   Indra Sharma
7. **School Administration and Health Education** (*Enlarged Second Edition*) 15·00
   Indra Sharma
8. **Teaching of English in India** 6·50
   P. D. Pathak
9. **Educational and Vocational Guidance** (*First Edition*) 15·00
   N. R. Sharma

VINOD PUSTAK MANDIR

DR. RANGEYA RAGHAV MARG, AGRA–2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बिना टिकट प्रेषण करने का प्रमाण-पत्र संख्या—AG-009
साहित्य-परिचय [मार्च, 1983] पंजीबद्ध संख्या—L. AG.-038

शिक्षा-जगत में एक और नवीन मौलिक कृति

शिक्षा में नवचिन्तन

सम्पादक

डा० रामपाल सिंह

जियालाल शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर

● शिक्षा-जगत् के प्रख्यात लेखक डा० रामपाल सिंह की शिक्षा-जगत् को अत्यन्त ही अनूठी तथा उपयोगी देन के रूप में **'शिक्षा में नव-चिन्तन'** पुस्तक सुधी पाठकों के हाथों में शीघ्र ही पहुँच रही है। इस पुस्तक में शिक्षा-जगत् के विख्यात विद्वानों के उन्नीस लेख सम्मिलित किये गये हैं। ये लेख शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिकतम विचारधाराओं से सम्बन्धित हैं। सम्पूर्ण पुस्तक तीन खण्डों में विभक्त है—**प्रथम खण्ड** में शिक्षा के दार्शनिक पक्ष से सम्बन्धित लेख हैं। **द्वितीय खण्ड** में शिक्षा-तकनीकी तथा **तृतीय खण्ड** में अध्यापक-व्यवहार परिमार्जन से सम्बन्धित लेख हैं। लेखों की भाषा सरल व सुगम है तथा नवीनतम विचारों से ओतप्रोत है। प्रत्येक खण्ड के प्रारम्भ में खण्ड में सम्मिलित लेखों का सारांश दिया गया है और पुस्तक के प्रारम्भ में सम्पादकीय देकर विषय-वस्तु की प्रस्तावना दी गई है।

● प्रस्तुत पुस्तक वैसे तो शिक्षा से सम्बन्धित सभी वर्गों के लिये उपयोगी है किन्तु यह पुस्तक एम. ए. (शिक्षा) तथा एम. एड. के छात्रों के लिए विशेष उपयोगी है। पुस्तक में सम्मिलित लेखों का सम्पादन भी बड़ी कुशलता के साथ किया गया है। पुस्तक में निम्नांकित १९ लेख पाठकों के अध्ययन हेतु प्रस्तुत हैं :

खण्ड एक—शैक्षिक चिन्तन

१. शिक्षा का भविष्य-विज्ञान — डा० राम शकल पाण्डेय
२. आज व कल के लिये शिक्षा — डा० जे० पी० वर्मा एवं श्रीमती कमला वशिष्ठ
३. निर्विद्यालयीकरण — प्रो० पृथ्वी सिंह गहलोत
४. खुले विश्वविद्यालय — डा० के० कुमार
५. भारत में अनौपचारिक शिक्षा — डा० आर० एल० शर्मा

खण्ड दो—शिक्षण-तकनीकी

६. शिक्षा-तकनीकी — प्रो० सत्यदेव सिंह
७. पाठ्यक्रम नवाचार — डा० जे० के० सूद
८. शिक्षण-स्तर — प्रो० राधावल्लभ उपाध्याय
९. शिक्षण-कौशल — डा० रामपाल सिंह वर्मा
१०. शिक्षण-प्रतिमान — डा० के० एस० नरुला
११. शिक्षण-सिद्धान्त — प्रो० बी० सी० गुप्ता
१२. प्रणाली-विश्लेषण — डा० जे० के० सूद

खण्ड तीन—अध्यापक-व्यवहार परिमार्जन

१३. शिक्षा उद्देश्यों का वर्गीकरण-विज्ञान — डा० जे० पी० वर्मा तथा प्रो० सी० बी० पुरोहित
१४. कक्षा-कक्ष अन्तःक्रिया विश्लेषण — कु० अनामिका भटनागर
१५. सूक्ष्म-शिक्षण — डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ
१६. अभिक्रमित-अनुदेशन — प्रो० बी० एन० शर्मा
१७. अनुरूपीकृत सामाजिक दक्षता प्रशिक्षण — डा० आर० एस० गौड़
१८. अनुदेशन-प्रणालियाँ — डा० जमनालाल बायती
१९. बल-शिक्षण — भूदेव शास्त्री

आकार : डिमाई पृष्ठ 368 **मूल्य : 20·00**

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12
4-5-83

शैक्षिक जगत् के लब्ध प्रतिष्ठित लेखक—

डा० रामशकल पाण्डेय

रीडर, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की
शिक्षा-दर्शन पर

दो महत्वपूर्ण पुस्तकें

शिक्षा-दर्शन

प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना शिक्षाशास्त्र की स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों के निमित्त की गई है। साथ ही एम० ए० तथा एम० एड० के छात्रों के मध्य भी यह पुस्तक उपादेय होने के कारण अत्यन्त लोकप्रिय है। बी० एड० के मेधावी छात्र भी शिक्षा-दर्शन का उच्चस्तरीय ज्ञान प्राप्त करने के लिये इस ग्रन्थ का अध्ययन करते हैं। शिक्षा-दर्शन से सम्बन्धित सभी महत्त्वपूर्ण वादों—प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, यथार्थवाद, व्यावहारिकतावाद, लोकतन्त्र, मानवतावाद जैसे गहन विषयों का प्रामाणिक विवेचन करते हुए प्रस्तुत पुस्तक का संशोधित षष्ठ संस्करण, अस्तित्ववाद को सम्मिलित करके, शिक्षा-दर्शन के छात्रों की परीक्षा सम्बन्धी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

आकार : डिमाई पृष्ठ : 408 मूल्य : 18.00

AN INTRODUCTION TO

MAJOR PHILOSOPHIES OF EDUCATION

The book is divided into seven sections. The first section establishes the need for educational philosophy. It throws light on nature, scope, need, origin and functions of educational philosophy. Second section deals with metaphysical and epistemological theories in the context of education. Third, Fourth, Fifth, and Sixth sections are devoted to different educational philosophies, viz.. naturalisn, idealism, pragmatism and realism. The last section consists of major conclusions.
The book contains rich material on educational philosophy. The language is simple and the style is lucid. The book would be useful for M. A. and M. Ed. students of Indian Universities. B. A. & B. Ed. students having English medium would also find this book useful.

Size : Demy pp. 204 Price : Rs. 14·00
Lib. Edn. : Rs. 20·00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा द्वारा प्रकाशित

बी० एड० छात्रों के लिये उपयोगी पुस्तकें

प्रश्नोत्तर शैली में

पुस्तक	लेखक	मूल्य
● बी० एड० दिग्दर्शन (गाइड) सं० भाई योगेन्द्रजीत, दिनेशचन्द्र भारद्वाज, विनोद कुमार अग्रवाल		४५.००
● शिक्षा में सरल सांख्यिकी	डा० रामपालसिंह वर्मा	८.००
● शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● शिक्षा मनोविज्ञान	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● शिक्षा सिद्धान्त की रूपरेखा	,,	१२.५०
● शिक्षा-सिद्धान्त	,,	९.००
● तुलनात्मक-शिक्षा	,,	६.००
● भारतीय शिक्षा का इतिहास	कपूरचन्द जैन	११.००
● भारतीय शिक्षा की आधुनिक समस्याएँ	दिनेशचन्द्र भारद्वाज	१२.५०
● विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा	,,	१८.००
● विद्यालय प्रशासन	,,	९.००
● पाठशाला प्रबन्ध	,,	६.००
● स्वास्थ्य-विज्ञान	,,	८.००
● हिन्दी भाषा-शिक्षण	,,	७.००
● भूगोल-शिक्षण	,,	५.००
● विज्ञान-शिक्षण	डी० सी० शर्मा	५.००
● Teaching of English in India	P. D. Pathak	8.00
● गणित अध्यापन	जी० डी० सत्संगी, साहबदयाल	६.००
● इतिहास-शिक्षण	जी० डी० सत्संगी	६.००
● सामाजिक अध्ययन-शिक्षण	,,	५.५०
● नागरिक शास्त्र-शिक्षण	,,	६.००
● अर्थशास्त्र-शिक्षण	,,	५.००
● राजस्थान विश्वविद्यालय बी० एड० प्रश्नपत्र उत्तर सहित (१९७५ से १९८२ तक)	आर० पी० वर्मा	२४.७५
● आगरा विश्वविद्यालय बी० एड० प्रश्नपत्र उत्तर सहित (१९७४ से १९८० तक)	प्रो० सक्सेना	२२.५०
● सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	१०.००
● समाज-मनोविज्ञान	प्रो० सक्सेना	८.००
● असामान्य मनोविज्ञान	प्रो० सक्सेना	९.००
● बाल-विकास की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	९.००
● बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) प्रथम वर्ष (सं० १९८२-८३)	शर्मा एवं सत्संगी	१५.००
● बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) द्वितीय वर्ष (सं० १९८२-८३)	,, ,,	१२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 18 : अंक 4]
अप्रैल, 1983

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर 18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा—2
फोन : 76486

सम्पादकीय

विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता

मार्च के प्रथम सप्ताह में उत्तर प्रदेश-सरकार ने घोषणा की कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय की जाँच के लिए एक समिति नियुक्त की जाती है। इस एक सदस्यीय समिति को जिन मुद्दों पर जाँच करने के लिए कहा गया है, वे हैं—(१) छात्रों के निष्कासन में कोई भेदभाव तो नहीं बरता गया है; (२) एक चौकीदार की सेवाएँ समाप्त करने में अनियमितता तो नहीं हुई; और (३) विश्वविद्यालय परिसर में अनुशासनहीनता की समस्या। जाँच-समिति के एकमात्र सदस्य एक आई० ए० एस० अधिकारी हैं। कुलाधिपति ने इस जाँच का आदेश उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय अधिनियम की धारा ८ के अन्तर्गत प्राप्त अधिकार से दिया है।

विश्वविद्यालय अधिनियम की उक्त धारा द्वारा कुलाधिपति को विश्वविद्यालयों के मामलों की जाँच का अधिकार तो है किन्तु इस समय जो सबसे प्रमुख विचारणीय विषय हो गया है वह यह है कि क्या जिन मामलों को इलाहाबाद विश्वविद्यालय की जाँच का विषय बनाया गया है वे विषय विश्वविद्यालय के कुलपति अथवा अन्य अधिकारियों के अधिकार-क्षेत्र के विषय हैं या ये विषय उत्तर प्रदेश-सरकार अथवा कुलाधिपति के अधिकार-क्षेत्र के हैं। यदि इन विषयों पर विचार करने का अधिकार विश्वविद्यालय के प्रॉक्टोरियल बोर्ड, कुलपति, विद्वत् परिषद् और कार्यकारिणी परिषद् को है, तो निश्चित रूप से इस जाँच-समिति की नियुक्ति करके कुलाधिपति ने विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता पर आघात किया है। चाहे यह कार्य अवैधानिक न हो, चाहे क़ानून के पंडितों को इसमें कोई ग़ैर-क़ानूनी बात न दिखाई पड़ती हो किन्तु इससे विश्वविद्यालय की गरिमा पर आँच आती है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की यशोगाथा शिक्षाशास्त्री गाते नहीं अघाते। इस समिति की नियुक्ति से इसकी स्वायत्तता और इसकी उच्चस्तरीय मान्यताओं को ठेस पहुँचना स्वाभाविक है। इसीलिए वहाँ के शिक्षक वर्ग ने, डा० बाबूराम सक्सेना, डा० रामकुमार वर्मा, सुश्री महादेवी वर्मा ऐसे चिन्तकों ने एवं नगर के गण्यमान्य नागरिकों ने इस जाँच-समिति की नियुक्ति की भर्त्सना की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोवैज्ञानिक 'मापन और मूल्यांकन' पर एक और नवीन मौलिक कृति

मनोवैज्ञानिक परीक्षण

[PSYCHOLOGICAL TESTING]

लेखक

डा० एम० ए० शाह
अध्यक्ष–मनोविज्ञान विभाग
सैण्टजॉन्स कालेज, आगरा

कुमारी कुसुम माथुर
प्रवक्ता–मनोविज्ञान विभाग
बैकुंठीदेवी महाविद्यालय, आगरा

● मनोविज्ञान विषय में अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, और प्रकाशित होती रहेंगी। मनोविज्ञान के क्षेत्र में नित्य नवीन शोध हो रहे हैं, और प्रायः हर तीन वर्ष पश्चात् नवीन पुस्तक की आवश्यकता प्रतीत होने लगती है। मापन और मूल्यांकन का एक ऐसा ही क्षेत्र है जिसके महत्त्व को सभी स्वीकार करते हैं। वर्तमान काल में शैक्षिक प्रगति तथा व्यक्तित्व की समस्याओं में उन्नति के कारण इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है। भारत में बहुत से नवीन परीक्षण किये जा रहे हैं, किन्तु उनका आधार अभी तक विदेशी मानक और परीक्षण ही बने हुए हैं। ऐसे परीक्षण बहुत कम देखने में आये हैं जो भारतीय संस्कृति और उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हों।

● प्रस्तुत पुस्तक इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए लिखी गई है। इसका मुख्य उद्देश्य नवीन संकाय के पाठ्यक्रम तथा व्यावसायिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके उनको इस दिशा में निर्देशित करना है कि भारतीय विश्वविद्यालय तथा शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशों के उद्देश्य से नवीन परीक्षण निर्माण करने में उनको पर्याप्त सहायता मिल सके।

● प्रस्तुत पुस्तक में वर्तमान काल तक के शोधों को सम्मिलित करने का प्रयत्न किया गया है। यही इस पुस्तक की प्रमुख विशेषता है।

पुस्तक को निम्न बीस अध्यायों में विभक्त करके विद्यार्थीपयोगी बनाने की चेष्टा की गई है।

अध्याय-क्रम

1. मनोवैज्ञानिक परीक्षण—उद्गम एवं विकास (Origin and Development of Psychological Testing)
2. मनोवैज्ञानिक मापन—एक झलक (A view of Psychological Measurement)
3. शैक्षिक मूल्यांकन (Educational Evaluation)
4. मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological Testing)
5. परीक्षण रचना (Test Construction)
6. परीक्षण वैधता (Test Validity)
7. परीक्षण विश्वसनीयता (Test Reliability)
8. परीक्षण प्राप्तांक एवं उनका रूपान्तरण (Test Scores and their Transformation)
9. मानक (Norms)
10. बुद्धि का स्वरूप एवं सिद्धान्त (Nature and Theories of Intelligence)
11. बुद्धि परीक्षण (Intelligence Tests)
12. अभिक्षमता परीक्षण (Aptitude Tests)
13. उपलब्धि परीक्षण (Achievement Tests)
14. व्यक्तित्व निर्धारण (Personality Assessment)
15. सम्बन्धित व्यक्तित्व परीक्षण (Related Personality Tests)
16. रुचि परीक्षण (Interest Test)
17. प्रक्षेपण विधियाँ (Projective Techniques)
18. अभिवृत्ति मापन की प्रविधियाँ (Techniques of Attitude Measurement)
19. सृजनात्मकता का मापन (Measurement of Creativity)
20. आकांक्षा स्तर पर परीक्षण (Level of Aspiration Test)

आकार–डिमाई प्रथम संस्करण—1983 मूल्य—17.00 पुस्त० संस्करण—25.00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा : व्यावसायिक तथा अकादमिक अध्ययन-विषय

कुमुद कुमार
प्रवक्ता, शिक्षा-विभाग, सी० एस० एन० कालेज, हरदोई

शिक्षा, जिसे 'एजुकेशन' कहते हैं, एक ऐसा शब्द है जिससे यह भ्रम बना रहता है कि यह एक विषय-अध्ययन का या शैक्षिक व्यवसाय अथवा शिक्षक-प्रशिक्षण का नाम है; या अनुभव ग्रहण करने की प्रक्रिया या व्यक्तित्व के विकास का नाम है। शिक्षा व 'एजुकेशन' संज्ञाबोधक शब्द हैं। अतः स्पष्टतः कहा जा सकता है कि यह किसी स्वरूप या/और प्रक्रिया का नाम है। यह स्वरूपात्मक एवं प्रक्रियात्मक होने के कारण व्यवस्थात्मक, परिणामात्मक तथा प्रकार्यात्मक हो सकता है। शिक्षा का तात्पर्य इस प्रकार व्यवस्थात्मक, प्रकार्यात्मक तथा परिणामात्मक संज्ञाबोधक अर्थ प्रस्तुत करता है। जब तक इस मूल शब्द में कोई परिवर्तन नहीं किया जाता, इसे जबरन घुमा-फिरा कर क्रियाबोधक अर्थ नहीं दिया जा सकता। यह बात अलग है कि परिणामात्मक संज्ञा के पीछे क्रियात्मकता का निरन्तर प्रभाव रहता है, क्योंकि क्रियाओं के बिना कोई परिणाम की आशा नहीं की जा सकती। सुचारु परिणाम प्राप्त करने के लिए व्यवस्था का निर्माण करना होता है, और उस व्यवस्था एवं संगठन में निश्चित एवं उद्देश्यपूर्ण प्रकार्य निहित होते हैं। इस प्रकार व्यवस्थात्मक और प्रकार्यात्मक संज्ञाबोध के पीछे क्रिया का बोध छिपा है। अब प्रश्न उठता है कि शिक्षा के पहलू में क्रिया का पक्ष अत्यधिक प्रभावपूर्ण होने के बाद भी इसे क्रिया शब्द क्यों नहीं दिया गया? इसका उत्तर यह हो सकता है कि शिक्षा से सम्बन्धित क्रियाओं का नाम (संज्ञा) होने के कारण इसे संज्ञाबोधक नाम दिया गया। चूँकि संज्ञा और क्रिया के विशेषणों को चरितार्थ बनाने के लिए समुचित व्यवस्थाओं एवं संगठनों तथा प्रकार्यों का निरूपण करना आवश्यक होता है, इसलिए शिक्षा की क्रिया एवं संज्ञा को विशेषणों से युक्त करने के लिए निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए उसका व्यवस्थात्मक एवं प्रकार्यात्मक स्वरूप महत्त्वपूर्ण हो जाता है और उसे भी शिक्षा के अर्थ में सम्मिलित कर लिया जाता है। इस प्रकार 'शिक्षा' शब्द का अत्यन्त व्यापक अर्थ है, जिसमें संज्ञा, क्रिया एवं उनके विशेषणों का लाक्षणिक गुण समाहित हैं।

'शिक्षा' एक अध्ययन का विषय भी है, जिसमें शिक्षा के व्यवस्थात्मक; परिणामात्मक तथा प्रकार्यात्मक स्वरूपों का अध्ययन किया जाता है। वास्तव में उपर्युक्त आधार पर शिक्षा के तीन रूप हैं : (१) औपचारिक, (२) अर्धोपचारिक, तथा (३) अनौपचारिक। भ्रमवश औपचारिक शिक्षा ही 'शिक्षा' का पर्याय बन गयी है। सामान्य रूप से जब हम 'शिक्षा' की बात करते हैं, तो उसका अभिप्राय स्कूली शिक्षा से लगा लेते हैं और उसी संदर्भ में शिक्षा की व्यवस्थात्मक, प्रकार्यात्मक तथा परिणामात्मक स्वरूपों का निरूपण करते हैं। आज यह निर्विवाद है कि अनौपचारिक शिक्षा का महत्त्व औपचारिक शिक्षा की तुलना में कम नहीं है; बल्कि यह कह सकते हैं कि ग़ैर-औपचारिक शिक्षा की गोद में ही औपचारिक शिक्षा का पोषण होता है। औपचारिक शिक्षा की विशेषताओं में पूर्व निर्धारित उद्देश्य, लक्ष्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधि, व्यवस्था, मूल्यांकन और मूल्य आदि महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अतः पूर्व निर्धारित तत्त्वों से युक्त योग्यता-धारकों का निर्माण करने के लिए जिन उद्देश्यों, लक्ष्यों, पाठ्यक्रमों, शिक्षण-विधियों, व्यवस्थाओं एवं मूल्यांकन आदि की संरचना बनाई गई, उसे अध्यापक शिक्षा (Teacher Education) के नाम से जाना जाता है। इस शिक्षा में शिक्षा के एक पहलू (शिक्षक) को इस प्रकार से तैयार किया जाता है कि वह दूसरे पहलू (शिक्षार्थी) को इस ढंग से प्रभावित करे कि उसमें वाञ्छित विकास प्रकाशित हो सके और यह कार्य वह पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्य-पुस्तक, निर्देशन और व्यवस्था के अन्तर्गत सफलतापूर्वक सम्पादित कर सके। अतः इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि स्कूलों में आये विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के गुणों का विकास सम्पादित एवं प्रकाशित करने के लिए आवश्यक योग्यताओं हेतु प्रशिक्षित होने वाले व्यक्तियों को जो शैक्षणिक कौशल हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, उस प्रशिक्षण सम्बन्धी सैद्धान्तिक और व्यावहारिक विषय के अध्ययन-क्षेत्र को 'शिक्षा' नाम दिया गया।

किन्तु आज हम इस बात से अनभिज्ञ नहीं हैं कि स्कूली शिक्षा के अतिरिक्त गृह, सामुदायिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में अनौपचारिक तथा अर्धोपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा और उस पर पड़ने वाले विभिन्न तत्त्वों के प्रभावों एवं स्थानों का भी महत्त्व है। उसके व्यवस्थात्मक, प्रकार्यात्मक एवं परिणामात्मक स्वरूपों के स्वतन्त्र एवं शुद्ध अकादमिक अध्ययन का भी विषय-क्षेत्र है, जो कि पूर्ववर्णित शिक्षा की क्षेत्र-परिधि के अन्दर और बाहर दोनों हैं। शिक्षा एक सामाजिक कार्य है—यह सामाजिक अन्तःक्रिया का परिणाम है। शिक्षा के व्यवस्थात्मक, प्रकार्यात्मक और परिणामात्मक स्वरूपों पर समाज और समाज-विज्ञानों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। इस सन्दर्भ में भी शिक्षा का अकादमिक अध्ययन विषय पूर्ववर्णित 'शिक्षा' की परिधि से अलग होता दिखाई देता है।

व्यक्ति जब समाज में रहता है तो उसकी बहुत-सी ऐसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जिन्हें समाज में ही हल किया जा सकता है। समाज में विभिन्न समस्याओं को पहिचानना व उनका हल निकालना तथा हल निकालने के लिए अनुमानों, सिद्धान्तों, प्रयोगों और विधियों की विविध विशिष्टताओं के आधार पर उनका संयोजन करना विभिन्न सामाजिक विज्ञानों को विकसित करना होता है। सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों में सामाजिक एवं वैज्ञानिक अनुभवों को वैज्ञानिक ढंग से संगठित एवं प्रस्तुत करने के लिए सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्गत अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, भूगोल आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है। ठीक इसी प्रकार सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों में 'शिक्षा' का सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण एवं स्वतन्त्र स्थान होना चाहिए। इसे खुले रूप में अकादमिक तथा समाज-विज्ञान के अध्ययन-विषयों की कोटि में रखना चाहिए। अध्यापक प्रशिक्षण-शिक्षा की परिधि से निकाल कर इसके अध्ययन विषयों की नवीन संरचना निर्धारित की जानी चाहिए जिससे कि इसकी स्वतन्त्र पहिचान हो और अध्ययन के क्षेत्र में इसके विषयों का स्वरूप अकादमिक और समाजवैज्ञानिक हो।

यद्यपि इस सम्बन्ध में पहले से प्रयास चल रहे हैं और इस प्रयास का ही परिणाम है कि विश्वविद्यालयीय स्तर पर भी बी० ए० और एम० ए० की कक्षाओं में 'शिक्षा' (Education), गैर 'शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा' के रूप में एक अध्ययन का विषय बन चुका है। किन्तु खेद का विषय है कि अकादमिक-सामाजिक विज्ञान के रूप में स्वतन्त्र विषय की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए इसको अध्यापक प्रशिक्षण वाली 'शिक्षा' के नाम, विभाग व पाठ्यक्रम आदि से पूर्णतः अलग स्वतन्त्र अस्तित्व न प्रदान किया जा सका और न ही इस दिशा में ठोस कदम उठाए जाने के संकेत ही मिल रहे हैं। यह विडम्बना की ही बात है कि बी० एड० स्तर पर 'शिक्षा' अध्यापन व्यवसाय हेतु प्रशिक्षण प्रदान करती है किन्तु एम० एड० और एम० फिल० स्तर पर यही 'शिक्षा' विशुद्ध रूप से सैद्धान्तिक रह कर बी० एड० स्तर पर प्राप्त अध्यापकीय प्रवीणता का विकास करने से विमुख हो जाती है। यह ऐसा ही है जैसे बी० टेक० के पश्चात् अधिक प्रवीणता के लिए एम० एस-सी० की शिक्षा प्रदान कर एम० टेक० की उपाधि दे दी जाय।

इससे बड़ी विडम्बना यह है कि दोनों ही प्रकार की शिक्षा (अकादमिक एवं सामाजिक-विज्ञान अध्ययन विषय के रूप में तथा अध्यापन व्यवसाय हेतु प्रशिक्षण के अध्ययन-विषय के रूप में) को एक ही नाम 'शिक्षा' (Education) से सम्बोधित करते हैं; जबकि दोनों के लिए शिक्षा का नाम उपयुक्त नहीं है। इसके नाम से ही यह ज्ञात नहीं होता कि यह एक अध्ययन का विषय है। यह सत्य है कि दोनों शिक्षा के मध्य कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती, किन्तु नाम में अर्थपूर्ण अन्तर रखकर पहिचानने की सुविधा को ध्यान में लाना चाहिए। 'शिक्षा' अध्ययन-विषय के रूप में ऐसा लगता है जैसे समाजशास्त्र का नाम समाज होता या अर्थशास्त्र का नाम अर्थ होता या रसायन विज्ञान का नाम रसायन होता……आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि अभी तक इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है, किन्तु अब ध्यान देने की आवश्यकता प्रतीत करनी चाहिए और इसका सार्थक और स्पष्ट नामकरण करना चाहिए। मेरे विचार में दोनों प्रकार की 'शिक्षा' के लिए भिन्न नामकरण, उसके स्वरूप को प्रथम दृष्टि में स्पष्ट करने की क्षमता से युक्त होना चाहिए।

अध्यापक प्रशिक्षण शिक्षा एक व्यावसायिक कुशलता प्रदान करती है, जिसकी अपनी विशिष्ट प्रविधियाँ हैं, जिसके द्वारा प्रशिक्षार्थी में विशेष कौशल, ज्ञान एवं कार्यक्षमता का विकास किया जाता है। अतः इसी भाव को प्रस्तुत करने वाले अध्ययन-विषय का नाम पुनर्स्थापित एवं स्वीकार किया जाना चाहिए, जिससे यह तकनीकी और कार्य की वैज्ञानिकता का बोध करा सके; जैसे—Padagogics : शिक्षण विज्ञान, Teaching Technology : शिक्षण प्राविधिकी आदि।

अकादमिक एवं सामाजिक विज्ञान के रूप में 'शिक्षा' का अध्ययन-विषय अत्यधिक व्यापक है। अतः शिक्षा के व्यवस्थात्मक, परिणामात्मक तथा प्रकार्यात्मक स्वरूपों का व्यापक अध्ययन करने वाले सार्थक नाम को चुना जाना चाहिए। चूँकि Education शब्द की व्युत्पत्ति Educare से हुई है, अतः तद्भव शब्द के आधार पर इसका नामकरण किया जा सकता है; यथा—Educarology या Educationology या Educational Science : शैक्षिक विज्ञान या शिक्षाशास्त्र आदि।

दोनों प्रकार की 'शिक्षा' के लिए स्वतन्त्र नामकरण ही पर्याप्त न होगा, बल्कि विश्वविद्यालयों में स्वतन्त्र विभागों का होना आवश्यक हो गया है। तभी शिक्षा-सम्बन्धी वैज्ञानिक अध्ययन को फल-फूल कर स्वतन्त्र अकादमिक और सामाजिक विज्ञान के रूप में मान्यता मिल सकेगी और प्रखर बुद्धि के विद्यार्थी शैक्षिक विज्ञान को एक सशक्त अध्ययन-विषय के रूप में आवश्यक परिवर्द्धन कर इसे समाजोपयोगी बनाएँगे।

बी० ए० गृह-विज्ञान की छात्राओं के लिए—

डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी द्वारा लिखित

गृह-व्यवस्था एवं गृहकला
ग्यारहवाँ संस्करण, १९८३
मूल्य : सोलह रुपये पचास पैसे

पोषण एवं आहार विज्ञान
दसवाँ संस्करण, १९८१
मूल्य : तेरह रुपये पेंतीस पैसे

गृह-विज्ञान साहित्य

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त
तेरहवाँ संस्करण, १९८२
मूल्य : आठ रुपये पचास पैसे

मातृकला एवं शिशु कल्याण
ग्यारहवाँ संस्करण, १९८२
मूल्य : चौदह रुपये

स्वास्थ्य विज्ञान तथा जन स्वास्थ्य
जी० डी० सत्संगी
चतुर्थ संशोधित संस्करण, १९८३ **मूल्य : बारह रुपये**

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो प्राचीन काव्य ग्रन्थों के नवीन संस्करण अब उपलब्ध हैं !

कबीर ग्रन्थावली

[संजीवनी व्याख्या सहित]

सम्पादक एवं भाष्यकार
डा० भगवत्स्वरूप मिश्र
अवकाश प्राप्त हिन्दी विभागाध्यक्ष
आगरा कालेज, आगरा

[संशोधित एवं परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण १९८३]

- सन्त कबीर का प्रसिद्ध ग्रन्थ '**कबीर ग्रन्थवाली**' सन्त मत का एक महान् ग्रन्थ है। प्रस्तुत पुस्तक के आलोचना भाग में कबीर का जीवन परिचय, कबीर की समन्वय-साधना, कबीर का जीवन-दर्शन, कबीर का रहस्यवाद एवं प्रेमानुभूति, कबीर का काव्य-सौष्ठव, कबीर का साखी-साहित्य एवं मूल्यांकन आदि में जो विचार व्यक्त किये गये हैं वे एक सीमा तक मौलिक हैं तथा 'कबीर ग्रन्थावली' की विषय-सामग्री के सन्दर्भ में हैं। इन शीर्षकों में कबीर के बाह्य, आन्तरिक एवं भाव-जगत् को बहुत गम्भीरता के साथ व्यक्त किया गया है।
- संकलन भाग में साखी, पदावली, रमैणी आदि की व्याख्यात्मक टिप्पणी के द्वारा लेखक ने कठिन अध्यवसाय और परिश्रम किया है। विषय को जहाँ विस्तार के साथ प्रयुक्त करके स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है, वहाँ टिप्पणी दे देकर उस व्याख्या में चार चाँद लगा दिये हैं।
- कबीर जैसे मनीषी की उलटवाँसियों और रहस्यमयी उक्तियों का सहज अर्थ पाना कोई सहज काम नहीं है, फिर भी लेखक ने गहन से गहन अर्थ गाम्भीर्य को सहज, सुलभ एवं सरल बनाने की प्रशंसनीय चेष्टा की है। कबीर के काव्य सौष्ठव, उसकी रमणीयता और ताल एवं लय का वर्णन तथा स्थान-स्थान पर टिप्पणियों के माध्यम से अलंकारों की ओर निरन्तर इंगित करके पुस्तक को काव्य की कसौटी पर खरी उतारने की पूर्ण चेष्टा की है।

पृष्ठ संख्या ७१४ आकार डिमाई मूल्य ३५.००

जायसी ग्रन्थावली

[संशोधित षष्ठ संस्करण १९८३]

सम्पादक
राजनाथ शर्मा

- प्रेम के अमर गायक मलिक मुहम्मद जायसी का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पदमावत' हिन्दी का अमर महाकाव्य और हिन्दी-प्रेम काव्य का सर्वाधिक चर्चित व प्रसिद्ध ग्रन्थ है। प्रस्तुत पुस्तक 'जायसी ग्रन्थावली' में पदमावत का शुद्ध मूल पाठ, शब्दार्थ, व्याख्या, अलंकार तथा काव्य सौन्दर्य, उद्घाटित करने वाली अन्य विशेषताओं का अंकन करने का प्रयत्न किया है।

सम्पादक के अनुसार 'पदमावत्' मूलतः एक अध्यात्मकपरक ग्रन्थ न हो प्रेम के वास्तविक विशुद्ध रूप को निरूपित करने वाला ग्रन्थ है अतः प्रेम के लौकिक स्वरूप को ही मूल मान उसी के अनुसार अर्थ किये गये हैं। साथ-साथ अन्य विद्वानों द्वारा निरूपित अध्यात्मपरक अर्थ देकर एवं उसकी आलोचना करके 'पदमावत' सम्बन्धी नवीन शोध के आधार पर संशोधन कर इसे अधुनातन रूप प्रदान किया गया है।

पृष्ठ संख्या ८१६ आकार डिमाई मूल्य ३५·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर्सरी पाठशालाओं में खेल का स्थान

कु० कल्पना टण्डन
मुरादाबाद

नर्सरी पाठशालाओं में ३ से ५ वर्ष तक के बालक और बालिकायें पढ़ते हैं। इस अवस्था को शैशवावस्था या प्रारम्भिक बाल्यावस्था कहा जाता है। इस आयु में बालक कुछ करने के लिए आतुर रहता है। उसमें क्रियाशीलता भरपूर रहती है। वह चुप नहीं रहना चाहता। यदि उसकी क्रियाशीलता खेल द्वारा बनाई रखी जाय तो बालकों का स्वस्थ विकास हो सकता है, अन्यथा वे कुंठाओं का शिकार हो सकते हैं।

नर्सरी पाठशालायें खेल के महत्त्व को पहचानती हैं। वे खेल के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था करती हैं और यह माता-पिता तथा अन्य साधारण शिक्षकों के लिए चौंका देने वाली घटना हो सकती है।

जैसा कि बेंजामिन ने कहा है :—

"बाल्यावस्था का खेल वातावरण में की गई प्रतिक्रिया है, जो क्रिया की प्रेरणा का प्रदर्शन है, तथा यह स्वयं सुखद एवं संतोषप्रद है।"

अतः बालक अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन में खेल तथा खेल की क्रियाओं का पूरा इस्तेमाल करता है। खेल एक प्रकार का प्राकृतिक प्रदर्शन है, अतः इसके माध्यम से बालक अपनी शक्ति का इस्तेमाल बिना किसी अवरोध या रुकावट के साथ करता है।

खेल के महत्त्व को देखते हुए नर्सरी पाठशालाओं के समक्ष भी यह समस्या उठती है कि बालकों के समुचित विकास के लिए खेल-पद्धतियों का प्रयोग कैसे किया जाय। इस प्रश्न के उत्तर के लिए खेल के कुछ पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है।

खेल क्या है ?

क्रो तथा क्रो के अनुसार, "खेल स्वनिर्धारित क्रिया है अथवा यह प्रयोजनहीन क्रिया है जो किसी उद्देश्य की ओर बढ़ती है।" पाठक महोदय के अनुसार, खेल एक ऐसी क्रिया है, जिसे व्यक्ति उस समय करता है जब वह अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतन्त्र होता है।"

अतः खेल बालकों के लिए स्वच्छन्द रूप से शक्ति-प्रवाह का साधन है जो सुख देती है।

खेल की विभिन्न धारणायें

खेल की वास्तविक उपयोगिता एवं मूल्यों को ध्यान में रखते हुए, कुछ विद्वानों ने इसके स्वरूप को समझाने का प्रयास किया है। इस प्रकार की चार मुख्य धारणायें हैं; यथा :—

(i) खेल अवरुद्ध शक्ति को प्रवाहित कर देता है।

(ii) खेल के द्वारा बालक के विकास की विभिन्न मनोवैज्ञानिक आवश्यकतायें पूरी होती हैं।

(iii) विकास की प्रत्येक अवस्था में खेल की अलग-अलग विशेषतायें होती हैं; जैसे—प्रारम्भिक शैशवावस्था में बालकों को वस्तुएँ उठाने और फेंकने में आनन्द आता है, जो वास्तव में माँसपेशियों की परिपक्वता के लिए अभ्यास है।

(iv) खेल के द्वारा, बालक को शान्ति और विश्राम मिलता है। उसमें तनाव कम हो जाता है। वह खेल के द्वारा, कल्पना, अनुकरण, सृजनात्मकता आदि मनोवैज्ञानिक गुणों का भली-भाँति विकास करता है।

खेल के प्रमुख लक्षण

खेल के द्वारा कुछ मनोवैज्ञानिक लक्षणों का प्रदर्शन होता है, जिनकी सहायता से बालकों के स्वभाव को समझने में सहायता मिलती है।

(i) खेल के प्रकार बालक के विकास-स्तर का प्रदर्शन करते हैं। (ii) खेल के ऊपर सामाजिक परम्पराओं का प्रभाव पड़ता है। (iii) आयु की वृद्धि के साथ खेल की क्रियाशीलता एक सीमा तक बढ़ती है और फिर इसमें कमी आती है। (iv) आयु-वृद्धि के साथ खेल के लिए समय कम दिया जाता है। (v) बालक अपनी इच्छा के

[शेष पृष्ठ ९ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाँ गया मेरा बचपन····?

श्यामसरन अग्रवाल 'विक्रम'
के—1/42, मॉडल टाउन—II, दिल्ली ११०००६

आपने मेरा नाम पूछा है न ? रख लीजिये, मि० आज ! अब तो मैं 'आज' बन ही गया। बीता हुआ कल फिर से मैं बन नहीं सकता। आने वाले अनदेखे कल का अनचाहा झमेला मोल लेना चाहता नहीं। मेरा बचपन जरूर सुनहरा था; जवानी और बुढ़ापा कैसा होगा, यह अंदाजा लगाने की अब न तो मेरी उम्र है, न ही कोई तमन्ना।

मैं हूँ 'आज'। हाय····! क्या मज़े का था बचपन मेरा ! न जाने कब, कैसे मेरे हाथ पर ताली बजाकर····

किशोर वय को यों चुपके से सौंप करके मुझे,
कहाँ गया मेरा बचपन खराब करके मुझे ?

बयःसन्धि का यह मुक़ाम, यह दोराहा है भी ऐसा अजीब कि आगे ही आगे बढ़ने की गुंजायश है। पीछे कदम चल नहीं सकते, घूम कर देख नहीं सकते। दूसरी मुसीबत यह कि यदि कहीं चाल चूका तो मैं रहा अनुभव-शून्य और बचपन पीछे छूट गया होने से मुझे बच्चे की तरह कदम-ब-कदम सम्हालने को आगे कोई आयेगा नहीं। वो भी क्या दिन थे जब—

बाबा बाबा कहते थे, बड़े मज़े में रहते थे,
अब बाबा बाबा कहते हैं, डाँट-डपट ही सुनते हैं।

हम जब बच्चे थे तब घर वाले कैसे होड़ लगाकर आगे आते थे ! मानो हम वी० आई० पी० थे। कोई कपड़े पहिना रहा है (स्कूल ड्रेस रोज़ ही तो धुलती थी), कोई दूध थामे हमारे चारों ओर घूम रहा है, कोई स्कूल का बस्ता तैयार कर रहा है। हंगामा है—हटो, बचो ! राजा मुन्ना की सवारी आ रही है। ए-वन पब्लिक स्कूल की बस आने ही वाली है।

और···आज ?

घर में सुबह से सभी को कितना काम रहने लगा है ! जिसे देखो, काम ही काम ! कालेज के वक्त खाना जैसा बन गया, खा लो। न बन पाये तो केन्टीन में देख लेना। और कपड़े····? नहाते तो रोज़ ही हो; एक शर्ट, एक पैंट साबुन-पानी में निकाल लिया करो। सुखाई, प्रेस कराई हम देख लेंगे। और ज़रा अपना पढ़ाई का कोना तो देख लिया करो ! कहीं किताबें, कहीं जुराबें, कहीं जूते, कहीं फीते, इधर धूल, उधर कचरा। किताबें हैं या बिखरे ताश के पत्ते ! एक ढूँढ़ो, चार उलझी चली आती हैं।

हम मुन्ना राजा थे तब किस स्कूल में जाना है, उसी का चुनाव एक चर्चा बन गया था। कितने दिन बहस चली थी ! कन्वेन्ट पर कन्वेन्ट के प्रवेश-फार्म, नियम, विवरण मँगाये गये थे। आखिर ए-वन पब्लिक स्कूल में हमारे प्रवेश पर जलसा भी मनाया गया था !

और·······इन दिनों ?

मैं कहने को तो थर्ड ईअर में पढ़ रहा हूँ लेकिन हक़ीक़त यह कि बेगार ढो रहा हूँ। इण्टर के बाद डैडी-मम्मी से कितना पूछा कि मुझे क्या कोर्स लेना चाहिए ? लेकिन एक को फुर्सत नहीं, दूसरे को दिलचस्पी नहीं। सहयोग, सहारे को कोई 'सोर्स' वाला भी नहीं जो अच्छे कोर्स में प्रवेश के लिए सिफारिश कर दे। एक मुसीबत यह भी कि अच्छे कोर्स में प्रवेश के लिए सीटें बिकती भी हैं। वहाँ सूखी सिफारिश नहीं, तर माल से काम चलता है, सो अपने पास कहाँ ?

दामो दिरम अपने पास कहाँ,
चील के घोंसले में माँस कहाँ !

पापाजी को रोज़ सबेरे कुआँ खोदना और तीन-तेरह के जोड़तोड़ मिलाना ! मुझसे आस लगाये हैं कि बेटा ग्रेजुएट होकर गिरस्ती का भार ढोने में हमारा हाथ बटायेगा ······और बेटेजी का हाल आप देख ही रहे हैं !

एक नज़र मेरी पारिवारिक और सामाजिक मिसफिट याने विसंगति की ओर भी·······

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं बच्चा तो रहा नहीं जो परिवार वाले हर मजमून की गलबतियाँ, गप्पगोष्ठियाँ मेरे होते हुए भी बेहिचक करते रहें ! वे समझते हैं कि मैं सब समझता हूँ, बड़ा घुन्ना हूँ। इसलिये सभी मुझसे कतराते हैं। दूसरी ओर, बड़ा मैं हूँ नहीं जो किसी समस्या को सुलझाने की चर्चा में भाग ले सकूँ। अजीब मुसीबत है, जायें तो जायें कहाँ ? समवयस्क यार-दोस्तों में उठूँ-बैठूँ तो घर वालों की सी० आई० डी० बरकरार ! उचित से अधिक विलम्ब हुआ तो फटकार ! घर वाले समझते हैं कि वयःसन्धि का यह नाज़ुक मुक़ाम बिगाड़ता अधिक है, संवारता कम। अजीब शक-ओ-शुबह की निगाहें मेरी पीठ को, मेरे चेहरे को बेधती रहती हैं। अकेले, बक-ध्यान लगाये पढ़ने में दीन-ओ-दुनियाँ को भूले रहो…'लड़का पागल हो जायेगा' और खेलों में लगे रहो तो—'पढ़ेगा क्या खाक ? फीस और किताबें कैसे जुटायी जाती हैं, सो हज़रत को कहाँ पता !'

सोच रहा हूँ, कोई 'शार्ट कट' आप ही बतायें जो तुर्तफुर्त स्नातक, उत्तर स्नातक बन जाऊँ; रेखें, मसें, भीग आयें, कहीं अच्छी-सी नौकरी पा जाऊँ और घर वाले एक गुड़िया-सी बहू लाकर हमारे जोड़े को आशीर्वाद तो दें ही, सही माने में वे हमसे आकांक्षायें भी रखें कि हम घर और बाहर, वृद्धावस्था की ओर बढ़ते जा रहे अपने माता-पिता के सुदृढ़ अवलम्ब बनकर अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकें !

काश, वह आने वाला 'कल' सचमुच कल ही आ जाये !

[पृष्ठ ७ का शेषांश]

अनुसार ही कोई खेल खेलना पसन्द करता है। (vi) बाल्यावस्था के खेल औपचारिक तथा नियमबद्ध नहीं होते। (vii) बालक एक ही प्रकार के खेलों को बार-बार दोहराते हैं। (viii) खेल के माध्यम से बालक अपनी समस्याएँ सुलझाते हैं। (ix) बालक सर्वदा नये खेल तथा नये खिलौने पसन्द करते हैं।

खेल के कुछ मुख्य प्रकार

खेल कई भाँति के होते हैं। इनका वर्गीकरण भी कई प्रकार से किया जा सकता है। कुछ प्रकार के खेल जो प्रायः बालकों में खेले देखे जाते हैं, क्रमशः इस प्रकार हैं :—

(i) बौद्धिक खेल—पहेली बूझना, शतरंज खेलना, या अन्त्याक्षरी खेलना। (ii) स्वतन्त्र स्वैच्छिक खेल—प्रारम्भिक शैशवावस्था में पाये जाने वाले ये खेल अकेले में ही बालकों को अपने प्रदर्शन का अवसर देते हैं। (iii) मातृ खेल—माता के साथ बालक खेल खेलता है। (iv) संवेगात्मक खेल—नाटक, कठपुतली या खिलौने, गुड़िया आदि द्वारा खेले गए खेल। (v) अनुकरणात्मक खेल :—अन्य व्यक्तियों को देख कर खेले गये खेल। (vi) प्रत्यय विकास के खेल—गिनती, समय दूरी आदि के खेल, जिनसे बालक नवीन प्रत्ययों (concepts) को सीखता है। (vii) संग्रह खेल—इनके द्वारा बालक विभिन्न सामग्रियों को एकत्रित करता है; जैसे—गुट्टियाँ, ईंट, कागज, कपड़े आदि। (viii) मनोरंजन के लिए खेल—बालकों के बहुत-से खेल दूसरों के लिए अर्थहीन होते हैं, परन्तु बालकोंके लिए उनका कोई विशेष अर्थ होता है। (ix) दिवास्वप्न खेल—जब बालकों की कोई विशेष इच्छायें पूरी नहीं होतीं तो वे काल्पनिक खेल खेलते हैं; जैसे—अपने आप राजा बनना, पिता बन जाना, टीचर का रोल करना आदि। (x) रचनात्मक खेल—जिन रचनात्मक खेलों का सहारा नर्सरी पाठशालाओं में लिया जाता है, वे इस प्रकार हैं :—

(१) वस्तुओं का निर्माण। (२) रेखाचित्र। (३) चित्रांकनी (Crayoning)। (४) संगीत। (५) पढ़ना—विभिन्न चित्र माध्यम द्वारा। (६) खेलकूद। (७) दूर-दर्शन का प्रयोग।

जिस प्रकार नर्सरी पाठशालाओं में विभिन्न खेलों के माध्यम से बालकों को शिक्षित करने का प्रयत्न किया जाता है, उसी प्रकार के खेल के खुले अवसर बालकों को परिवार में दिये जा सकते हैं। उनके प्रत्येक खेल को व्यर्थ न समझ कर, उनके विकास और प्रदर्शन का एक आवश्यक साधन समझना चाहिए। खेल के द्वारा बालक को सीखने और विकसित होने के अनेक अवसर मिलते हैं। वह धीरे-धीरे खेलों के द्वारा पूरा मनुष्य बनने लगता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैतिक शिक्षा विशेषांक●●●●

विनोद पुस्तक मन्दिर (आगरा) की पत्रिका 'साहित्य-परिचय' के विशेषांकों की परम्परा का यह 17वां पुष्प है। यों तो इस पत्रिका के सभी विशेषांक एक से एक बढ़कर उपयोगी और संग्रहणीय रहे हैं, पर 'नैतिक शिक्षा' विशेषांक उस परम्परा में मील के पत्थर के समान है। इसमें जीवन में नैतिकता के महत्त्व को समझाते हुए उसकी शिक्षा में आवश्यकता का प्रतिपादन करने वाले ६३ लेख हैं।

आज सभी क्षेत्रों में हो रहे नैतिक पतन की चिन्ता का वातावरण है। जीवन-मूल्यों की गिरावट को देखते हुए हर राष्ट्रप्रेमी व्यक्ति का इस दिशा में चिन्तित होना स्वाभाविक है। ऐसे समय में यह विशेषांक केवल शिक्षाविदों के लिए ही उपयोगी नहीं है, बल्कि सर्वसाधारण भी इससे लाभान्वित हो सकता है। प्रसन्नता की बात है कि इस विशेषांक को शिक्षा-जगत् के विद्वान् मनीषी डा० सरयू प्रसाद चौबे और डा० रामशकल पांडेय जैसे महारथियों का भी सहयोग प्राप्त है।

—गिरिजाशंकर त्रिवेदी

—नवनीत—हिन्दी डाइजेस्ट (मार्च, 83)

× × ×

साहित्य-परिचय मासिक पत्र गत अठारह वर्षों से आगरा से प्रकाशित हो रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य सत्साहित्य और शैक्षणिक साहित्य के प्रकाशन के साथ प्रकाशित होने वाले साहित्य की गतिविधियों से परिचित कराना है। प्रतिवर्ष साहित्य परिचय अपना एक विशेषांक भी प्रकाशित करता है, जो शिक्षण और साहित्य की दृष्टि से उपयोगी होता है, पठनीय भी होता है और उसकी बड़ी प्रतीक्षा होती है।

इस समय प्रदेश, देश और विश्व के नैतिक मूल्यों का विनिपात चिन्तकों के लिए सिरदर्द बन गया है। नैतिकता के अभाव के कारण हिंसा, भ्रष्टाचार, प्रपीड़न, उद्वेग, हड़ताल, साम्प्रदायिकता, विषमता, तनाव, द्वेष आदि के ध्वंसक कीटाणु काफी बढ़ गए हैं और बढ़ते ही जा रहे हैं। संयम और सद्भाव का ह्रास होता जा रहा है। इसके कारण न देश प्रगति कर रहा है, न समाज की गाड़ी आगे चल रही है, न व्यक्ति मानसिक शान्ति पा रहा है। इन महाव्याधियों को दूर करने के लिए नैतिक शिक्षा ही संजीवनी बूटी का काम दे सकती है, केवल शिक्षा या पिटी-पिटाई शिक्षा से कोई कल्याण नहीं हो सकता। क्योंकि शिक्षा अब स्वार्थ और संकुचितता के जाल में फँसकर अपना गौरव खोती जा रही है।

प्रस्तुत विशेषांक इसी मनोव्याधि की एक मूल्यवान महौषधि है। इसमें छोटे-बड़े कुल ६३ लेख संग्रहीत हैं। ये लेख बड़े-बड़े विद्वानों, मनीषियों और अनुभवी चिन्तकों द्वारा लिखे गए हैं। इसमें नैतिकता को प्रत्येक कोण से देखा-परखा गया है, परीक्षण किया गया है। नैतिकता का स्वरूप, राष्ट्रीय उत्थान का आधार नैतिकता, आज के सन्दर्भ में नैतिकता, धर्म और नैतिकता, नैतिक मूल्य, शिक्षा में नैतिकता, एकात्म मानववादी नीतिशास्त्र, शालाओं में नैतिक शिक्षा, अध्यापक और नैतिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा और अनुशासन, सत्यं ब्रूयात, राजकीय सेवाएँ और नैतिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा और देशभक्ति आदि शीर्षक स्वयं अपनी बातें बताने में समर्थ हैं। इनसे जीवन निर्माण और नूतन निर्माण में सहायता मिल सकती है और ये तमावृत मार्ग को ज्योतित बनाने में सहायक बन सकते हैं। इस विशेषांक की सामाजिक आवश्यकता और महत्ता भी है। अतः हम अपने सहयोगी के इस सत्प्रयास की सराहना करते हैं, अभिनन्दन देते हैं।

विशेषांक का मुखपृष्ठ, सुन्दर छपाई, कागज और सजावट प्रशंसनीय है। इसकी एक प्रति पुस्तकालयों, शिक्षणालयों और प्रशिक्षणालयों में होनी चाहिए। यह केवल पढ़ने की वस्तु ही नहीं है, इसे हम आचरण में उतार कर देश के नव निर्माण में सहायक बनें, यह आवश्यक है। ऐसे सत्साहित्य की जितनी प्रशंसा की जाय, उतनी कम है।

—'सुधाबिन्दु' (जनवरी-फरवरी 83), अहमदाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा एवं मनोविज्ञान

शिक्षा-दर्शन (संशोधित षष्ठ संस्करण १९८३) डा० रामशकल पाण्डेय, डिमाई, पृष्ठ ४०८, मूल्य १८.००
विज्ञान शिक्षण (संशोधित पन्द्रहवाँ संस्करण १९८३) डी० एस० रावत, डिमाई, पृष्ठ २०८, मूल्य ९.००
नागरिकशास्त्र शिक्षण—प्रश्नोत्तर में (संशोधित आठवाँ संस्करण) जी० डी० सतसंगी, डिमाई, पृष्ठ १२८, मूल्य ६.००
असामान्य मनोविज्ञान—प्रश्नोत्तर में (प्रथम संस्करण) उदयवीर सक्सेना, डिमाई, पृष्ठ १७६, मूल्य ९.००

विविध

कबीर ग्रन्थावली (संशोधित एवं परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण १९८३) डा० भगवतस्वरूप मिश्र, डिमाई, पृष्ठ ७१४, मूल्य ३५.००
कामायनी भाष्य (संशोधित एवं परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण १९८३) डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, डिमाई, पृष्ठ ७०६, मूल्य ३५.००
हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार (संशोधित द्वितीय संस्करण १९८३) डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, डिमाई, पृष्ठ ४३४, मूल्य २४.००
पालि साहित्य का इतिहास (संशो. अष्टम संस्करण) डा० राजकिशोरसिंह, क्राउन, पृष्ठ १७२, मूल्य ६.५०
गुरु दक्षिणा (उपन्यास) हिमांशु पी० दलाल, क्राउन पृष्ठ २९८, मूल्य ४०.००
कोरे कागज (उपन्यास) अमृता प्रीतम, क्राउन, पृष्ठ ११५, मूल्य १५.००
अमृता प्रीतम के चुने हुए उपन्यास, अमृता प्रीतम, डिमाई, पृष्ठ ७३६, मूल्य ९०.००
पट्ट महादेवी "शान्तला" (उपन्यास) सी० के० नागराजराव, डिमाई, पृष्ठ ४००, मूल्य ४८.००
मोरों सरकार (उपन्यास) हरनामदास सहराई, क्राउन, पृष्ठ १००, मूल्य १६.००
गर्म पहलुओं वाला मकान (उपन्यास) मधुकर गंगाधर, क्राउन, पृष्ठ ८२, मूल्य १२.५०
अफसर गये विदेश (कहानी) सुरेशकान्त, क्राउन, पृष्ठ, ११२, मूल्य १६.००
बेशर्ममेव जयते (कहानी) प्रेम जनमेजय, क्राउन, पृष्ठ १११, मूल्य १६.००
लाक्षागृह (कहानी) चिन्ता मुदगल, क्राउन, पृष्ठ, १०१, मूल्य १५.००
बन्द कमरे का सफर (कहानी) राबिन शा पुष्प, क्राउन, पृष्ठ ९७, मूल्य १८.००
अमृता प्रीतम की चुनी हुई कहानियाँ व निबन्ध, अमृता प्रीतम, डिमाई, पृष्ठ ३६०, मूल्य ५०.००
कोमल गाँधार (नाटक) शंकर शेष, क्राउन, पृष्ठ १०७, मूल्य २०.००
फन्दी (नाटक) शंकर शेष, क्राउन, पृष्ठ ९४ मूल्य १५.००
खजुराहो का शिल्पी (नाटक) शंकर शेष, क्राउन, पृष्ठ ११०, मूल्य १५.००
टक्कर मुझसे है (नाटक) बसन्त कानेटकर, पृष्ठ १९४, मूल्य २२.५०
चेहरे चेहरे किसके चेहरे (नाटक) गिरिराज किशोर, क्राउन, पृष्ठ ८०, मूल्य १४.००
पाखंड का आध्यात्म (निबन्ध) हरिशंकर परसाई, क्राउन, पृष्ठ १२८, मूल्य २०.००
यादों की पगडंडियाँ (जीवनी) शंकरदयाल सिंह, पृष्ठ ८८, मूल्य १५.००
कामायनी की आलोचना प्रक्रिया (आलोचना) गिरिजाराम, डिमाई, पृष्ठ, २४१, मूल्य ३२.५०
प्रेमचन्द उर्दू हिन्दी कथाकार (आलोचना) जाफर रजा, डिमाई, पृष्ठ ३२४, मूल्य ५०.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के सुविख्यात आचार्य और समालोचक

डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना द्वारा लिखित

अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिए सर्वथा उपयोगी ग्रन्थ

कामायनी-भाष्य (संशोधित एवं परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण १९८३)

'कामायनी' महाकाव्य आधुनिक युग की अद्‌भुत कृति है। 'कामायनी' के जिज्ञासु पाठकों की अनेकानेक कठिनाइयों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत पुस्तक कामायनी-भाष्य की रचना की गई है। प्रस्तुत ग्रन्थ में 'कामायनी' के प्रत्येक सर्ग की स्पष्ट जानकारी के लिए उसकी पूर्ण कथा दी गई है और अन्त में उसकी विशेषताओं का उद्‌घाटन करने के लिए प्रत्येक सर्ग की संक्षिप्त आलोचना अंकित की गई है। तदुपरान्त 'कामायनी' के प्रत्येक क्लिष्ट शब्द को समझाने के लिए अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना के आधार पर उसके उपयुक्त अर्थ दिये गये हैं। तदनन्तर 'कामायनी' के प्रत्येक पद को साधारण से साधारण पाठक को हृदयंगम कराने के लिए उसकी सरल एवं सुस्पष्ट व्याख्या की गई है। अन्त में प्रत्येक व्याख्या से सम्बन्धित आवश्यक टिप्पणियाँ भी दी गई हैं, जिनमें कवि के काव्यगत मर्म को समझाने के लिए काव्य में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का स्पष्टीकरण किया गया है, विभिन्न धर्म, दर्शन या साहित्य सम्बन्धी ग्रन्थों से उद्धरण दिए गए हैं और कवि की काव्यगत मान्यताओं एवं धारणाओं को समझाया गया है। इतना ही नहीं, काव्य-शास्त्र सम्बन्धी विभिन्न विशेषताओं से ओत प्रोत करके व्याख्याओं को अधिक सुबोध बनाने की भी चेष्टा की गई है और रस, छन्द, अलंकार का निरूपण करके कवि की रचना-चातुरी को भी स्पष्ट किया गया है। जहाँ-तहाँ भाषा सम्बन्धी विशेषताओं, गुण-दोषों आदि का विवेचन करके कविता के मूल माध्यम-भाषा—का भी स्पष्टीकरण किया गया है। साथ ही 'कामायनी' की पंक्तियों में आई हुई लाक्षणिकता, उपचारवक्रता, प्रतीकात्मकता, अनूठी भावाभिव्यंजकता आदि को भी स्थान-स्थान पर स्पष्ट किया गया है।

आकार : डिमाई **पृष्ठ-संख्या : ७०६** **मूल्य : ३५.००**

हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि (संशोधित एवं परिवर्द्धित सप्तम संस्करण १९८३)

प्रस्तुत आलोचनात्मक ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने चन्दवरदाई, विद्यापति, कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, केशव, बिहारी, भूषण, देव और घनानन्द जैसे विख्यात प्राचीन कवियों की महती काव्य-प्रतिभा, महत् उद्देश्य, महत् प्रेरणा और महत्त्वपूर्ण भाषा-शैली की अनुपम एवं अद्वितीय ढंग से आलोचनात्मक समीक्षा की है।

आकार : डिमाई **पृष्ठ-संख्या : ५१०** **मूल्य : १६.९०** **पुस्त० सं० ३०.००**

हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार (संशोधित एवं परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण १९८३)

इस आलोचनात्मक ग्रन्थ में मर्मज्ञ लेखक ने हिन्दी के सुविख्यात निबन्ध-लेखक—पं० बालकृष्ण भट्ट, पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, सरदार पूर्णसिंह, पं० रामचन्द्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, पं० नन्ददुलारे बाजपेयी, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, डा० नगेन्द्र, डा० विद्यानिवास मिश्र और कुबेरनाथ राय के निबन्धों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण करते हुए उनके निबन्धों की तात्विक समीक्षा सर्वथा नूतन एवं मौलिक पद्धति पर की है।

आकार : डिमाई **पृष्ठ-संख्या : ४३४** **मूल्य : १८.००**

हिन्दी के प्रतिनिधि एकांकीकार (प्रथम संस्करण)

प्रस्तुत आलोचनात्मक ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने हिन्दी के विख्यात एकांकी लेखक—डा० रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर प्रसाद, उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्ददास, लक्ष्मीनारायण मिश्र, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', जगदीशचन्द्र माथुर, विष्णु प्रभाकर, विनोद रस्तोगी, और धर्मवीर भारती के सुप्रसिद्ध एकांकियों की सर्वथा मौलिक अन्तर्दृष्टि और अभूतपूर्व गहराई के साथ समीक्षा की है।

आकार : डिमाई **पृष्ठ-संख्या : ४६०** **मूल्य : ३०.००**

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

OUR ENGLISH PUBLICATIONS

EDUCATION & PSYCHOLOGY

No.	Title / Author		Price
1.	**Educational Psychology** (*Ninth Edition*)		25·50
	Dr. S. S. Mathur	*Lib. edn.*	40·00
2.	**A Sociological Approach to Indian Education** (*Sixth Edition*)		28·00
	Dr. S. S. Mathur		
3.	**Philosophical and Sociological Foundations of Education** (*First Edition*)		20·00
	Dr. S. P. Chaube, Akhilesh Chaube	*Lib. edn.*	30·00
4.	**Principles of Education**		20·00
	Dr. R. S. Pandey	*Lib. edn.*	30.00
5.	**An Introducation to Major Philosophies**		14.00
	of Education (*First Edition, 1982*)	*Lib. edn.*	20·00
	Dr. R. S Pandey		
6.	**Educational Administration**		22·00
	S. P. Sukhia	*Lib. edn.*	30·00
7.	**Measurement and Evaluation in Psychology and Education** (*First Edition, 1983*)		25 00
	Dr. Bipin Asthana, Dr. R. N. Agrawal	*Lib. edn.*	35·00
8.	**School Health Education and Public Health**		20·00
	Dr. S. P. Chaube	*Lib. edn.*	30·00
9.	**Essentials of English Teaching** (*Sixth Edition, 1981*)		20·00
	R. K. Jain		
10	**Teaching English in India** (*First Edition, 1983*)		12.00
	Dr. (Miss) Abha Rani Bisht		
11.	**Let Us Learn English**		14·00
	M. S. Sachdeva		

IN Q. A. SERIES

No.	Title / Author	Price
1.	**B. Ed. Guide** (*Second Edition, 1981/82*)	51·00
	N. R. Sharma	
2.	**Principles of Education** (*Second Edition*)	
	P. D. Patak and G. S. D. Tyagi	12·00
3.	**Basic Education** (*First Edition*)	
	Pathak & Tyagi	5·00
4.	**Principles and Practice of Education** (*Revised Second Edition*)	11·00
	Indra Sharma	
5.	**Educational Psychology** (*Third Edition*)	15·00
6.	**History and Problems of Indian Education** (*Revised Second Edition*)	13·50
	Indra Sharma	
7.	**School Administration and Health Education** (*Enlarged Second Edition*)	15·00
	Indra Sharma	
8.	**Teaching of English in India**	6·50
	P. D. Pathak	
9.	**Educational and Vocational Guidance** (*First Edition*)	15·00
	N. R. Sharma	

VINOD PUSTAK MANDIR

DR RANGEYA RAGHAV MARG, AGRA-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना टिकट प्रेषण करने का प्रमाण-पत्र संख्या —AG-009

[पूर्णतः संशोधित एवं परिमार्जित तेरहवाँ संस्करण १९८३]

बी० एड० दिग्दर्शन (गाइड)

सम्पादक
भाई योगेन्द्रजीत
दिनेशचन्द्र भारद्वाज
विनोदकुमार अग्रवाल

विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० एड० परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रमानुसार प्रश्नोत्तर शैली में लिखित प्रशिक्षण विद्यालयों में तहलका मचाने वाली विद्यार्थियों की लोकप्रिय पुस्तक

★

अद्यतन तेरहवें संस्करण में मेरठ, गोरखपुर, फैजाबाद एवं विशेष रूप से म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के नये पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न प्रकरण जोड़कर पुस्तक को अधुनातन रूप दिया गया है।

अनुक्रमणिका

- शिक्षा सिद्धान्त तथा भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक विचारधारा
- शिक्षा मनोविज्ञान
- भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएँ
- पाश्चात्य शैक्षिक विचारधारा
- विद्यालय प्रशासन, संगठन और स्वास्थ्य-विज्ञान
- शिक्षण-कला एवं विभिन्न विषयों का शिक्षण

प्रमुख विशेषताएँ

- प्रस्तुत संस्करण में 'शिक्षा-सिद्धान्त' के प्रथम प्रश्नपत्र में शिक्षा और समाज, शिक्षा और राजनीति, शिक्षा और अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान, नैतिक शिक्षा, शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियाँ—मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक एवं समाहारक तथा स्वतन्त्रता और अनुशासन आदि नवीन अध्यायों का समावेश किया गया है।
- द्वितीय प्रश्नपत्र में मनोविज्ञान व्यवहार के रूप में, अध्ययन आदतों का विकास, निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण, समाजमितिक एवं क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रायोजना आदि विशेष प्रकरणों का समावेश।
- अन्य प्रश्नपत्रों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, आजीवन शिक्षा, औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा विद्यालय तथा समुदाय, जनसंख्या-शिक्षण, शैक्षिक तकनीकी आदि कतिपय विशिष्ट अध्यायों का उल्लेख विशेष रूप से उ० प्र० एवं म० प्र० की शिक्षा के सन्दर्भ में किया गया है।
- इसमें प्रश्नों का विस्तार एवं आकार विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार दिया गया है। जटिल एवं सूक्ष्म विषयों का प्रतिपादन, सरल, स्पष्ट और वैज्ञानिक ढंग से सरल भाषा में किया गया है।
- **प्रस्तुत संस्करण का मुख्य आकर्षण :** शिक्षणकला नामक खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न विषयों—हिन्दी, इतिहास अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, गणित तथा गृहविज्ञान की शिक्षण-पद्धतियों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण सामग्री को सरल एवं सुबोध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सूचना—म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का अनुपूरक ३·०० रु० मे उपलब्ध है।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण सभी दृष्टियों से उत्तम एवं उपलब्ध गाइडों में सर्वश्रेष्ठ व सस्ता है।

आकार : डिमाई | पृष्ठ संख्या : १४५० | मूल्य : ४५·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
संख्या 12
दिनांक 2-8-83

[महाभारत के उपेक्षित पात्र कर्ण के चरित्र पर आधारित एक ऐतिहासिक नाटक]

सारथिपुत्र

डॉ० राजेन्द्र मोहन भटनागर

✡

● महाभारत विशाल है—अनन्त है। उसमें अनेक उदात्त चरित्र हैं। आज के युग में उनमें सर्वाधिक प्रभावित करने वाला चरित्र अंगराज अर्थात् कर्ण का लगा है। अंगराज को अपने माता-पिता का अवबोध नहीं है, वह राधा द्वारा पालित है। सारथि के गृह में उसे आश्रय मिला है, उसकी जाति क्या है? उसका धर्म क्या है? वह कौन है? मेचक अंधकार सा अभिशप्त जीवन लिये वह जीना नहीं चाहता है। उसकी चेतना, धर्म, जाति, वर्ग, स्तर आदि सब भेदापभेदों को नकारती है तथा जीने की वर्ण-व्यवस्था के चक्र-व्यूह को उलट देना चाहती है उसमें जिजीविषा के लिये सशक्त आन्दोलन उद्वेलित हो उठता है और वह सक्षमता, योग्यता, कर्मठता, संकल्प शक्ति आदि को जीवन-मूल्यों के रूप में स्वीकार जाने के पक्ष में अपने युग के उद्भट योद्धाओं को ललकारता है। कर्ण को अपने समाज से मिली है—विसंगतियाँ, विरोध, उपेक्षाएँ, टूटन, बिखराव, अनस्तित्व, अपमान, नकार, कुण्ठा और वर्जनाएँ। क्या यही प्रारब्ध आज का नहीं है?

● प्रस्तुत पुस्तक में उपरोक्त तथ्यों के आधार पर एवं कर्ण के अस्तित्व के लिये संघर्ष, तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश और स्थापित जीवन मूल्यों के प्रति विद्रोह की झाँकी दिग्दर्शित करके इस समस्त प्रक्रिया की अन्तरचना को चिन्तन का विषय बनाकर युग धारा के समवेत स्वरों को पुनः संविश्लेषित करने का आग्रह—लेखक ने अपने प्रबुद्ध एवं मनीषी पाठकों से किया है।

आकार : क्राउन प्रथम संस्करण मूल्य : ८.००
पुस्तकालय संस्करण १५.००

चित्रकूट

त्रिवेदी रामानन्द शास्त्री

✡

✡ चित्रकूट का पवित्र प्रसंग विश्वविख्यात हैं। वनवास के दिनों में भगवान राम ने सीता-लक्ष्मण के साथ यहाँ विचरण किया था। अयोध्या और जनकपुर के नागरिकों ने चित्रकूट के वन-तरुओं की छाया में विश्राम किया था। राम—भरत की यही भेंट हुई थी। कौशल्या-सुमित्रा-केकैयी का करुणा-क्रन्दन यहाँ अब भी सुनाई पड़ता है। वशिष्ठ और विदेह की वाणी अब भी गिरि गुफाओं में गूँज रही है, जानकी के अंगराग की सुगन्ध से ये पावन वन भी सुगन्धित है। इन्हीं मूल तत्वों के आधार पर इस खण्ड काव्य की रचना की गई है।

✡ प्रस्तुत रचना में करुण रस का प्राधान्य है। इसे पढ़ते समय भवभूति कृत उत्तर रामचरित नाटक का स्मरण हो आता है। चित्रकूट के पाठक के लिये करुण रस से आप्लावित हो जाना स्वाभाविक है। यह प्रतिपाद्य विषम-शैली एवं भाषा की दृष्टि से एक सफल रचना है।

संशोधित पंचम संस्करण मूल्य ६.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार—

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी प्रशिक्षण साहित्य

☆ ☆ ☆

भारतीय शिक्षा
(Indian Education)

भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक
सं० डा० आत्मानन्द मिश्र १५.००

शिक्षा में नव चिन्तन
सं० डा० रामपालसिंह २०.००

आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा
डा० सरयूप्रसाद चौबे १४.००

आधुनिक भारतीय शिक्षा [इतिहास और समस्याएँ]
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १६.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी, पी० डी० पाठक १५.६५
पुस्तकालय संस्करण २२.५०

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
पी० डी० पाठक २४.००
पुस्तकालय संस्करण ३५.००

भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ
रामखेलावन चौधरी, राधावल्लभ उपाध्याय १५.००

भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
डा० सरयू प्रसाद चौबे १४.००

हमारी शिक्षा समस्याएँ
डा० सरयू प्रसाद चौबे १८.००

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री
डा० रामशकल पांडेय १२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियाँ
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १७.००
पुस्तकालय संस्करण २२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग : कोठारी कमीशन
पी० डी० पाठक एवं त्यागी ६.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर २८.००
पुस्तकालय संस्करण ४०.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
पी० डी० पाठक १८.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा १८.००
राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology
Dr. S. S. Mathur 40.00

शिक्षा-सिद्धान्त और शिक्षणकला
(Principles and Methods of Education)

शिक्षा के सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी १५.००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी २४.००
पुस्तकालय संस्करण ३२.००

शिक्षा-सिद्धान्त
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा के मूल सिद्धान्त
डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
पुस्तकालय संस्करण २८.००

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
डा० सरयूप्रसाद चौबे २०.००
पुस्तकालय संस्करण २४.००

Philosophical and Sociological Foundations of Education
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. edn. 30.00

An Introduction to Major Philosophies of Education
Dr. R. S. Pandey 14·00
Lib. Edn. 20·00

Principles of Education 20.00
Dr. R. S Pandey Lib. Edn. 30.00

A Sociological Approach to India Education
Dr. S. S. Mathur 28.00

[शेष आवरण के तृतीय पृष्ठ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 18 : अंक 5—7]
मई-जुलाई, 1983

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
18·00

[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा—2
फोन : 76486

हिन्दी भ्रमों के घेरे में

1947 से पूर्व ही पर्याप्त सोच-विचार तथा विचार-विमर्श के पश्चात् राष्ट्र के बड़े-बड़े नेता इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् भी राष्ट्रभाषा/सम्पर्क भाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी को ही मान्यता दिया जाना देश/राष्ट्र के हित में है। एक समय के हिन्दी के कट्टर समर्थक देश की बदलती हुई राजनीति तथा परिस्थितियों में अपनी व्यक्तिगत सिद्धान्तवादिता, स्वार्थपरता के कारण हिन्दी के विरोधी बन गए/बने हुए हैं। इनमें मुख्यतः बंगाल, तमिलनाडु के कुछ नेताओं का नाम लिया जा सकता है। हिन्दी को सम्पर्क भाषा/राष्ट्रभाषा, राजभाषा का स्थान मिलने के पीछे कई कारण रहे हैं—1. हिन्दी उसी मध्य देश की भाषा है जिसकी भाषाएँ प्राचीनकाल से ही भारत की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एकता का माध्यम रही थीं। 2. हिन्दी भाषा की सरल, सुबोध तथा लचकीली प्रकृति के कारण हिन्दी-इतर भाषा-भाषी को सम्पर्क भाषा के बाजारू रूप की हिन्दी सीखने में कोई कठिनाई प्रतीत नहीं होती। 3. देश/राष्ट्र की आधी से अधिक जनसंख्या इसका मातृभाषा/भाषा$_1$ के रूप में प्रयोग-व्यवहार करती है। 4. हिन्दी की साहित्यिक/वाङ्मय परम्परा अन्य राष्ट्रीय भाषाओं के समान ही पर्याप्त विकसित रही है। 5. हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में पंजाबी/उर्दू भाषी, पारसी, उत्तर भारत के ईसाई, गुजरात-महाराष्ट्र-बंगाल की अधिकांश जनसंख्या, असम के चाय-बाग़ान के मजदूर, मद्रास नगर के कुली-ताँगे-रिक्शे वाले, छोटे-बड़े दुकानदार आदि अनेक दशाब्दियों से प्रयोग में लाते रहे हैं। 6. प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन (1857 ई०) के प्रतीक रोटी, कमल थे। रानी लक्ष्मीवाई, बहादुरशाह, नाना साहब, तात्या टोपे ने जन-जागरण तथा राष्ट्रीय भावना का पोषण हिन्दी के माध्यम से ही किया था। 7. 1909-1910 ई० में भारत के बाहर रहते हुए भारतीय क्रान्तिकारियों ने आजादी की आवाज़ हिन्दी के अखबार निकाल कर ही बुलन्द की थी। आज़ाद हिन्द फ़ौज की लगभग सभी कार्रवाहियाँ हिन्दी में ही चलती थीं। 8. विभिन्न प्रान्तों में आने-जाने वाले व्यापारी, तीर्थयात्री, साधु-संन्यासी अपने व्यापारिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा दैनिक क्रियाकलापों के लिए हिन्दी का ही प्रयोग करते रहे हैं। 9. भारत के विभिन्न प्रदेशों/क्षेत्रों में समय-समय पर बिना किसी राजाज्ञा के हिन्दी का प्रयोग-व्यवहार किया जाता रहा था; यथा—

कश्मीर के महाकवि परमानन्द (1791-1879 ई०) कृत 'राधा स्वयंवर' में हिन्दी की 14 कविताएँ उपलब्ध हैं। महाराणा रणवीसिंह ने 19वीं शती के उत्तरकाल में हिन्दी तथा डोगरी भाषा में देवनागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के माध्यम से सारा राजकाज चलाया था। **पंजाब** के गुरु नानक, गुरु गोविन्दसिंह, भाई सन्तोषसिंह, लाला लाजपत राय अनेक गण्यमान व्यक्ति हिन्दी के अच्छे कवि ज्ञाता रहे हैं। **सिन्ध** प्रान्त में 18वीं शती में 'मनचित परबोध' हिन्दी (खड़ीबोली-ब्रजभाषा) में लिखा गया था। **गुजरात** के दादूदयाल (16वीं शती), लल्लूराम, स्वामी दयानन्द सरस्वती (19वीं शती), नरसी मेहता, दयाराम (18वीं शती), दलपतराय, महात्मा गाँधी आदि अनेक महान् आत्माओं ने हिन्दी की अच्छी सेवा की थी। **महाराष्ट्र** के आदि मुकुन्दराज (11वीं शती), संत ज्ञानेश्वर (13वीं शती), समर्थ स्वामी रामदास (16वीं शती) से लेकर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक आदि अनेक कवि, साधु-सन्त, राजनीतिज्ञ, समाज-सेवक, पत्रकारों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपूर्व योगदान किया है। शिवाजी, उनके पिता शाहजी के दरबार के अनेक कवि हिन्दी के अच्छे जानकार थे। **कर्नाटक** में हैदरअली, टीपू सुल्तान के जमाने से पूर्व ही हिन्दी का गद्य-पद्य साहित्य मिलने लगा था। **केरल** के तिरुविन्ताकुर के राजा लोग (विशेषत: राजा गर्भ श्रीमान् स्वाति तिरुनाल श्रीराम वर्मा—19वीं शती) स्वयं तो हिन्दी-प्रेमी थे ही, अपने दरबार में हिन्दी-विद्वानों का समुचित स्वागत-सत्कार करते थे। **तमिलनाडु** में प्रचलित 'हरिकथा' के बीच-बीच में कबीर-तुलसी-मीरा आदि की कथाएँ/बातें हिन्दी कविता में गाई जाती रही हैं। **आन्ध्रप्रदेश** के ख्वाजा बन्देनवाज़ को दक्खिनी हिन्दी का प्रथम कवि माना गया है। महाराज शाहजी (1684-1712 ई०) ने हिन्दी में यगान नाटक की रचना की थी। आन्ध्रप्रदेश में 15वीं शती से ही हिन्दी का थोड़ा-बहुत प्रयोग-व्यवहार होता है। **उड़ीसा** के ब्रजनाथ बड़जेना की पुस्तक 'समर तरंग' (1780 ई०) का चौथा अध्याय हिन्दी में लिखा हुआ है। **बंगाल** के अनेक वैष्णव तथा कुछ मुसलमान कवियों ने 16वीं शती से ही अवधी, मैथिली, ब्रजभाषा तथा 'ब्रजबुलि' में काव्य-रचना करना आरम्भ कर दिया था। आधुनिक भारत की जन-जागृति के अग्रदूत राजा राममोहन राय के सर्वप्रथम यह कहने पर कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित हो सकती है, बंगाल में हिन्दी और देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार की बाढ़-सी आ गई थी। हिन्दी का पहला प्रेस कलकत्ता में स्थापित हुआ और 1826 ई० में निकला 'बंगदूत' नागरी, रोमन, बंगला और उर्दू लिपि में छपता था। **मणिपुर** के वैष्णव राजाओं ने अपने धार्मिक तथा राजकाज में हिन्दी को भी स्थान दिया था। **असम** के अहोम राज-काल में हिन्दी का थोड़ा-बहुत प्रचार होता रहा।

10. 1947 ई० से पूर्व ही हिन्दी सिनेमा के द्वारा हिन्दी-इतर क्षेत्रों के जन-सामान्य में हिन्दी का प्रचार, व्यवहार आरम्भ हो चुका था। 11. 19वीं सदी तक हिन्दी का प्रचार-प्रसार धर्म, संगीत, समाज-सेवा, व्यापार, राज्यकार्य आदि के लिए साधु-संत, तीर्थयात्री-पंडित, मुसाफ़िर, मौलवी, सरदार-सिपाही, मजदूर-कारीगर, व्यापारी-एजेण्ट आदि के द्वारा सहज रूप से होता रहा। 20वीं सदी के आरम्भ से राष्ट्र की कल्पना/चेतना के साथ-साथ राष्ट्रभाषा तथा उसके प्रचार-प्रसार पर राष्ट्र के नेताओं ने बल देना आरम्भ कर दिया था। अंग्रेजी के प्रकांड विद्वान् लाला लाजपत राय ने जिस दिन कांग्रेस-मंच से अपना भाषण हिन्दी में दिया था, उस दिन से लोगों में हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में विकास करने की भावना घर करने लगी थी। लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' में हिन्दी को भी स्थान देना आरम्भ कर दिया था। विभिन्न प्रदेशों में राष्ट्रभाषा-प्रचार समितियों/संस्थाओं का निर्माण होने लगा था।

इस बीच राजनैतिक तथा गर्हित स्वार्थगत कारणों से मुस्लिम लीग ने उर्दू भाषा तथा लिपि का प्रश्न खड़ा कर कुछ समय तक हिन्दी तथा देवनागरी का विरोध किया जो पाकिस्तान की स्थापना के साथ-साथ स्वयं समाप्त हो गया। 20वीं शती के आठवें दशक में कुछ रूढ़िवादी राजनीतिज्ञों ने क्षुद्र स्वार्थों के कारण हिन्दी-उर्दू का प्रश्न समय-समय पर उठाना प्रारम्भ कर दिया है। 1964 ई० से राष्ट्रीयता विरोधी कुछ लोगों ने हिन्दी-विरोध की सनक में हिन्दी थोपने/लादने (imposing) का हौवा खड़ा कर जनसामान्य की भावनाओं को उत्तेजित करके अपना उल्लू सीधा करके राजनैतिक लाभ उठाने की दुश्चेष्टाएँ करना आरम्भ कर दिया है। कहीं-कहीं तो हिन्दी के बारे में यह भ्रम फैलाने की भी चेष्टा की गई है। (विशेषत: मिशनरियों द्वारा धर्म परिवर्तित जनजातियों के मध्य यह भ्रम फैला हुआ है) कि हिन्दी केवल हिन्दुओं की भाषा है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी सीखने से वे लोग फिर से हिन्दू बन जाएँगे या बना लिए जाएँगे। हिन्दी-प्रचारकों का यह परम कर्त्तव्य है कि वे इस प्रकार के निर्मूल भ्रमों को उखाड़ फेंके क्योंकि हिन्दी-भाषी क्षेत्रों के समस्त ईसाई, पारसी अपने दैनन्दिन जीवन में हिन्दी का प्रयोग-व्यवहार करते हुए भी ईसाई, पारसी ही हैं। यदि हिन्दी पढ़ने, सीखने, बोलने से कोई ईसाई हिन्दू हो जाता तो ईसाइयों का धर्म ग्रन्थ हिन्दी, देवनागरी में मुद्रित कर प्रसारित न किया जाता। प्रयोग तथा रूप की दृष्टि से भी हिन्दी, हिन्दवी, हिन्दुस्तानी शब्द फ़ारसी भाषा के हैं (यथा—संस्कृत सिन्धु > हिन्द, सिन्धी > हिन्दी)। शाब्दिक दृष्टि से फ़ारसी में हिन्दी का अर्थ भी 'हिन्द का/की/के' है। मुसलमान भक्त कवियों की हिन्दी-सेवा तथा हिन्द-प्रेम से प्रभावित होकर भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने कहा था—इन मुसलमान हरि जनन पर कोटिन हिन्दुन वारिए। फोर्ट विलियम कालेज, कलकत्ता के प्रोफ़ेसर डॉ० गिलक्राइस्ट ने हिन्दी पुस्तकों का लेखन, प्रकाशन आरम्भ कराया था।

मूलतः धर्म तथा लिपि पार्थक्य के कारण हिन्दी लेखन, कविता की एक शैली-विशेष है जिसमें अरबी-फ़ारसी के तत्सम शब्दों का बाहुल्य होता है। 'उर्दू' को एक अलग भाषा घोषित करना कुछ अति स्वार्थी, चालबाज़ राज-नेताओं तथा धर्म-नेताओं की कूटनीति मात्र है क्योंकि भाषा की भिन्नता संज्ञा, विशेषण शब्दों के आधार पर नहीं वरन् सर्वनाम, क्रिया, कारक-चिह्न और रूप-प्रक्रिया की भिन्नता पर आधारित है। कुछ वर्षों से कुछ भारतीय अंग्रेज़ी अन्धभक्तों ने अंग्रेजी को अपनी मातृभाषा घोषित करने और उसे उर्दू की भाँति ही एक भारतीय भाषा मनवाने का दुश्चक्र आरम्भ कर दिया है। यदि कलकत्ता, आइज़ोल या पासीघाट के एक-दो परिवारों के लोग चीनी भाषा का अपने घरों में प्रयोग करने लगें तो चीनी को भारतीय मूल की भाषा नहीं कहा जा सकता है। उर्दू का आविर्भाव अकबर के ज़माने में भारत-भू पर ही एक शैली के रूप में हुआ था। अतः अंग्रेजी को किसी आधार पर भी भाषावैज्ञानिक दृष्टि से भारतीय भाषा नहीं कहा जा सकता और एक विदेशी भाषा को राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा के पद पर आसीन करने का आग्रह वे लोग ही कर सकते हैं, जिनमें राजनैतिक स्वतन्त्रता के मिल जाने पर भी वैचारिक दासता की भावना घर किए हुए है। स्वरूप तथा रचना-वैभिन्न्य के कारण इतने वर्षों में भी तीन-चार प्रतिशत लोग ही अंग्रेज़ी का प्रयोग-व्यवहार कर पाते हैं। अब, अंग्रेज़ी को प्रकाशन की भाषा बनाए जाने का अर्थ है—कुछ लोगों द्वारा अधिक लोगों का भाँति-भाँति से शोषण करते रहना, जो एक स्वतन्त्र राष्ट्र के मस्तक पर कलंक का टीका होगा।

यह कल्पना भी एक प्रकार से हास्यास्पद ही कही जाएगी कि हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रयोग करने पर अन्य भारतीय भाषाओं की प्रगति रुक जाएगी या हिन्दी मातृभाषा-भाषी ही अन्य प्रदेशों के व्यक्तियों की तुलना में सेवा/नौकरी के अधिक अवसर प्राप्त कर लेंगे। भाषा$_1$ की प्रगति किसी/किन्हीं दफ़्तरों या संस्थानों में कार्य करने वाले कुछ बाबुओं/क्लर्कों या ऐसे ही कुछ अन्य कर्मचारियों के द्वारा भाषा$_2$ में राजकार्य करने से न कम हो सकती है और न बढ़ सकती है। प्रदेशों में प्रादेशिक भाषाएँ राजभाषा होने से राजकाज में भाषा के उपयोग-व्यवहार से होने वाली प्रगति विकास स्वतः होती ही रहेगी और अखिल भारतीय सेवाओं में स्थान प्राप्त करने के इच्छुक हिन्दी-भाषियों को अन्य भाषा-भाषियों की भाँति ही एक तीसरी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य होने से भाषा-अधिगम का समान भार वहन करना होगा। जहाँ तक हिन्दी या भारतीय भाषाओं को राजकाज के लिए कुछ अति चतुर लोगों द्वारा अक्षम घोषित करने की प्रवृत्ति है, वह भी अमान्य ही ठहरती है क्योंकि जब भारत में अंग्रेजी नहीं थी तब प्रादेशिक, केन्द्रीय सरकारों के राजकाज किसी न किसी भारतीय भाषा में चलाए जाते रहे थे।

—डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा द्वारा लिखित
"भाषा 1,2 की शिक्षण-विधियाँ और पाठ-नियोजन"
से साभार उद्धृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के श्रेष्ठ प्रकाशन

मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त
डा० जे० डी० शर्मा २५.००

नैदानिक-मनोविज्ञान
डा० रामपाल सिंह वर्मा २५.००
प्रा. ले. : डा० एम. ए. शाह पु० सं० ३५.००

मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय
डा० आर० के० ओझा १०.००

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.५०

आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान २०.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३०.००

सामान्य मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर २०.००

सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा
भाई योगेन्द्रजीत १०.००

असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार २१.२५
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी पु० सं० ३२.००

असामान्य मनोविज्ञान (बी० ए० के लिए) २०.००
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी पु० सं० २८.००

Abnormal Psychology : A dynamic Approach Dr. Govind Tiwari (In Press)

समाज मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन
डा० एस० एस० माथुर १४.००

समाज मनोविज्ञान (For Advanced Study)
डा० एस० एस० माथुर २५.००

शिक्षा-मनोविज्ञान २८.००
डा० एस० एस० माथुर पु० सं० ४०.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
प्रो० पी० डी० पाठक १८.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा, १८.००
डा० राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology
Dr. S. S. Mathur 40.00

बाल मनोविज्ञान : बाल विकास
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव २२.५०

बाल मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १७.००

बाल विकास तथा पारिवारिक सम्बन्ध
डा० सरयूप्रसाद चौबे १५.००

सांख्यिकी के मूल तत्त्व
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा में सरल सांख्यिकी
डा० रामपालसिंह वर्मा ८.००

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार
डा० गोविन्द तिवारी १८.००

मनोविज्ञान शोध-विधियाँ
प्रो० एम० ए० हकीम, बिपिन अस्थाना १५.००

शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व
एस० पी० सुखिया
वी० पी० मेहरोत्रा, आर० एन० मेहरोत्रा (प्रेस में)

आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान २४.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३५.००

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
प्रो. एम. ए. हकीम, डा० बिपिन अस्थाना १४.००

औद्योगिक मनोविज्ञान २०.००
डा० आर० के० ओझा पु० सं० २५.००

विकासात्मक मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

व्यावहारिक मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह,
प्रो० सत्यदेवसिंह, डा० देवदत्त शर्मा २०.००

शैक्षिक मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० अग्रवाल, डा० बिपिन अस्थाना १८.००

Measurement & Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana, Dr. Agarwal 25.00
Lib. edn. 35.00

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपाल सिंह वर्मा ६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–२

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गन्दे बच्चे : अच्छे बच्चे—बनते कहाँ-कहाँ ?

डॉ० योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण'
रीडर एवं अध्यक्ष : हिन्दी विभाग, बी० एस० एम० कालेज, रुड़की

बचपन सचमुच ऐसी दौलतों का भण्डार है, जिन्हें आदमी एक बार जब खो देता है, तो जीवन-भर तरसता ही रहता है। बच्चा किसे अच्छा नहीं लगता ? मुस्कान की जो सहज निधि बच्चों के पास होती है, संसार की हर मुसीबत से सर्वथा मुक्त रहकर कल्पना की अपनी ही दुनियाँ में मस्त रहने की जो सुविधा बच्चों को होती है; वह हमें कहाँ ? अंग्रेज कवि विलियम वर्ड्सवर्थ ने "चाइल्ड इज् द फॉदर ऑफ मैन" कहकर सूत्रात्मक रूप में बचपन की पवित्रता, निर्भीकता, निर्द्वन्द्व स्थिति में रहने की क्षमता और स्वर्गिक मस्ती का निचोड़ दे दिया है।

प्रत्येक आदमी बच्चा अवश्य था; फिर भी, जाने क्यों बच्चों की समस्याओं के प्रति आदमी उदासीन ही रहता आया है ? अन्तरराष्ट्रीय बालवर्ष पूरे विश्व में मनाया गया है, लेकिन बच्चों के साथ लगे ये दो विशेषण "गन्दे बच्चे : अच्छे बच्चे" चले ही आ रहे हैं। 'गन्दे' को 'अच्छे' तक लाने का प्रयास हम करें, यह हमारा कर्त्तव्य है; लेकिन इससे भी बड़ा दायित्व हमारा और आपका यह भी है कि 'गन्दे' और 'अच्छे' विशेषण के कारखानों को देखें; मूल बीमारी को पकड़ें।

'गन्दा बच्चा'—मैला-कुचैला; नाखूनों में मैल भरे हुए; पंजों से लेकर घुटनों तक और हथेलियों से लेकर कुहनियों तक मैल की पर्तें चढ़ाए हुए; गर्दन पर ढेर-सा मैल, फिर भी उदासीन; बेतरतीब बाल और बहती नाक को सँभालने-पोंछने से बेखबर; बात-बात में गन्दी से गन्दी गाली देने की सहज आदत और ऐसा ही बहुत कुछ !

गाँव में पहुँचिए, 'गन्दा बच्चा' हर घर के आगे, हर गली में और बहुत-सी माँओं या पिताओं की गोद में चढ़ा मिल जाएगा, जिसे 'गन्दा' रखना शायद जरूरी है या मजबूरी है। यह बच्चा जब पैदा हुआ, तब तो 'बच्चा' ही था; 'गन्दा' विशेषण इसे दे रहे हैं इसके माँ-बाप और अशिक्षा के कारण व्याप्त कुसंस्कार।

जरा इस 'गन्दे बच्चे' के माँ-बाप से पूछिए कि क्या कभी वे इस बच्चे को नहलाते हैं ? क्या कभी मालिश की है इसके हाथ-पैरों की ? क्या कभी सोचा कि इसे कपड़े धोकर पहना दें ? जवाब मिलेगा—"अजी, फुरसत कहाँ मिलती है"—और बच्चा लगातार 'गन्दा' ही रहता है। उसे पेशाब करने के बाद उसी में खेलते रहने की पूरी छूट है; वह अगल-बगल दुर्गन्ध-युक्त मल लपेट कर बैठा रहे, क्या चिन्ता है ? अगर बीमार हो भी गया, तो देवी मैया का 'परसाद' बोल देंगे या फिर किसी झाड़-फूँक वाले को बुलाकर 'प्रेत' को भगवाने का अनुष्ठान कर देंगे। इस पर भी अगर बच्चा मर जाए, तो 'किस्मत में लिखा' था, जो सबने पढ़ रक्खा था, लेकिन बाद में बताया।

'गन्दा बच्चा'—किस्मत के नाम पर, देवी मैया या भूत-प्रेत के नाम पर, झाड़-फूँक के नाम पर 'बलि' होता रहा है, आज भी हो रहा है, कौन जिम्मेदार है ? किसे पकड़ें हम ?

गाँव का यह 'गन्दा बच्चा' अगर अपनी किस्मत से टक्कर लेकर बच भी गया, तो उसके विशेषण में 'चार चाँद' लगने शुरू होते हैं। पिता उसे 'लाड़' करने के नाम पर चिलम का दम लगवाना अपनी 'बहादुरी' मानता है। बीड़ी-सिगरेट पीना वह बचपन में ही सीख लेता है। 'करेला अब नीम चढ़ता है' और जब स्कूल भेजने का समय आता है, तो माँ का प्यार उमड़ता है—"कौन-सा कलट्टर बनेगा" और पिता उसे स्कूल के बजाय या तो 'घास खोदने' ले जाता है या खेत की ट्रेनिंग देकर अपना उत्तराधिकारी बनाने ले जाता है।

यह बच्चा देखता है कि पिता 'ठेके' पर जाकर कुछ पीता है और आते ही उसकी माँ को गालियाँ बकता है, लात-घूँसों की बौछार से तर करता है। बच्चे का विशेषण 'गन्दा' पकता जाता है। जब वह अपने पड़ौस से कुछ भी चुरा लाता है, माँ उसे शाबाशी देती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बच्चा 'भावी' के भयानक रास्ते पर चल पड़ता है।

'गन्दे बच्चे' बनाने का यह कारखाना है हमारे गाँव में और इसके मालिक हैं—बच्चे के माँ-बाप और कारण है—अशिक्षा का गहरा अँधकार।

आइए, अब 'गन्दे बच्चे'—शहरी स्टाइल के भी आपको दिखाता चलूँ! सिमटते गाँव और बढ़ते शहरों में 'गन्दे बच्चे' बेतहाशा बढ़ रहे हैं। सिनेमाओं के आस-पास, चाय की सस्ती दुकानों पर, कोठियों में काम करने वाली स्त्रियों, बड़ी-बड़ी इमारतों के पास बनी हुई बेतरतीब झोंपड़ियों के निवासियों के बच्चे तथा फुटपाथों पर डेरा जमाए हुए 'बेनाम' बच्चे ही शहर के गन्दे बच्चे हैं। इनका आयुवर्ग १ से ५ तथा फिर ६ से १२-१३ वर्ष के बीच रहता है।

शहर के ये 'गन्दे बच्चे', खासकर ६ से १३ वर्ष के आयुवर्ग में पलने-बढ़ने वाले बच्चे 'बैल बॉटम' पहनते हैं, जो फटी हुई होती है। गले में रूमाल रहना अनिवार्यता है और छोटा-मोटा चाकू पास रखकर "दादा" बनने की एकमात्र महत्त्वाकांक्षा संजोए ये नौनिहाल हर स्टण्ट फिल्म का 'पहला शो' अपनी कमीज फड़वा कर देखते हैं और भद्दी गालियाँ देना अपनी 'शान' समझते हैं।

इन्हें पढ़ाए कौन? माँ-बाप अगर हैं भी, तो दोनों ही विशाल अट्टालिकाओं को बनाने में जीवन बिता देते हैं, और जिन बदनसीबों को माँ-बाप का प्यार नहीं मिलता; उन्हें "दादागीरी ट्रेनिंग स्कूल" में स्वयं ही दाखिला मिल जाता है। इन अनूठे स्कूलों में ये शहरी बच्चे बहुत-से 'हुनर' सीख लेते हैं, जिनमें जेब काटना, जुआ खेलना और फिर अपहरण-बलात्कार तक की शिक्षा ये पा जाते हैं। जिस होटल में ये अमीरों के झूठे बर्तन धोते हैं, उसका मालिक इन्हें 'मुफ्त की गालियों' के साथ बची-खुची रोटियाँ देकर अहसान जताता है। जिस 'सस्ती चाय की दुकान' पर ये 'गन्दे बच्चे' काम करते हैं, वहाँ इन्हें निरन्तर "अबे ओ हमारी, गुण्डे, बदमाश की औलाद" जैसे नाम मिलते ही रहते हैं। क्या इतने पर भी भूत की तरह इनसे चिपटा हुआ यह 'गन्दा' विशेषण हट सकता है? क्या ये इन शब्दों की तह तक पहुँच कर विद्रोही नहीं बन जाएँगे?

शहर के इन 'गन्दे बच्चों' का निर्माण करने वाला है सभ्य समाज, जो अमीरी-गरीबी के नाम पर "सुविधाओं" का इतना विषम बँटवारा कर देता है कि सारी सुविधाओं का ९५% अमीर-बच्चों के हिस्से में आ जाता है और केवल ५% ही अभागे, अनाम और गन्दे कहे जाने वाले बच्चों के लिए बचता है। परिणाम हमारे सामने है, जिसे हम निरन्तर अदेखा करते जा रहे हैं। शहर में गन्दे बच्चे बेतहाशा बढ़े हैं, बढ़ रहे हैं—आखिर क्यों? इनके कारखाने कहाँ हैं? किसी संस्था या शासन ने कभी सोचा?

गाँव के और शहर के 'गन्दे बच्चों' में एक समानता यह है कि दोनों को ही 'शिक्षा का उजाला' नहीं मिलता। गाँव में माँ-बाप स्कूल नहीं भेजते और शहर में उसे पैदा होते ही 'पेट के कुएँ' को भरने की चिन्ता स्कूल नहीं जाने देती। परिणामस्वरूप 'गन्दा' विशेषण और पकता है तथा उसके आगे 'बहुत गन्दा'''बहुत ही गन्दा' जुड़ता चला जा रहा है।

शहर में ही बच्चों की एक और किस्म मिलेगी, जिन्हें हम ऊपर से 'अच्छा' कहते हैं, लेकिन होते हैं वे भी 'गन्दे' ही। इनके जन्म का दायित्व है ऊँचे लोगों पर और यहाँ भी 'लाड़-प्यार' ही मुख्य कारण है। ये बच्चे साफ-सुथरे होते हैं, 'पेशाब' नहीं करते, 'बाथरूम' करते हैं। पिताजी, माताजी, ताऊजी, चाचाजी आदि ये नहीं जानते—बस 'डैडी, ममी और अंकलजी' जानते हैं। ये अगर मेहमानदारी में पहुँच जाएँ, तो केला आधा खाएँगे; बाकी गिराएँगे; सेब में दाँत मारेंगे और फेंक देंगे; चाय मेज पर, कपड़ों पर गिराएँगे और इनकी 'मम्मियाँ' खुश होती रहेंगी बेटे-बेटियों की कार-गुजारियों पर। इन्हें नंगे रहने पर शर्म नहीं आती—'शेम-शेम' आती है।

इन 'गन्दे बच्चों' के कारखाने आपको 'पाँश-कालोनियों' में मिलेंगे और मालिक हैं—बड़े-बड़े व्यापारी, उद्योगपति तथा दफ्तरों-क्लबों की जिन्दगी में मस्त पढ़े लिखे माँ-बाप! इनको शौक है तो सिर्फ इतना कि जब ये कहीं जाएँ या कोई उनके यहाँ आए; तब ये अपने बच्चों को बुलाकर पूछें—"डियर, अंकल को बताओ, तुम कौन-से स्टैंडर्ड में हो?" और बेटे-बेटी से पहले ही उनका रिकार्ड चालू हो जाता है—"जी क्या करें, बड़ी प्रॉब्लम है। 'एप्रोच' करके बड़ी मुश्किल से ग्रीन वैली'''में एडमीशन मिला'''स्टार्ट में ही साढ़े सात सौ रुपए फीस गई'''क्या करें, जी! बेबी के लिए तो

[शेष पृष्ठ १३ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Teaching English in India

By

Dr. (Miss) A. R. Bisht

Reader in Education,
Kumaun University, Almora

✡✡✡

- This book deals with the method of English teaching in Indian schools. It is useful for teacher trainees doing L. T., B. Ed., or B. T. C. courses because it is designed according to their syllabi. It can beneflt teachers teaching at senior and junior levels also. All the matter is arranged under relevant headings clearly, briefly, and simply. Examples of lesson planning (objective based too) are given in appendix. For enthiusiastic readers, a comprehensive bibliography has been included.
- The book is the result of a long teaching experience of the author.

Size Demy **pp 250** **Price Rs. 12.00**

बी० ए० गृह-विज्ञान की छात्राओं के लिए—

डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी द्वारा लिखित

गृह-व्यवस्था एवं गृहकला
ग्यारहवाँ संस्करण, १९८३
मूल्य : सोलह रुपये पचास पैसे

पोषण एवं आहार विज्ञान
दसवाँ संस्करण, १९८१
मूल्य : तेरह रुपये पैंतीस पैसे

गृह-विज्ञान साहित्य

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त
तेरहवाँ संस्करण, १९८२
मूल्य : आठ रुपये पचास पैसे

मातृकला एवं शिशु कल्याण
ग्यारहवाँ संस्करण, १९८२
मूल्य : चौदह रुपये

स्वास्थ्य विज्ञान तथा जन स्वास्थ्य
जी० डी० सत्संगी
चतुर्थ संशोधित संस्करण, १९८३ **मूल्य : ग्यारह रुपये**

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बी० एड० के छात्रों के लिये विशेष सूचना

राजस्थान विश्वविद्यालय के वर्ष 1983-84 के बी० एड० के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

✡ ✡ ✡

निम्न पुस्तकें राजस्थान विश्वविद्यालय के बी० एड० के नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रमानुसार लिखी गई हैं। पुस्तकें सभी उच्चकोटि के शिक्षाशास्त्रियों एवं अनुभवी लेखकों द्वारा प्रस्तुत हैं। पुस्तकों की भाषा सरल एवं सरस है।

छात्राध्यापकों से निवेदन है कि कृपया **नमूनार्थ** प्रतियों के लिये पत्र-व्यवहार द्वारा सम्पर्क स्थापित करें।

प्रथम प्रश्नपत्र

● **भारतीय समाज में शिक्षा** — डा० रामपालसिंह वर्मा

(Indian Social Education) — वीणा भास्कर, कु० अंजू वर्मा

विषय-प्रवेश—1. शिक्षा का अर्थ (Meaning of Education) 2. शिक्षा के उद्देश्य तथा ध्येय (Aims and Objectives of Education) 3. आधुनिक भारतीय समाज के मूल्य एवं आकांक्षायें (Values and Aspirations of Present day Indian Society) 4. आधुनिक भारतीय समाज की विशेषतायें (Features of Moderm Indian Society) 5. समाजशास्त्रीय प्रत्यय (Sociological Concepts) 6. शिक्षा तथा सामाजिक परिवर्तन (Education and Social Change) 7. भारतीय समाज में परिवर्तन (Social Change in India) 8. भारतीय समाज में विद्यालय (Schools in Indian Society) 9. औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा (Formal and Non-formal Education) 10. समुदाय एवं विद्यालय (Community and Schools) **परिशिष्ट** 1—समाज का निर्विद्यालयीकरण (De Schooling Society) 2—शिक्षा का भविष्य विज्ञान 3—खुले विश्वविद्यालय 4—सामुदायिक सर्वेक्षण (प्रेस में)

द्वितीय प्रश्नपत्र

● **अधिगम एवं विकास के मनो-सामाजिक आधार** — डा० रामपालसिंह वर्मा

(Psycho-Social Bases of Learning and Development) — प्रो० राधावल्लभ उपाध्याय

विषय-प्रवेश—1. मनोविज्ञान का अर्थ एवं क्षेत्र (Meaning and Scope of Psychology) 2. शिक्षा-मनोविज्ञान (Educational Psychology) 3. मनोविज्ञान के सम्प्रदाय (Schools of Psychology) 4. गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt-Psychology) 5. मनोविश्लेषणवाद (Psycho-Analysis) 6. पियाजे एवं ब्रूनर (Piaget and Bruner) 7. शिक्षा-मनोविज्ञान की उपयोगिता (Utility of Educational Psychology) 8. अभिवृद्धि व विकास के सिद्धान्त (Principles of Growth & Development) 9. वंशानुक्रम एवं वातारण (Heredity & Environment) 10. विकास की अवस्थाएँ : शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था (Stage of Development : Infancy & Childhood) 11. विकास की अवस्थाएँ : किशोरावस्था (Stage of Development : Adolescence) 12. शारीरिक एवं गामक विकास (Physical & Motor Development) 13. मानसिक विकास (Mental Development) 14. सामाजिक विकास (Social Development) 15. संवेगात्मक विकास (Emotional Development) 16. व्यक्तित्व का अर्थ (Meaning of Personality) 17. व्यक्तित्व का माप (Assessment of Personality) 18. व्यक्तित्व की विभिन्नताएँ (Individual Differences) 19. बुद्धि का स्वरूप एवं मापन (Nature and Measurement of Intelligence) 20. अभियोग्यताएं (Aptitudes) 21. अधिगम के सिद्धान्त (Theories of Learning) 22. अधिगम एवं प्रेरणा (Learning and Motivation) 23. समूह प्रक्रिया (Groups Process) 24. विशिष्ट बालक (Special Children)

आकार : डिमाई — पृष्ठ : 360 — मूल्य : 16·00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय प्रश्नपत्र

● विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य-शिक्षा डा० रामपालसिंह वर्मा

(भारतीय शिक्षा की समस्याओं सहित)

School Organisation & Health Education

(With Problems of Indian Education)

विषय-प्रवेश— 1. प्रधानाध्यापक (Headmaster) 2. अध्यापक (Teacher) 3. पाठ्यक्रम-सहगामी क्रियाएँ (Co-Curricular Activities) 4. शारीरिक-शिक्षा (Physical Education) 5. अनुशासन एवं स्वशासन (Discipline and Self-Government) 6. विद्यालय भवन (School Building) 7. प्रयोगशाला एवं साजसज्जा (Laboratory & Equipment) 8. विद्यालय पुस्तकालय (School Library) (9) गृह कार्य (Assigments) 10. मूल्यांकन एवं परीक्षा (Evaluation & Examination) 11. छात्रों का वर्गीकरण एवं क्रमोन्नयन (Classification and Promotion of students) 12. समय-सारणी (Time-Table) 13. विद्यालय-कार्यालय एवं अभिलेख (School-Office and Records) 14. शिक्षा की संवैधानिक व्यवस्थाएँ (Constitutional Provisions for Education) 15. राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता (National and Emotional Integration) 16. भारत में भाषा समस्या (Language Problems in India) 17. छात्र-असंतोष की समस्या (Problems of Students Unrest) 18. शिक्षा में भारतीयकरण की समस्या (Problems of Indianisation of Education) 19. धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की समस्या (Problems of Religious & Moral Education) 20. व्यावसायिक शिक्षा की समस्याएँ (Problems of Vocatical Education) 21. संस्थागत नियोजन (Institutional Planning) 22. स्वास्थ्य-शिक्षा (Health Education) 23. जनसंख्या-शिक्षा की समस्या (Problem of Population Education) 24. यौन-शिक्षा (Sex Education) 25. निर्देशन सेवायें (Guidance Services)

आकार : डिमाई पृष्ठ : 328 मूल्य : 16·00

चतुर्थ प्रश्नपत्र

● प्रभावी शिक्षण के आधार डा० रामपालसिंह वर्मा, डा० देवदत्त शर्मा
प्रो० सत्यदेवसिंह, प्रो० पृथ्वीसिंह

विषय-प्रवेश—1. शिक्षण प्रक्रिया (Teaching Process) 2. शिक्षण हेतु योजना-निर्माण (Planning for Teaching) 3. अधिगम उद्देश्यों का स्वरूप एवं विशेषताएँ (Nature of objectives of Learning and Specifications) 4. शिक्षण रीतियाँ (Teaching Techniques) 5. विशिष्ट-पाठ-योजनाएँ (Specific Lesson Plans) 6. मूल्यांकन एवं मापन (Evaluation and Measurement) 7. विश्वसनीयता एवं वस्तुनिष्ठता (Reliability and Objectivity) 8. मूल्यांकन के प्रमापीकृत उपकरण (Standardised tools of Evaluation) 9. मूल्यांकन के अप्रमापीकृत उपकरण (Non-Standardised tools of Evaluation) 10. शिक्षा में सांख्यिकी (Statistics in Education) 11. सूक्ष्म-अध्यापन (Micro-Teaching) 12. दल-शिक्षण (Team Teaching) 13. क्षेत्राटन (Field Trips) 14. अभिक्रमित अध्ययन (Programmed Learning) 15. कार्य संगोष्ठी (Workshops) 16. परिचर्चा (Discusion) ।

आकार-डिमाई पृष्ठ मूल्य

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य का विद्यार्थी उपयोगी प्रकाशन

पुस्तक	लेखक	मूल्य
कादम्बरी कथामुखम्	डा० कृष्ण अवतार बाजपेयी	१२.००
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ	डा० जयकिशन प्रसाद	१८.००
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० बाबूराम त्रिपाठी	१६.००
संस्कृत नाट्य साहित्य	डा० जयकिशन प्रसाद	१२.००
प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह, उषा यादव	२८.००
भारतीय संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह	२०.००
संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत व्याकरणम्	डा० बाबूराम त्रिपाठी	२४.००
भारतीय दर्शन	डा० रामकृष्ण आचार्य एवं बाबूराम त्रिपाठी	१२.००
संस्कृत निबन्धांजलिः	डा० रामकृष्ण आचार्य	१५.००
ऋक्-सूक्त-समुच्चयः	डा० रामकृष्ण आचार्य	२०.००
मेघदूतम् [सम्पूर्ण, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	९.००
मेघदूतम् [पूर्वमेघ, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	६.५०
संस्कृत वाङ्मय : मौखिकी	डा० गोविन्द त्रिगुणायत	६.००
वैदिक साहित्य का इतिहास	डा० राजकिशोर सिंह	८.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद	९.००
काव्यप्रकाश : एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	(प्रेस में)
ध्वन्यालोक: एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००
कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तलम्	डा० जयकिशन प्रसाद	५.५०
चतुर्वेद	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
कालिदास और मेघदूत	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
सुबोध संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
साहित्य दर्पण : एक अध्ययन	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	५.५०
रघुवंशम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	४.५०
रघुवंशम् [द्वितीय सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
रघुवंशम् [१३ वाँ सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	३.००
अभिज्ञान शाकुन्तलम् : चतुर्थ अंक	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्र से)	डा० पारसनाथ द्विवेदी	४.५०
शिशुपालवधम् महाकाव्यम् [सर्ग १, २]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	१०.००
शिशुपाल वधम् [सर्ग १]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
कुमार सम्भवम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
कुमार सम्भवम् [पंचम सर्ग]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
किरातार्जुनीयम् [प्रथम सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
किरातार्जुनीयम् [द्वितीय सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
भारतीय दर्शन (प्रश्नोत्तर)	डा० राजकिशोरसिंह	८.००
भारतीय संस्कृति [प्रश्नोत्तर में]	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास तथा संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल	७.००
व्याकरण कौमुदी [भाग–१]	डा० बाबूराम त्रिपाठी	३.००
भरतमुनि प्रणीतम्–नाट्यशास्त्रम् [प्रथम एवं द्वितीय अध्याय]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००
संस्कृत गद्य रत्नाकर : दिग्दर्शन [आ० वि० प्रकाशन सं० ७० की सम्पूर्ण टीका]	डा० शर्मा, खण्डेलवाल	८.००

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-विकास में अभिभावक-भूमिका

डा० चन्द्रशेखर भट्ट
टीचर्स कोलोनी, कोटा–7 (राज०)

हमारी संस्कृति में भगवान को शिशु-रूप में चित्रित किया गया है। सूर और तुलसी जैसे कविवरों ने उनके बाल-रूप को स्वयं-प्रेरणा की वह जागृत अवस्था कहा है जिसमें सूर तो "रूप-रेख-गुन-जाति-जुगत" की जटिलता से ऊब कर बाल कृष्ण के लीला पद गा गये और 'अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल' कहकर रसार्णव—सूरसागर जैसी काव्य-सम्पत्ति सृष्टि को सौंप गए और तुलसी के तुलसी तो "बालक रामा" को अपना सर्वस्व ही मान बैठे और मानस जैसा विश्व-विख्यात महाकाव्य प्रदान कर गए।

शिशु की मधुर मुस्कान क्रीड़ा-कलाप, खिलखिलाता मुखड़ा किसकी प्रेरणा का स्रोत न होगा? कौन ऐसे बालक को कनिया लगाकर फूला नहीं समावेगा—क्योंकि वह तो सहज स्नेह का पुतला है, भोला भण्डारी है, भविष्य का दीपक है, निर्माण का नियामक है और राष्ट्र का मुखरित बीज है।

किन्तु हम आज अपने बालकों की जो क्षति कर चुके हैं या कर रहे हैं उसकी कल्पना से ही हम सिहर उठते हैं। हम सदैव के लिए, ऐसा प्रतीत होता है, इस तथ्य से आँखें मूँद चुके हैं कि शिशुकाल के प्रारम्भिक वर्ष उसके भविष्य पर प्रभावी असर डालते हैं क्योंकि यही ऐसा काल है जब हम उसके भविष्य को बना या बिगाड़ सकते हैं। आज का युग मनोविज्ञान के नये आयामों का युग है और आज मनोवैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि बालक के प्रारम्भिक वर्ष उसके व्यक्तित्व व व्यवहारगत निर्माण की अवधि है तथा इसी समय बालक की बुद्धि को विकसित किंवा अवरुद्ध किया जा सकता है। माता-पिता तथा अभिभावकों की देख-रेख व उपेक्षा किस सीमा तक बालक पर प्रभाव डाल सकती है, इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। टोरन्टो में हुए अध्ययन यह उद्घाटित करते हैं कि अभिभावकीय देखरेख से बालक की बुद्धि में वृद्धि की जा सकती है तथा शाला में उनके पिछड़ने का प्रमुख कारणअभिभावकों तथा माता-पिताओं की उपेक्षा व उदासीनता ही होती है।

मातृकला

जन्म के समय शिशु स्वभावतः मूलप्रवृत्यात्मक प्राणी होता है। क्रमिक विकास उसका स्वभाव है और इस विकास की प्रथम कड़ी विकासमयी माँ है क्योंकि बड़े-बड़े आचार्यों ने "मातृ मुखेण शिक्षणम्" को एक स्वर से स्वीकार किया है। हम इस सहज उपलब्धि के हामी हैं कि जिस बालक का जितना विकास माँ के द्वारा होगा उतना ही वह बालक होनहार एवं प्रतिष्ठा-सम्पन्न होगा। वह समाज की मान्यताओं, आकांक्षाओं, उद्देश्यों एवं संस्कृति से अवगत ही नहीं होगा वरन् तदनुकूल आचरण भी करेगा जैसा कि पौर्वात्य तथा पाश्चात्य शिक्षाशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने आज स्वीकार किया है। हमें यह मानना पड़ेगा कि बालक की क्रियाएँ-प्रक्रियाएँ अपने अभिभावकों की दैनन्दिनी का प्रतिबिम्ब मात्र हैं। इसी से प्रभावित होकर शैरीदन, जो उच्चकोटि के बाल-मनोविज्ञान-वेत्ता हैं, स्वीकार करते हैं कि नव प्रसूत-शिशु का उन्नीसवाँ दिन ही शिक्षा-सत्र का प्रथम दिन है; शिक्षा-सोपान के प्रथम पंक्ति की प्रथम कड़ी है—बालक की सर्वतोन्मुखी विकास की मूल्यवान घड़ी। अतः विदुषी माताओं को प्रथम परिचय के दिन ही बालक की शिक्षा की नींव रख देनी चाहिए जिससे उसका समुचित विकास हो सके व भविष्य निर्माण भी। माताओं का कर्त्तव्य है कि शिशुओं को अपने साथ निकट, सुखद और वास्तविक सम्बन्ध बनाने दें। यदि बालक इससे वंचित रहा तो उसकी बुद्धि की अवरुद्धता के लिए माताएँ स्वयं ही उत्तरदायी होंगी। जहाँ तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्भव हो, माताओं को अपना अधिकांश समय बच्चों के साथ बिता कर घर की वस्तुओं को छूने और अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना चाहिए। बालक का विकास आन्तरिक होते हुए भी समस्त विश्व से समन्वित रहता है जिसे समझने हेतु वह अपने शारीरिक अवयवों को काम में लाता है। माँ अपने शिशु को उठा सकती है; उसके हाथ से दीवार, पर्दे, फर्नीचर, खिड़की के पल्ले, पेड़ की पत्तियों या मोटर-कार का स्पर्श करा सकती है—उसके हाथ से दरवाजा हिलवा सकती है, घण्टी बजवा सकती है अथवा नल से बहते हुए पानी का स्पर्श करा सकती है।

शिशुकाल के प्रारम्भिक वर्षों में माता द्वारा शिशु की अच्छी देखभाल उसकी बुद्धि के विकास में सहायक होती है। हमें यह नहीं भुला देना चाहिए कि इस अवस्था के अतिरिक्त कोई अवस्था ऐसी नहीं है जबकि बालक अपनी माता से लाभान्वित हो सकता है।

पितृकला

सीखना और सोचना संवेगात्मक शक्ति के द्वारा पूरित होता है। परोक्ष रूप में बालक अपने पिता या अन्य बड़ों से ही भाषा का ज्ञान प्राप्त करता है। अपने माता-पिता द्वारा उच्चरित शब्दों की प्रतिलिपि करने का बड़े अभिध्यात्मक क्रम में प्रयास करता है। अतः व्यथा तथा प्रसन्नता का प्रकटीकरण बालक के लिए बहुत बड़ा अर्थ रखता है। अस्तु, माता-पिता का संवेगात्मक व्यवहार अत्यन्त सावधानी लिए रहना चाहिए अन्यथा बालक स्पष्ट शब्दों में अपने कार्यों के माध्यम से कह देता है—"मुझसे सावधान रहो, मैं तुम्हारी क्रियाओं और संवेगों को प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण हूँ—नन्हा-सा पुतला हूँ।"

अध्ययन व शोध-परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि माता और पिता की सावधान देखरेख से बालक के सर्वाङ्गीण विकास में आशातीत वृद्धि हो सकती है। ऐसा बालक जो जागरूक पिता व माता से पालित और पोषित होगा वह न कभी शाला-कर्मों में पिछड़ेगा और न अपने संरक्षकों के पास किसी कार्य में उदासीनता या शिथिलतापूर्ण व्यवहार की कोई शिकायत आने देगा।

माता-पिता तथा अभिभावकों को स्मरण रखना होगा कि बालक हर वस्तु को उसी रूप में स्वीकार करता है जिस रूप में उसे देखता है और उसी को अपनाता है जो उसके साथ एकात्म हो जाती है। अतः बालक के आसपास का वातावरण शाश्वत परिवर्तन वाला होना चाहिए ताकि शिशु से बाल, बाल से किशोर एवं किशोर से तरुण होने पर शाश्वत परिवर्तन के पक्ष में चलने वाली क्रांति में उसका योगदान अवश्य होगा अन्यथा भावी जीवन में अयोग्य व्यक्तियों के हाथों का खिलौना बन जावेगा और उसका अपना व्यक्तित्व ही समाप्त हो जावेगा। अतः बालक के सामने शिशु अवस्था में ही माता-पिता सतर्क रहकर उसके सर्वाङ्गीण विकास की दिशा में प्रयत्नशील रहें कि वह नैतिक धरातल पर तय कर अपना निखरा हुआ रूप समाज में प्रस्तुत कर सके।

खिलौने व पुस्तकें

बालक को खिलौनों से वंचित करना उसे अपने जीवन की प्रथम आवश्यकता से वंचित करना है, क्योंकि वह सुन्दर वस्तुओं को रखने, उन पर अपना स्वामित्व बनाने, काम में लेने और उनको इधर-उधर रखने में रुचि लेता है। उसे "ऐसा मत करो", "यह मत करो" कहकर उसकी मनोवृत्ति पर आघात करना बिलकुल अपेक्षणीय नहीं। खिलौनों का प्रयोग और खेल उसे सोद्देश्य क्रियाओं में लगाये रखने के अतिरिक्त उसकी बुद्धि के विकास में सहायक होते हैं। अतः माता-पिता का कर्त्तव्य है कि बालक के वयस्कानुसार खिलौनों का चयन कर उपयुक्त खिलौने देने चाहिए ताकि उनकी सहायता से वह मानसिक भोजन प्राप्त करे, मनोरंजित रहे और अपनी समस्याओं को हल करने में सक्षम बने। बालकों को वही खिलौने बार-बार देना उसकी प्रकृति के विरुद्ध है। अतः जब भी बालक किसी खिलौने से ऊब जाय तो तुरन्त बदल देना चाहिए।

बचपन के प्रथम वर्षों में खिलौनों के साथ ही पुस्तकों का प्रयोग अधिकतर माता-पिता की कल्पना से परे है। पुस्तकों पर व्यय करना वे अपव्यय समझते हैं। उनकी मान्यता है कि इस समय बालक की ज्ञानेन्द्रियाँ सक्रिय नहीं होती हैं और न मस्तिष्क ही; किन्तु वे नहीं जानते कि दो वर्ष की अवस्था से पूर्व ही बालक का तीन-चौथाई से अधिक मस्तिष्क का विकास हो जाता है और उसकी स्मरण-शक्ति भी वयस्क की अपेक्षा अधिक होती है। इसलिए बालक को दूसरे वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ही चित्रों की कतिपय पुस्तकें, जिनमें चटकीले रंगों वाले जानवरों, पुष्पों, कपड़ों, पक्षियों आदि के चित्र हों, अवश्य दीजिए। तीसरे वर्ष के प्रारम्भ में चित्रात्मक कहानी के विकास की पुस्तकें काम में लाई जा सकती हैं जिससे उसके विकास-क्रम में निरन्तर प्रौढ़ता आती रहे। स्मरण रहे, छोटे चितेरों के लम्बे कान होते हैं और उससे भी बड़ी आँखें।

चिह्नित करना व चित्रकारी

चिह्नित करना तथा आड़ी-टेढ़ी लकीरें बनाकर खिलवाड़ करना, बालक में लिखने की योग्यता एवं कार्यक्षमता की महत्त्वपूर्ण सर्जना करते हैं। उसका उत्साही मन जिज्ञासु एवं कलाकार होता है और रेखाएँ खींचना, दीवारों-दरवाजों या अन्य वस्तुओं पर चिह्नित करने की क्रिया में रुचि लेता है। बालकों के उक्त कथित कार्यों में माता-पिता तथा अभिभावकों को पूर्ण रुचि लेनी चाहिये, क्योंकि यह कार्य उनके मानसिक प्रशिक्षण के आधार होते हैं। ज्यों-ज्यों बालक बड़ा होता है वह संवेदना और प्रत्यक्ष ज्ञान की कठिन प्रक्रिया के द्वारा अवधारणा बनाता है और अपने संवेगों और विचारों को चित्रांकन, चेहरे की अभिव्यक्तियों तथा अन्य क्रियाओं द्वारा प्रकट करता है।

आदतों का निर्माण

पोषण-सफाई, आदतें तथा कार्य-व्यवहार जो भी बालकों में उत्पन्न होते हैं वे सब माता-पिता या अभिभावकों के कार्य-कलापों का बिम्ब मात्र होते हैं। अतएव बालक में अच्छी आदतों के निर्माण तथा नियमित करने के लिए उसे ठीक समय पर भोजन देना, कपड़े बदलवाना, सैर कराना नितान्त आवश्यक है। बालक को इस अवस्था में अपनी रुचियों व अरुचियों के संदर्भ में प्रेरणा एवं विशेष देखरेख आवश्यक है, क्योंकि इनकी अनुपस्थिति में बालक की वाणी का विकास, जो उसकी पर्यावरण स्थिति और वंशानुगतता पर आधारित होता है, मन्द पड़ जाता है। ऐसे बिन्दुओं को दृष्टि में रख कर सुघड़ अभिभावक अपने शिशुओं के विकास की विकासमान भूमिका निभावें और बालक के अभ्यन्तर सत्यं-शिवं और सुन्दरम् की भावनाओं के साथ-साथ प्रेम, सहानुभूति तथा जीवन की अन्य महानतम मान्यताओं का समावेश करें। इस प्रकार पालित और पोषित बालक की क्रोड़ में एक राष्ट्र-हित की आवाज होगी—वह क्रांति का नियामक होगा और राष्ट्र-हित ही नहीं वरन् विश्व-कल्याण भी उसके उपास्य आयाम हो सकते हैं। ●

[पृष्ठ ६ का शेषांश]

कुछ भी करेंगे ही....।" और जवाब में दूसरे पक्ष से जब सुनते हैं कि उनके बेटे की फीस 'बारह सौ' है, तो वे अपने आप को नर्क में मानते हैं। ये हैं इन गन्दे बच्चों के निर्माता, जो बच्चों में कुण्ठाएँ भरते हैं। उनका शयन-कक्ष अलग—बच्चे का अलग; उनका क्षेत्र अलग—बच्चे का अलग; और खाई बढ़ती ही जा रही है।

आइये, 'अच्छे बच्चों' के निर्माताओं से भी तो मिलें और देखें कि आखिर ये कैसे 'गन्दे' विशेषण को 'अच्छा' बनाते हैं। अच्छे संस्कार और अच्छा वातावरण बच्चे को जहाँ मिलता है, वह है 'उसका घर' और जो देते हैं, वे हैं बच्चे के माता-पिता।

बच्चा अनुकरणकर्त्ता होता है; जैसा देखता है, सहज रूप से वह वैसा ही करता है—यह बाल-मनोविज्ञान का सत्य है। वातावरण बनाने का दायित्व है हमारा, आपका और पूरे समाज का। 'अच्छे बच्चे' कहीं से आयात नहीं होते, समाज में बनते हैं और माता-पिता बनाते हैं।

माता-पिता प्रातःकाल उठते हैं, बच्चे भी अवश्य उठेंगे। माता-पिता ईश-प्रार्थना करते हैं, बच्चे भी अवश्य करेंगे। माता-पिता बच्चों को स्कूल भेजेंगे, वे अवश्य जाएँगे। उनके बस्ते में हर वस्तु ठीक से रक्खी होगी, तो बच्चा पढ़ेगा और जिम्मेदार बनेगा। माता-पिता बच्चे की पढ़ाई-लिखाई देखेंगे, बच्चा पढ़ेगा ही। उसकी कमजोरी को जानकर माता-पिता उपाय करेंगे, बच्चा सफल होगा ही।

कसौटी आपके हाथ में है, परखिए पहले स्वयं को। बच्चा मूलतः बच्चा ही होता है; उसे 'गन्दा' या 'अच्छा' बनाया जाता है इसी समाज की चहारदीवारी में। गाँधी, नेहरू, सुभाष, लालबहादुर शास्त्री, भगत सिंह जैसे राष्ट्र-निर्माता, देशभक्त; तुलसी, कबीर, मीरा, प्रसाद, पन्त, निराला, दिनकर जैसे साहित्य-निर्माता; जगदीशचन्द्र बसु जैसे महान विज्ञानी क्या 'बच्चे' नहीं थे? अवश्य थे, लेकिन इन्हें संस्कार मिले थे माता-पिता और समाज से।

आइये, 'गन्दे बच्चों' को बनाने वाले कारखानों का अन्त करने का दायित्व हम अपने कंधे पर लें। सोचिए मत, आगे बढ़िए—कल जब आपके कंधे शक्तिहीन हो जाएँगे, तब इन बच्चों के सबल 'कंधे' ही आपको सहारा देंगे; इसलिए आज इन्हें सहारा देकर आप अपने ही 'स्वर्णिम कल' का निर्माण करेंगे। ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा द्वारा प्रकाशित

साहित्य-परिचय

का

आगामी सामयिक

14वाँ विशेषांक (1983)

"शैक्षिक तकनीकी"

आपको विदित ही है कि 'साहित्य-परिचय' गत सोलह वर्षों से साहित्य तथा शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित आधुनिक विचारधाराओं के प्रेरक तथा प्रचारक के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 'साहित्य-परिचय' मासिक पत्र प्रति वर्ष एक विशेषांक प्रकाशित करता है। विशेषांकों के क्रम में साहित्य-परिचय ने 'शिक्षा और भारतीय संस्कृति', 'शैक्षिक उद्देश्य', 'पाठ्यक्रम', 'शिक्षा और राजनीति', 'शैक्षिक-प्रगति', 'शिक्षा की नई प्रणाली 10+2+3', 'प्रौढ़-शिक्षा', 'बाल-समस्या' तथा 'नैतिक शिक्षा' आदि प्रमुख विशेषांक पाठकों तक पहुँचाये हैं।

तकनीकी एवं वैज्ञानिक ज्ञान के विकास का शिक्षा दर्शन, विचारधारा, शिक्षण विधि एवं शिक्षा के अन्य क्षेत्रों पर भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। इसी प्रभाव के फलस्वरूप शिक्षा जगत् में एक नये क्षेत्र शैक्षिक तकनीकी का प्रादुर्भाव हुआ। भारत में शैक्षिक तकनीकी के क्षेत्र में कार्य आरम्भ हो चुका है जो कि अभी शैशवावस्था में है।

साहित्य-परिचय का 1983 का शिक्षा विशेषांक 'शैक्षिक तकनीकी' विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने की योजना भारत में शैक्षिक तकनीकी के विकास में सहयोग है। सभी शिक्षाविदों से इस विषय पर लेख आमंत्रित हैं। सुविधा हेतु कुछ लेख निम्न विषयों पर हो सकते हैं—

सम्भावित विषय-सूची

1. शैक्षिक तकनीकी—अर्थ एवं विचारधारा
2. शैक्षिक तकनीकी—शिक्षा का नवीन स्वरूप
3. मिनी पाठ्यक्रम—अध्यापक शिक्षा की नवीन विचारधारा
4. शैक्षिक तकनीकी—शिक्षण अधिगम नीतियाँ एवं अभियोजनाएँ
5. सूक्ष्म शिक्षण
6. समूह शिक्षण—सहयोगी संगठनात्मक विचारधारा
7. अनुकरणीय शिक्षण—प्रभावी अधिगम
8. वैयक्तिक अधिगम—स्वरूप एवं आवश्यकताएँ
9. वैयक्तिक अधिगम—भारतीय परिप्रेक्ष्य
10. चिकित्सकीय शिक्षा एवं शैक्षिक तकनीकी
11. सैनिक प्रशिक्षण एवं शैक्षिक तकनीकी प्रविधियाँ
12. पाठ्य-पुस्तक विकास में शैक्षिक तकनीकी का योगदान
13. अभिक्रमित निदेशन
14. शैक्षिक तकनीकी एवं पाठ्यक्रम विकास
15. खुले विद्यालय एवं शैक्षिक तकनीकी
16. मूल्यांकन में शैक्षिक तकनीकी सिद्धान्तों का योगदान
17. भारतीय शैक्षिक समस्याओं के निराकरण में शैक्षिक तकनीकी का योगदान
18. शैक्षिक तकनीकी और अभिनवन
19. शैक्षिक तकनीकी और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम
20. शैक्षिक दूरदर्शन
21. रेडियोविजन
22. उपग्रह शिक्षा
23. भारत में शैक्षिक तकनीकी—एक सिंहावलोकन
24. मल्टीमिडिया पैकेज
25. कम्प्यूटर एवं शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

26. शैक्षिक तकनीकी एवं व्यवसाय प्रबन्ध प्रशिक्षण
27. शैक्षिक तकनीकी एवं विशिष्ट बालकों की शिक्षा
28. टेपस्लाइड शैक्षिक कार्यक्रम
29. शैक्षिक तकनीकी विधियों में अध्यापक का स्थान
30. फिल्म और शिक्षण
31. शैक्षिक तकनीकी के क्षेत्र में शोध

लेखकों से निवेदन

लेखकों से निवेदन है कि वे अपने मौलिक, तथ्यपूर्ण एवं अप्रकाशित निबन्ध अतिशीघ्र ही प्रेषित करके हमारे इस प्रयास को सफल बनाने में सहयोग दें। निबन्ध फुल-स्केप साइज पर एक ओर स्वच्छ रूप से लिखा हुआ अथवा टाइप किया हुआ होना चाहिए। लेख अधिक से अधिक 5-6 पृष्ठ का होने से सुविधा होगी। कृपया निबन्ध भेजने की स्वीकृति शीर्षक सहित तुरन्त भेजने का कष्ट करें। निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि 20 अगस्त 1983 है। यदि आप किसी कारणवश उक्त तिथि तक लेख भेजने में असमर्थ हों तो हमें लिखने की कृपा करें।

आपके सहयोग के आकांक्षी—

—व्यवस्थापक

साहित्य-परिचय कार्यालय

दूरभाष : 76486 डॉ० रांगेय राघव मार्ग, आगरा-2

प्रशिक्षण साहित्य (Methods of Teaching) सम्बन्धी

उपयोगी प्रकाशन

पुस्तक	लेखक	मूल्य
भाषा 1, 2 की शिक्षण विधियाँ एवं पाठ-नियोजन	डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा	20.00
हिन्दी-शिक्षण	डा० रामशकल पाण्डेय	12.50
हिन्दी भाषा-शिक्षण	भाई योगेन्द्रजीत	16.00
मातृभाषा-शिक्षण	के० क्षत्रिया	16.00
इतिहास शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	12.00
इतिहास-शिक्षण की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	8.00
सामाजिक अध्ययन का शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	9.00
शिक्षक महाविद्यालयों में सामाजिक अध्ययन शिक्षण	सतगुरु शरण, दिनेश प्रकाश शर्मा	8.00
नागरिक शास्त्र का शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	9.00
नागरिक शास्त्र शिक्षण-कला	डा० उमेश चन्द्र कुदेसिया	(प्रेस में)
भूगोल-अध्यापन	जगदीश प्रसाद वर्मा	14.00
भूगोल-शिक्षण	एच० एन० सिंह	9.00
नवीन विज्ञान-शिक्षण	रावत एवं अग्रवाल	8.50
विज्ञान-शिक्षण	डी० एस० रावत	9.00
जीव विज्ञान-शिक्षण	शैलेन्द्र भूषण	7.50
गणित-शिक्षण	रावत एवं अग्रवाल	10.00
संस्कृत-शिक्षण	डा० रामशकल पाण्डेय	9.40
गृह विज्ञान-शिक्षण	डा० जी० पी० शैरी	11.50
वाणिज्य शिक्षण	उदयवीर सक्सेना	7.00
अर्थशास्त्र-शिक्षण	गुरुसरनदास त्यागी	9.00
समाज-शिक्षा	तेजसिंह तरुण	6.00
Essentials of English Teaching	R. K. Jain	20.00
Teaching English in India	Abha Rani Bisht	12.00
Let us Learn English	M. S. Sachdeva	14.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा एवं मनोविज्ञान

मनोवैज्ञानिक परीक्षण (प्रथम संस्करण १९८३) डा० एम० ए० शाह, कुमारी कुसुम माथुर, डिमाई, पृष्ठ ३४० मूल्य १७.००, पुस्तकालय संस्करण २५.००

अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार (प्रथम संस्करण १९८३) डा० रामपालसिंह वर्मा, प्रो० राधावल्लभ उपाध्याय, डिमाई, पृष्ठ ३५८, मूल्य १६.०० (राज० विश्व० के बी. एड. के नये पाठ्यक्रमानुसार)

विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा (प्रथम संस्करण १९८३) डा० रामपालसिंह वर्मा, डिमाई, पृष्ठ ३३६, मूल्य १६.०० (राज० विश्व० के बी. एड. के नये पाठ्यक्रमानुसार)

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं (संशोधित छठा संस्करण १९८३) पी० डी० पाठक, डिमाई, पृष्ठ ६३८, मूल्य २४.००, पुस्तकालय संस्करण ३५.००

हिन्दी-भाषा शिक्षण (संशोधित चौदहवाँ संस्करण १९८३) दिनेशचन्द्र भारद्वाज, डिमाई, पृष्ठ १७६, मूल्य ७.००

तुलनात्मक शिक्षा (संशोधित द्वितीय संस्करण १९८३) भाई योगेन्द्रजीत, डिमाई, पृष्ठ १९८, मूल्य ८.५०

शिक्षा में नव चिन्तन (प्रथम सस्करण 1983) डा० रामपालसिंह वर्मा, डिमाई, पृष्ठ ३६८, मूल्य २०.००

विविध

सारथिपुत्र (महाभारत के कर्ण के चरित पर आधारित एक ऐतिहासिक नाटक) डा० राजेन्द्रमोहन मटनागर, क्राउन, पृष्ठ १८८, मूल्य ८.००, पुस्तकालय संस्करण १५.००

विद्यापति पदावली (संशोधित तृतीय संस्करण १९८३) डा० देशराजसिंह भाटी, डिमाई, पृष्ठ ४६२, मूल्य २२.००

आयुर्वेदरत्न दिग्दर्शन गाइड—(प्रथम खण्ड—संशोधित षष्ठ संस्करण १९८३) वैद्य भूदेव शर्मा व्यास, क्राउन, पृष्ठ ७९६, मूल्य २५.००

संस्कृत निबन्धाञ्जलिः (संशोधित पंचम संस्करण १९८३) डा० रामकृष्ण आचार्य, डिमाई, पृष्ठ २७४, मूल्य १५.००

ध्वन्यालोक (संशोधित तृतीय संस्करण १९८३) डा० पारसनाथ द्विवेदी, क्राउन, पृष्ठ, १२८, मूल्य ५.००

सूरदास—आलोचनात्मक अध्ययन (संशोधित सोलहवाँ संस्करण १९८३) वासुदेव शर्मा शास्त्री, क्राउन, पृष्ठ २१६, मूल्य ७.००

कृपया ध्यान दें !

'साहित्य परिचय' के सदस्यों से निवेदन

'साहित्य-परिचय' आपकी अपनी पत्रिका है। गत 17 वर्षों से यह आपकी सेवा में कार्यरत हैं। कृपया इसके स्वयं सदस्य बनिये तथा अपने परिचितों को इसका सदस्य बनाइए। वर्ष भर में 250 पृष्ठ का एक विशेषांक इसी वार्षिक शुल्क में निःशुल्क प्राप्त होता है। आज ही 15.00 रु० धनादेश द्वारा भेजकर वर्ष 1983 (जनवरी—दिसम्बर) के लिये सदस्य बनें। विशेषांक को रजिस्ट्री से प्राप्त करने के इच्छुक सज्जन 18.00 रु० का धनादेश भेजें। जिनकी सदस्यता वर्ष 1982 में समाप्त हो गयी है, वह नवीनीकरण के लिये अपना वर्ष 1983 का वार्षिक शुल्क शीघ्र ही भेजें।

—व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ
डा० एस० एस० माथुर १८.००

सफल शिक्षण कला
पी० डी० पाठक, त्यागी १६.००

शिक्षण-तकनीकी (Technology of Teaching)

शिक्षण-तकनीकी
शैलेन्द्र भूषण एवं डा० अनिलकुमार वार्ष्णेय १०.००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार
डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ १६.००

विद्यालय-प्रशासन (School Administration)

Educational Administration 22.00
S. P. Sukhia Lib. edn. 30.00

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन
एस० पी० सुखिया १५.५५
पुस्तकालय संस्करण २५.००

शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००

विद्यालय व्यवस्था श्री केशवप्रसाद ७.५०

शिक्षा-प्रशासन डा० उमेशचन्द्र कुदेसिया १२.००

स्वास्थ्य-शिक्षा (School Hygiene)

स्वास्थ्य-शिक्षा डा० जी० पी० शैरी १६.००

School Health Education & Public Health
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. Edn. 30.00

मापन एवं मल्यांकन (Measurement & Evaluation)

शैक्षिक मूल्याँकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.००

Measurement and Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana, Dr. Agrawal 25.00
Lib. edn. 35.00

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल, डा० बिपिन अस्थाना १८.००

सांख्यिकी (Statistics)

सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा, डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
डा० सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा-दर्शन (Philosophy of Education)

भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ
पाठक एवं त्यागी (प्रेस में)

शिक्षा-दर्शन डा० रामनाथ शर्मा १५.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामशकल पाण्डेय १८.००
पुस्तकालय संस्करण २५.००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, त्यागी १८.००

निर्देशन (Guidance)

शैक्षिक मापन एवं निर्देशन
उमेश प्रसाद सिंह ४.००

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श
डा० सीताराम जायसवाल १५.००

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
डा० रामपालसिंह वर्मा, उपाध्याय १६.००

Educational & Vocational Guidance
N. R. Sharma 15.00

तुलनात्मक-शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा
डा० सरयू प्रसाद चौबे ४०.००

शिक्षा व्यवस्थाएँ डा० सरयू प्रसाद चौबे १२.००

विषय-शिक्षण—इसके अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, संस्कृत, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान व अंग्रेजी-शिक्षण पर विभिन्न विद्वानों की लिखी सरल भाषा में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

उक्त सभी प्रश्नपत्रों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर रूप में भी पुस्तकें प्राप्य हैं।

सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना टिकट प्रेषण करने का प्रमाण-पत्र संख्या —AG-009
[जुलाई, 1983]
पंजीबद्ध संख्या—L. AG.-038

OUR ENGLISH PUBLICATIONS

EDUCATION & PSYCHOLOGY

1. **Educational Psychology** (*Tenth Edition*) — (In Press)
   Dr. S. S. Mathur — *Lib. edn.* 40·00
2. **A Sociological Approach to Indian Education** (*Sixth Edition*) — 28·00
   Dr. S. S. Mathur
3. **Philosophical and Sociological Foundations of Education** (*First Edition*) — 20·00
   Dr. S. P. Chaube, Akhilesh Chaube — *Lib. edn.* 30·00
4. **Principles of Education** — 20·00
   Dr. R. S. Pandey — *Lib. edn.* 30.00
5. **An Introducation to Major Philosophies of Education** (*First Edition, 1982*) — 14.00
   Dr. R. S. Pandey — *Lib. edn.* 20·00
6. **Educational Administration** — 22·00
   S. P. Sukhia — *Lib. edn.* 30·00
7. **Measurement and Evaluation in Psychology and Education** (*First Edition, 1983*) — 25·00
   Dr. Bipin Asthana, Dr. R. N. Agrawal — *Lib. edn.* 35·00
8. **School Health Education and Public Health** — 20·00
   Dr. S. P. Chaube — *Lib. edn.* 30·00
9. **Abnormal Psychology : A Dynamic Approach**
   Dr. Govind Tiwari — (In Press)
10. **Essentials of English Teaching** (*Sixth Edition, 1981*) — 20·00
    R. K. Jain
11. **Teaching English in India** (*First Edition, 1983*) — 12.00
    Dr. (Miss) Abha Rani Bisht
12. **Let Us Learn English** — 14·00
    M. S. Sachdeva

IN Q. A. SERIES

1. **B. Ed. Guide** (*Second Edition, 1981/82*) — 51·00
   N. R. Sharma
2. **Principles of Education** (*Second Edition*)
   P. D. Pathak and G. S. D. Tyagi — 12·00
3. **Basic Education** (*First Edition*)
   Pathak & Tyagi — 5·00
4. **Principles and Practice of Education** (*Revised Second Edition*) — 11·00
   Indra Sharma
5. **Educational Psychology** (*Third Edition*) — 15·00
6. **History and Problems of Indian Education** (*Revised Second Edition*) — 13·50
   Indra Sharma
7. **School Administration and Health Education** (*Enlarged Second Edition*) — 15·00
   Indra Sharma
8. **Teaching of English in India** — 8·00
   P. D. Pathak
9. **Educational and Vocational Guidance** (*First Edition*) — 15·00
   N. R. Sharma

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के सुविख्यात आचार्य और समालोचक
डा० द्वारिका प्रसाद सक्सेना द्वारा लिखित
अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के लिये अति उपयोगी ग्रन्थ

हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि

● प्रस्तुत आलोचनात्मक ग्रन्थ में आधुनिक प्रतिनिधि कवियों का चयन हिन्दी के उन विशिष्ट कवियों पर आधारित है, जिन्होंने आधुनिक नवोत्थान एवं नव-जागरण सम्बन्धी हिन्दी काव्य का सृजन करके जन-मानस को नव चेतना की उद्दाम तरंगों से तरंगायित किया है, हिन्दी-काव्य को नूतन दिशा प्रदान करके हिन्दी कविता को उन्मुक्त गगन में साँस लेने का सुअवसर दिया है। इस युग के प्रसिद्ध कवि—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', जगन्नाथदास 'रत्नाकर', मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला,' सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा, रामधारीसिंह 'दिनकर', अज्ञेय, नागार्जुन और गिरिजाकुमार माथुर की काव्यानुभूति एवं काव्यशास्त्र की विशद् समीक्षा करते हुए उनकी रचना शैली एवं अभिव्यंजना-पद्धति के उद्घाटन में अत्यन्त मौलिक एवं नूतन प्रणाली का प्रयोग किया है।

आकार : डिमाई　　पृष्ठ संख्या : ५४४　　मूल्य : २५.५०

●

संस्कृत के स्नातकोत्तर स्तरीय ७१ मौलिक निबन्धों का श्रेष्ठ संकलन

संस्कृत निबन्धाञ्जलिः

लेखक
डा० रामकृष्ण आचार्य, वेदान्ताचार्य
अवकाश प्राप्त, अध्यक्ष-संस्कृत विभाग
राजा बलवन्तसिंह कालेज, आगरा

● प्रस्तुत निबन्ध संकलन संस्कृत के उच्च विश्वविद्यालय स्तरीय मौलिक निबन्धों का प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। प्रतिपाद्यबहुल एवं अर्थ-गम्भीर होते हुए भी यह सरल संस्कृत भाषा में लिखा गया है। फलतः, जहाँ यह विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए उपयोगी है, वहाँ यह सामान्य जिज्ञासु पाठकों के लिये भी अपनी परम उपयोगिता रखता है। अपनी उपयोगिता एवं लोकप्रियता के कारण ही अपने चार संस्करणों की यात्रा पूर्ण कर अपने पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित अभिनव पंचम संस्करण के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है।

● प्रस्तुत संशोधित एवं परिवर्धित पंचम् संस्करण में कुछ नवीन उपयोगी निबन्धों का समावेश करके तथा निबन्धों को उनके प्रतिपाद्य के अनुसार निम्न पाँच खण्डों में विभक्त कर—प्रथम खण्ड—**संस्कृतम् संस्कृतिश्च**, द्वितीय—**वेदाः वेदाङ्गानि च**, तृतीय—**भारतीयदर्शनम् इतिहासपुराणम्**, चतुर्थ—**काव्यम् कवयश्च**, पंचम—**प्रकीर्णाः निबन्धाः**, यथाक्रम सुनिविष्ठ किया गया है जिससे समानवर्गीय विषयों से सम्बद्ध निबन्ध एक साथ पढ़ने में उपलब्ध हो सकें। इस प्रकार इस ग्रन्थ को और भी अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है जिससे छात्रगण एवं सामान्य पाठक अधिकाधिक लाभान्वित हो सकें।

आकार : डिमाई　　मूल्य १५.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार—

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी प्रशिक्षण साहित्य

☆ ☆ ☆

भारतीय शिक्षा
(Indian Education)

भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक
सं० डा० आत्मानन्द मिश्र — १५.००

शिक्षा में नव चिन्तन
सं० डा० रामपालसिंह — २०.००

आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा
डा० सरयूप्रसाद चौबे — १४.००

आधुनिक भारतीय शिक्षा [इतिहास और समस्याएँ]
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी — १६.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी, पी० डी० पाठक — १५.९५
पुस्तकालय संस्करण — २२.५०

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
पी० डी० पाठक — २४.००
पुस्तकालय संस्करण — ३५.००

भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ
रामखेलावन चौधरी, राधावल्लभ उपाध्याय — १५.००

भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
डा० सरयू प्रसाद चौबे — १४.००

हमारी शिक्षा समस्याएँ
डा० सरयू प्रसाद चौबे — १८.००

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री
डा० रामशकल पांडेय — १२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियां
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी — १७.००
पुस्तकालय संस्करण — २२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग : कोठारी कमीशन
पी० डी० पाठक एवं त्यागी — ६.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर — २८.००
पुस्तकालय संस्करण — ४०.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर — १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
पी० डी० पाठक — १८.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा — १८.००
राधावल्लभ उपाध्याय — पु० सं० २८.००

Educational Psychology — 32.00
Dr. S. S. Mathur — Lib. Edn. 40.00

शिक्षा-सिद्धान्त और शिक्षणकला
(Principles and Methods of Education)

शिक्षा के सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी — १५.००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी — २४.००
पुस्तकालय संस्करण — ३२.००

शिक्षा-सिद्धान्त
डा० एस० एस० माथुर — १७.००

शिक्षा के मूल सिद्धान्त
डा० रामशकल पाण्डेय — २१.००
पुस्तकालय संस्करण — २८.००

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
डा० सरयूप्रसाद चौबे — २०.००
पुस्तकालय संस्करण — २४.००

Philosophical and Sociological Foundations of Education
Dr. S. P. Chaube, Akhilesh Chaube — 20.00
Lib. edn. 30.00

An Introduction to Major Philosophies of Education
Dr. R. S. Pandey — 14·00
Lib. Edn. 20·00

Principles of Education — 20.00
Dr. R. S. Pandey — Lib. Edn. 30.00

A Sociological Approach to India Education
Dr. S. S. Mathur — 28.00

[शेष आवरण के तृतीय पृष्ठ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 18 : अंक 8]
अगस्त, 1983

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर
18·00

[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा—2
फोन : 76486

वर्तमान शिक्षा प्रणाली—अपूर्ण

यदि बिना किसी हिंसात्मक क्रांति के बड़े पैमाने पर परिवर्तन करना है तो केवल एक ही साधन है—वह है 'शिक्षा'। परन्तु शिक्षा जादू की ऐसी छड़ी नही है जिसके इशारे पर हमारी सभी अभिलाषाएँ पूर्ण हो जाएँ। यह एक ऐसा कठोर साधन है, तपस्या है, जिसके प्रभावी एवं इच्छित उपयोग के लिये मनोबल, एकाग्रता तथा त्याग की आवश्यकता है। किन्तु यह एक ऐसा विश्वसनीय तथा प्रामाणिक साधन है जिसने विकास के लिये अन्य देशों के संघर्ष में उनका साथ दिया है। यदि भारतीयों में इच्छा और कौशल है तो भारत में भी शिक्षा, राष्ट्रीय विकास के कार्यों को करके दिखा सकती है।

शिक्षा, राष्ट्रीय विकास तथा समृद्धि के कार्य को तभी कर सकती है अब शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली को गुणात्मक तथा संख्यात्मक दोनों ही दृष्टियों से समुचित रूप से संगठित किया जाय। डा० कोठारी की अध्यक्षता में गठित आयोग ने शिक्षा को वास्तविक जीवन से जोड़ने के महत्त्व को स्वीकार करते हुए उक्त उद्गार प्रगट किये थे। आज उसके निर्णय को लगभग १८ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं।

हमारे अनेक वर्तमान एवं भूतपूर्व नेता, राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद् एवं समाज सुधारक, इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि वर्तमान शिक्षा-प्रणाली दोषपूर्ण है तथा उसमें व्यापक सुधार की आवश्यकता है। लेकिन सबसे अधिक आश्चर्य की बात है कि जिम्मेदार लोग ही वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में दोष निकाल रहे हैं और खेद का विषय है कि वे समर्थ होते हुए भी सुधार की आज बातें ही करते हैं, उसे क्रियान्वित नहीं कर पाते। क्या हम यह समझ लें कि उनके पास शिक्षा-सुधार सम्बन्धी किसी ठोस योजना का अभाव है, निर्देशन अपूर्ण है या साधनों का अभाव है। जो भी कुछ हो गत १८ वर्षों से कोठारी समिति के सुझावों के उपरान्त भी हमारी शिक्षा प्रणाली बद से बदतर होती जा रही है और उसमें आज के स्नातक या स्नातकोत्तर व्यक्ति के लिये सामाजिक व व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करने की, अपना स्थान बनाने की कोई क्षमता नहीं है।

हमारे यहाँ सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि शिक्षा क्षेत्र में या तो सुधार की बात कोई उठाता नहीं है और यदि उठाता भी है तो बड़े जोर शोर से उठकर सभा, उत्सवों, अखबारों एवं सरकारी फाइलों तक

[शेष पृष्ठ ३ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी द्वारा लिखित

बी० ए० गृह-विज्ञान की छात्राओं के लिए

गृह-विज्ञान-शिक्षण

गृह-व्यवस्था एवं गृहकला

HOUSEHOLD MANAGEMENT & HOUSEHOLD ART

प्रस्तुत पुस्तक में इस तथ्य का पूर्णरूपेण ध्यान रखा गया है कि छात्र-छात्राओं को वांछित सामग्री एक ही स्थान पर उपलब्ध हो जाए। विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० ए०, बी० एस-सी० (गृह-विज्ञान) की परीक्षा हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार इसमें सम्पूर्ण विषय-सामग्री उपलब्ध है। सात खण्डों में विभक्त 36 अध्यायों में इसकी विषय-वस्तु को सरल, बोधगम्य एवं वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

ग्यारहवाँ संस्करण 1983 16.50

पोषण एवं आहार विज्ञान

FOODS AND NUTRITION

इस पुस्तक में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा बी० ए० (गृह-विज्ञान), के पाठ्यक्रम में निर्धारित "पोषण एवं आहार विज्ञान" सम्बन्धी अपेक्षित सामग्री को सात खण्डों में विभाजित 35 अध्यायों में सरल, रोचक एवं व्यावहारिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें माध्यमिक (हायर सैकेण्डरी) कक्षाओं में प्राप्त ज्ञान का अभिनव विकास है तथा बी० ए० स्तर की सामग्री का संयोजन है।

पूर्णतः संशोधित एवं परिवर्द्धित ग्यारहवाँ संस्करण 1983 (प्रेस में)

मातृकला एवं शिशु कल्याण

MOTHERHOOD & CHILD WELFARE

प्रस्तुत पुस्तक में "मातृत्व एवं शिशु-कल्याण" सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता व उसकी प्राप्ति के साधन बताए गए हैं। इस पुस्तक की विषय-वस्तु आठ भागों में विभाजित करके 26 अध्यायों में प्रस्तुत की गई है।

बारहवाँ संस्करण 1983 मूल्य 15.00

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त

FUNDAMENTALS OF TEXTILES

वस्त्रोद्योग की महत्ता, उन्नति तथा विकासानुरूप वस्त्रोत्पादन तथा वस्त्रों की देखभाल व सफाई-धुलाई एक विस्तृत विषय बन गया है। आधुनिक गृहिणी को इस विषय का विधिवत् ज्ञान होना उपयोगी ही नहीं, आवश्यक प्रतीत होता है। वस्त्रोत्पादन तथा सफाई-धुलाई सम्बन्धी ज्ञान 'गृह-विज्ञान' विषय का एक विशेष अंग मान लिया गया है। आज यह विषय विश्वविद्यालयीन महत्त्व का हो गया है। प्रस्तुत पुस्तक में प्रारम्भ से अन्त तक लेखिका का केवल एक ही दृष्टिकोण रहा है कि छात्राएँ एवं गृहणियाँ वस्त्र विज्ञान से सम्बन्धित व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करें तथा उनमें वस्त्र की सुरक्षा, महत्त्व एवं चयन के प्रति रुचि उत्पन्न हो। पुस्तक पाँच खण्डों में विभाजित होकर अठारह अध्यायों में प्रस्तुत है।

तेरहवाँ संस्करण 1982 मूल्य 8.50

स्वास्थ्य विज्ञान तथा जन स्वास्थ्य

HYGIENE & PUBLIC HEALTH

जी० डी० सतसंगी

प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न विश्वविद्यालयों के बी० ए० (गृह-विज्ञान) के पाठ्यक्रमानुसार तैयार की गई है। विद्वान लेखक ने 14 अध्याओं में विषय-सामग्री को विभाजित करके सरल एवं सुबोध ढंग से प्रश्नोत्तर शैली में प्रस्तुत करने का पूरा-पूरा प्रयास किया है।

संशोधित एवं परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण 1982 मूल्य 11·00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नैतिक शिक्षा विशेषांक' अपनी-अपनी दृष्टि में

प्रधान सम्पादक : डा० रामशकल पाण्डेय
सम्पादक : विनोद कुमार अग्रवाल
प्रकाशक : विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
मूल्य : बीस रुपए । पृष्ठ संख्या : २२४ पृष्ठ ।

शिक्षा एवं मनोविज्ञान, साहित्य तथा संस्कृति की सम-सामयिक गतिविधियों के परिचायक मासिक पत्र 'साहित्य परिचय' द्वारा गत तेरह वर्षों से राष्ट्र एवं समाज के लिए उपयोगी विषयों पर उत्कृष्ट विशेषांकों का प्रकाशन होता आ रहा है। "नैतिक शिक्षा" विशेषांक इस विशिष्ट परम्परा की अगली कड़ी है। विषय-सामग्री की दृष्टि से यह एक अत्यन्त उपादेय, पठनीय तथा संग्रहणीय विशेषांक है।

'नैतिक शिक्षा विशेषांक' में अधिकारी-विद्वानों द्वारा प्रणीत तिरेसठ लेखों का संकलन किया गया है। नैतिकता का स्वरूप, राष्ट्रीय उत्थान का आधार नैकिकता, आज के सन्दर्भ में नैतिकता, धर्म और नैतिकता, नैतिक मूल्य, शिक्षा में नैतिकता, शालाओं में नैतिक शिक्षा, शिक्षक तथा नैतिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा एवं अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा देशभक्ति आदि निबन्ध शीर्षकों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत विशेषांक में नैतिक शिक्षा के विविध आयामों का निरूपण किया गया है। इन निबन्धों के माध्यम से अधिकारी विद्वानों तथा मनीषी चिन्तकों ने वैयक्तिक एवं सामूहिक जीवन की गतिशीलता में बाधक तत्वों तथा कारकों का प्रामाणिकता के साथ मंचन कर उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं।

आज हमारा राष्ट्र, हमारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन, हमारी शिक्षा व्यवस्था गहन नैतिक संकट से ग्रस्त है। नैतिकता के अभाव के परिणामस्वरूप ही आज देश में जीवन मूल्यों में गिरावट आ रही है तथा देश का प्रत्येक नागरिक भ्रष्टाचार हिंसा, साम्प्रदायिकता, विषमता, अभाव एवं तनावों से संत्रस्त है। हमारी शिक्षा व्यवस्था भी अनेक कारणों से बहुत कुछ प्रभावहीन तथा अप्रासंगिक बनती जा रही है। प्रस्तुत विशेषांक के प्रत्येक निबन्ध में नैतिकता के इस गहरे संकट तथा उसके परिणामों को अनुभव कर अनेक दिशा-निर्देशक तथ्य एवं संकेत प्रस्तुत किये गये हैं, जो जीवन-निर्माण तथा समाज-निर्माण में प्रेरक और सहायक हैं।

'साहित्य-परिचय' का यह नैतिक शिक्षा विशेषांक नैतिकता, धर्म, चरित्र तथा शिक्षा पर स्वयं में एक सामायिक पूर्ण ग्रन्थ है, तथा न केवल शिक्षार्थियों, वरन् देश की वर्तमान नीति भ्रष्टता से उद्वेलित शिक्षाशास्त्रियों के लिये भी दिशा-निर्देशक है। इस विशेषांक की अपनी एक सामाजिक आवश्यकतां तथा उपादेयता है, तथा यह हमको अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला है।

विशेषांक का मुखपृष्ठ, मुद्रण तथा साज-सज्जा पूर्ववर्ती विशेषांकों की भाँति सुन्दर तथा उत्तम है।

यह ज्ञातव्य है कि साहित्य-परिचय का प्रकाशन गत सत्रह वर्षों से विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा से किया जा रहा है तथा इससे पूर्व बारह विशेषांकों का प्रकाशन किया जा चुका है, जिसमें 'शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति', 'शिक्षा-समस्या,' 'पाठ्यक्रम', 'शिक्षा और राजनीति,' 'शैक्षिक प्रगति', '१०+२+३ शिक्षा प्रणाली', 'प्रौढ़ शिक्षा', 'बाल समस्या' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। विशेषांकों की इस परम्परा की अगली कड़ी है— 'शैक्षिक तकनीकी' विशेषांक।

—दैनिक अमर उजाला, आगरा

[पृष्ठ १ का शेषांश]

ही सीमित रह जाती है, व्यावहारिक रूप में कार्यान्वित नहीं हो पाती। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है— '10+2+3 शिक्षा-प्रणाली'। इस नई शिक्षा प्रणाली को कई शिक्षा-शास्त्रियों एवं राजनीतिज्ञों ने एकमत से स्वीकार किया, उसके क्रियानवयन के लिये कुछ प्रयत्न भी हुए, कुछ क्षेत्रों में यह नई '10+2+3 शिक्षा-प्रणाली' लागू भी हुई। किन्तु पूरी ईमानदारी से प्रत्येक क्षेत्र में इसका क्रियानवयन नहीं हो पाया और यह शिक्षा-प्रणाली अब भी फाइलों के ढेर में सिसक रही है। जिसके बारे में अब सम्भवतः हमारे कतिपय शिक्षाधिकारी फिर पुनर्जीवित करने के प्रयास में लगे हैं—ऐसा सुना जा रहा है।

यह निश्चित बात है कि हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित करने में एवं उसे कुण्ठाग्रस्त करने में हमारी वर्तमान शिक्षा-पणाली ही उत्तरदायी है। यदि इस तथ्य को आज के सक्षम शिक्षाधिकारी व शिक्षाविद् समझ लें, तो देश की जो करोड़ों रुपये की सम्पत्ति इस वर्ग द्वारा उपेक्षित की जा रही है, वह न होगी और एक कुण्ठाग्रस्त शक्ति—सृजनात्मक शक्ति में परिणत होगी। इसके जो भी परिणाम सामने आयेंगे, वह निश्चय ही हम सभी के लिये सुखद एवं गौरवपूर्ण होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के श्रेष्ठ प्रकाशन

मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त
डा० जं० डी० शर्मा २५.००

नैदानिक-मनोविज्ञान
डा० रामपाल सिंह वर्मा २५.००
प्रा. ले. : डा० एम. ए. शाह पु० सं० ३५.००

मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय
डा० आर० के० ओझा १०.००

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.५०

आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान २०.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३०.००

सामान्य मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर २०.००

सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा
भाई योगेन्द्रजीत १०.००

असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार २१.२५
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी पु० सं० ३२.००

असामान्य मनोविज्ञान (बी० ए० के लिए) २०.००
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी पु० सं० २८.००

Abnormal Psychology : A dynamic Approach Dr. Govind Tiwari (In Press)

समाज मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन
डा० एस० एस० माथुर १४.००

समाज मनोविज्ञान (For Advanced Study)
डा० एस० एस० माथुर २५.००

शिक्षा-मनोविज्ञान २८.००
डा० एस० एस० माथुर पु० सं० ४०.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
प्रो० पी० डी० पाठक १८.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिह वर्मा, १८.००
डा० राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology 32.00
Dr. S. S. Mathur Lib. edn. 40.00

बाल मनोविज्ञान : बाल विकास
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव २२.५०

बाल मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १७.००

बाल विकास तथा पारिवारिक सम्बन्ध
डा० सरयूप्रसाद चौबे १५.००

सांख्यिकी के मूल तत्त्व
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा में सरल सांख्यिकी
डा० रामपालसिंह वर्मा ८.००

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार
डा० गोविन्द तिवारी १८.००

मनोविज्ञान शोध-विधियाँ
प्रो० एम० ए० हकीम, बिपिन अस्थाना १५.००

शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व
एस० पी० सुखिया
वी० पी० मेहरोत्रा, आर० एन० मेहरोत्रा (प्रेस में)

आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान २४.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३५.००

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
प्रो. एम. ए. हकीम, डा० बिपिन अस्थाना १४.००

औद्योगिक मनोविज्ञान २०.००
डा० आर० के० ओझा पु० सं० २५.००

विकासात्मक मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

व्यावहारिक मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह,
प्रो० सत्यदेवसिंह, डा० देवदत्त शर्मा २०.००

शैक्षिक मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० अग्रवाल, डा० बिपिन अस्थाना १८.००

Measurement & Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana, Dr. Agarwal 25.00
Lib. edn. 35.00

मनोवैज्ञानिक परीक्षण डा० एम. ए. शाह १७.००
कुमारी कुसुम माथुर पु० सं० २५.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपाल सिंह वर्मा ६.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमचन्द के स्त्री-शिक्षा विषयक विचार

डॉ० पुष्पलता सक्सेना
१७५, महेशप्रसाद स्ट्रीट, मौलवीगंज, लखनऊ

एक शिक्षाशास्त्री के रूप में प्रेमचन्द के विचार उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितने एक साहित्य-चिन्तक के रूप में। यह एक सर्वविदित सत्य है कि प्रेमचन्द एक उच्च कोटि के कथाकार होने के साथ ही साथ एक शिक्षक और शिक्षाधिकारी भी थे। उनका सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप में दीर्घकाल तक शिक्षा से रहा है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा का सदुपयोग तभी हो सकता है, जब वह मानवीय व्यक्तित्व के विकास का आधार बने; क्योंकि शिक्षित व्यक्ति की चेतना उसे अपने दायित्व के निर्वाह में सक्षम बनाती है। "कुछ विचार" नामक निबन्ध संग्रह में उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा है कि "हम में से जिनको सर्वोत्तम शिक्षा और सर्वोत्तम मानसिक शक्तियाँ मिली हैं, उन पर समाज के प्रति उतनी ही जिम्मेदारी भी है। हम उस मानसिक पूँजीपति को पूजा के योग्य नहीं समझेंगे, जो समाज के पैसे से ऊँची शिक्षा प्राप्त कर, उसे स्वार्थ साधन में लगाता है। समाज से निजी लाभ उठाना ऐसा कार्य है, जिसे कोई साहित्यकार कभी पसन्द न करेगा। उस मानसिक पूँजीपति का भी कर्त्तव्य है कि वह समाज के लाभ को अपने निज लाभ से अधिक ध्यान देने योग्य समझे—अपनी विद्या और योग्यता से समाज को अधिक से अधिक लाभ पहुँचाने की कोशिश करे।"

उपर्युक्त शैक्षिक विचारों की पृष्ठभूमि में यदि प्रेमचन्द के शिक्षा-विषयक मन्तव्यों का अवलोकन किया जाय, तो ज्ञात होगा कि वह स्त्री की शिक्षा के कट्टर समर्थक थे और उसे युग जीवन की एक अपरिहार्य आवश्यकता समझते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि भारतीय नारी अशिक्षा और अज्ञान के कारण ही शोषण का शिकार रही है। अतएव उसे सर्वप्रथम शिक्षित होना चाहिए, क्योंकि तभी उसके व्यक्तित्व का विकास होगा और स्वावलम्बन की दिशा में आगे बढ़ने की उसे प्रेरणा मिलेगी। प्रेमचन्द की बहुसंख्यक रचनायें इस दृष्टि से न केवल स्त्री-शिक्षा का समर्थन करती हैं वरन् उसकी व्यावहारिक उपयोगिता भी दर्शाती हैं।

प्रेमचन्द की दृष्टि में शिक्षा एक ऐसी विकासशील प्रक्रिया है, जो मानव-जीवन में सतत् गतिवान रहती है। प्रेमचन्द ने स्त्री में दिव्य गुणों की स्थापना के लिए शिक्षा को आवश्यक माना है। शिक्षा के अभाव में नारी अपने अधिकार एवं कर्त्तव्यों के प्रति भी सजग नहीं रह सकती है। वह नारी को शिक्षा के साथ-साथ कानूनी अधिकार भी दिलाने का समर्थन करते हैं। इसके विपरीत केवल कानूनी अधिकार भी पर्याप्त नहीं है। शिक्षा के अभाव में वह अपने प्राप्त अधिकारों का उपयोग भी उचित रूप से करने में असमर्थ रहेगी। अतः प्रेमचन्द स्त्री की अनिवार्य शिक्षा के समर्थक हैं। 'गबन' में उन्होंने रतन के पति, हाईकोर्ट के एडवोकेट, काशी के सर्वाधिक विख्यात वकील पं० इन्द्रभूषण से प्रश्न करवाया है कि "आपके बोर्ड में लड़कियों की अनिवार्य शिक्षा का प्रस्ताव कब पास होगा? जब तक स्त्रियों की शिक्षा का काफी प्रचार न होगा, हमारा कभी उद्धार नहीं होगा।"

प्रेमचन्द ने नारी जीवन के विकास के लिए शिक्षा को प्रमुखतः स्वीकारा है। शिक्षित स्त्री अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक रह सकती है, समाज से लड़ सकती है और आत्मनिर्भर होकर स्वाभिमान से जीवन-यापन कर सकती है। इसके अभाव में नारी चाहे जितना भी कार्य करे, त्याग करे, कष्ट सहे, अपनी आकांक्षाओं को अपने हृदय में घोंट कर जीवन-पर्यन्त संघर्ष करती रहे, सब व्यर्थ है। वे नारी को शिक्षा के साथ-साथ पुरुषवत् कानूनी अधिकार भी दिलवाने के लिए प्रयत्नशील दिखाई पड़ते हैं। उनकी धारणा है कि कानूनी अधिकारों के अभाव में पुरुष उस पर अत्याचार करता रहेगा, हावी रहेगा और उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमाई को ऐंठता रहेगा। अत: उन्होंने पुरुष की अपेक्षा स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता पर अधिक बल दिया है। 'गोदान' शीर्षक उपन्यास में नगर की नयी संस्था 'वीमेन्स लीग' में प्रो० मेहता से प्रेमचन्द ने जो भाषण दिलवाया है, उसमें भी उन्होंने इसी तथ्य को स्पष्ट किया है : "मैं नहीं कहता देवियों को विद्या की जरूरत नहीं है और पुरुषों से अधिक है। स्त्री की विद्या और अधिकार हिंसा और विध्वंस में नहीं, सृष्टि और पालन में हैं।" प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में एक अन्य स्थान पर स्त्री-शिक्षा एवं पारिवारिक झगड़ों के उचित रूप से निवारण के लिए, विभिन्न समस्याओं को सुलझाने के लिए नारी-शिक्षा एवं उसके कानूनी अधिकारों को महत्त्वपूर्ण बताया है—"इसमें जरूरत इस बात की है कि स्त्रियाँ शिक्षित हों, और उसके साथ-साथ स्त्रियों को वे अधिकार मिल जायँ, जो पुरुषों को मिले हुए हैं।

प्रेमचन्द के विचारानुसार शिक्षित नारी अपने कर्त्तव्यों एवं अधिकारों को तो समझेगी ही और साथ ही साथ उसमें सहानुभूति, सद्भाव, दया, सेवा, त्याग, सुश्रूषा, प्रेम, करुणा तथा पवित्रता आदि उदार भावों का भी जन्म होगा। उसे जड़वत् नहीं समझा जायेगा, अपितु जागृति के नवोन्मेष में वह भी विचरण करना सीख जायेगी। इनकी यह भी धारणा है कि किन्हीं विषम परिस्थितियों में अपने परिवार की आर्थिक दुरावस्था के सुधार के लिए शिक्षित स्त्री नौकरी भी कर सकती है। पुरुष को आर्थिक सहयोग भी दे सकती है और उसके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर प्रत्येक समस्या के समाधान के लिए तत्पर रह सकती हैं। 'लांछन' में मिस लीला डाक्टर है। 'गोदान' उपन्यास की मिस मालती भी इसी व्यवसाय द्वारा अपना जीविकोपार्जन करती है। 'मिस पदमा' की मिस पदमा तथा 'गोदान' की मिस सुल्तान वकालत द्वारा आत्मनिर्भर बनी हैं। 'सती' की चिन्तादेवी तथा 'रानी सारन्धा' की सारन्धा सेना का वीरतापूर्वक सफल नेतृत्व करने में जहाँ अपनी बुद्धि-कौशल का परिचय देती हैं, वहाँ 'लांछन' में मिस खुरशैद, मिसेज़ टण्डन मिसेज बागड़ा, मिसेज़ पहिया, मिसेज़ मेहरा; 'स्मृति का पुजारी' की मिस इन्दिरा; 'त्यागी का प्रेम' की आनन्दीबाई तथा 'विश्वास' कहानी की मिस जोशी अपनी अनुपम प्रतिभा से ब्रह्म विद्या का दान करती हैं। घर को सजाने-सँवारने में भी शिक्षित नारी का सहयोग महत्त्वपूर्ण होता है।

प्राय: देखा गया है कि शिक्षित नारी निरर्थक, आधारहीन रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों की परिधि को तोड़ने के लिए भी प्रयत्नशील दिखाई देती है, क्योंकि वह प्रत्येक वस्तु एवं कार्य को तर्क तथा बुद्धि की कसौटी पर कसती है, तदुपरान्त उसका विश्वास एवं अनुकरण करती है। प्रेमचन्द की अवधारणा है कि भारतीय सामाजिक और पारिवारिक परिवेश स्त्री-शिक्षा के लिए कभी भी प्रोत्साहन-युक्त नहीं रहा। भारतीय परिवारों में बीसवीं शताब्दी के प्रथम अर्धांश तक स्त्री के लिए शिक्षा सर्वथा अनुपयोगी समझी जाती थी। स्वयं प्रेमचन्द के समय उच्च, मध्य और निम्न वर्ग की नारी अक्षर-ज्ञान मात्र को शिक्षा के नाम पर पर्याप्त समझती थी। प्रेमचन्द का संकेत है कि नारी-मनोविज्ञान को दृष्टि में रखते हुए उचित अवसर पर स्त्री ने शिक्षा की भूख जाग्रत करनी चाही। 'कायाकल्प' नामक उपन्यास में प्रेमचन्द ने मनोरमा नामक एक ऐसी पात्री की चारित्रिक व्यंजना की है जो अपने पार्श्ववर्ती परिवेश में क्षुब्ध और असन्तुष्ट रहती है। जब उसकी इस वृत्ति की तुष्टि हो जाती है, तो वह शिक्षा में रुचि लेती है : "उस दिन से मनोरमा को चक्रधर से कुछ स्नेह हो गया। पढ़ने-लिखने में उसे विशेष रुचि हो गयी। चक्रधर उसे जो काम करने को दे जाते वह उसे अवश्य पूरा करती। पहले की भाँति अब हीले हवाले न करती। जब उनके आने का समय होता तो वह पहले से ही आकर बैठ जाती और उनका इन्तजार करती। अब उसे उनसे अपने मन के भाव प्रकट करते हुए संकोच न होता। वह जानती थी कि कम से कम यहाँ उसका निरादर न होगा, उनकी हँसी न उड़ाई जायेगी।"

शिक्षा-रहित नारी की दुर्दशा प्रेमचन्द ने नागरिक और ग्रामीण समाज में दर्शायी है। 'नरक का मार्ग' शीर्षक कहानी में उन्होंने उसे केवल पुरुष की सम्पत्ति और यौन की तृप्ति का साधन मात्र माना है। उनके विचार से अशिक्षित स्त्री का भाग्य उस पक्षी से अधिक न था, जो एक सूने पिंजड़े की शोभा बढ़ाता है। 'शान्ति' कहानी में भी उन्होंने पति, सास, ननद, जेठानी तथा घर के समस्त बड़े सदस्यों के अत्याचारों की वेदना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ग्रस्त दर्शाया है। ऐसे वातावरण में स्त्री का जीवन भार हो जाता है। हृदय जर्जर हो जाता है तथा समाज द्वारा नियन्त्रित स्त्रियों की आत्मोन्नति उसी प्रकार रुक जाती है जैसे प्रकाश और वायु के बिना पौधे सूख जाते हैं।

प्रेमचन्द का निश्चित विश्वास है कि शिक्षा ही किसी राष्ट्र के उत्थान का मूल स्रोत होती है और सभी प्रकार की उन्नति का केन्द्रीय साधन भी है। इनका यह भी विश्वास है कि यदि स्त्री के प्रचार-प्रसार के लिए गैर-सरकारी स्तर पर भी प्रयास हो, तो अच्छा है। 'त्यागी का प्रेम' नामक कहानी में लाला गोपीनाथ एक ऐसे समाज-सुधारक एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं, जो स्त्री-शिक्षा को उसके विकास के लिए आवश्यक मानते हैं—"लाला गोपीनाथ ने एक कन्या पाठशाला खोली है, जिसमें शिक्षा की विभिन्न पद्धतियों पर गहनता से अध्ययन किया गया। समाज में यह पाठशाला सर्वप्रिय हो गयी। लाला गोपीनाथ ऐसे समाज-सुधारक हैं, जिन्होंने रूढ़िवादी माता-पिता की उस उदासीनता का परिशोध कर दिया, जो माता-पिता को कन्याओं की शिक्षा के प्रति उदासीन बनाये हुए थी।" प्रेमचन्द ने स्त्री-शिक्षा में केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं वरन् घर-गृहस्थी के समस्त कार्यों को भी आवश्यक माना है। लाला गोपीनाथ ने ऐसी पाठशाला खोली जिसकी शिक्षा-शैली कुछ ऐसी मनोरंजक थी कि बालिकायें एक बार जाकर मानो मन्त्र-मुग्ध हो जातीं। उसमें ऐसी व्यवस्था की गयी थी कि तीन-चार वर्ष में ही कन्याएँ घर-गृहस्थी के मुख्य कार्यों से परिचय हो जायँ। सबसे बड़ी बात थी कि उसमें धर्म शिक्षा का भी समुचित प्रबन्ध किया गया था। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमचन्द ने आज से काफी समय पूर्व स्त्रियों के लिए गृहविज्ञान की शिक्षा को उचित समझा था। व्यावहारिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा का समुचित प्रबन्ध उन्होंने किया।

संक्षेप में, प्रेमचन्द के स्त्री-शिक्षा विषयक विचार उनके नारी के प्रति दृष्टिकोण और नारी जीवन के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के व्यावहारिक स्वरूप की उपयोगिता स्पष्ट करते हैं। उन्होंने 'गबन' में जालपा की सहेलियों की फैशनपरस्ती और आधुनिकता की ओर संकेत करते हुए यह मत प्रकट किया है कि भारतीय स्त्री के लिए पाश्चात्य शिक्षा-प्रणाली ग्राह्य नहीं है। इसके विपरीत परम्परागत आदर्शों के आदर्श परिपुष्टि करने वाली शिक्षा ही भारतीय नारी को उसकी वास्तविक गरिमा की उपलब्धि करा सकती है। ●

Educational Psychology

Tenth Revised & Enlarged Edition 1983

By **Dr. S. S. Mathur**

Size Demy

●

pp. 732

●

Price : Rs. 32.00
Lib. Ed. Rs. 40.00

● The Tenth Edition of this Book is completely revised and modified. In it a number of changes have been incorporated. These include some additions in the chapter on motivation, personality, exceptional children and statistics.

● This book follows its unique style in presenting the Subject matter of human-learning. Its main emphasis is towards the understanding of the human-child—who has to be educated through formal and informal agencies.

● The present edition lays stress on the concepts of self-actualization. There is no doubt in it that in our country, there is great need to stress that our teacher may truly become self-actualizing persons. This book may leads towards this development & emergence of such teachers.

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बी० एड० के छात्रों के लिये विशेष सूचना

राजस्थान विश्वविद्यालय के वर्ष 1983-84 के बी० एड० के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

✡ ✡ ✡

निम्न पुस्तकें राजस्थान विश्वविद्यालय के बी० एड० के नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रमानुसार लिखी गई हैं। पुस्तकें सभी उच्चकोटि के शिक्षाशास्त्रियों एवं अनुभवी लेखकों द्वारा प्रस्तुत हैं। पुस्तकों की भाषा सरल एवं सरस है। शुद्ध भाषा एवं उचित मूल्य, इन पुस्तकों की प्रमुख विशेषता है। छात्राध्यापकों से निवेदन है कि कृपया नमूनार्थ प्रतियों के लिये पत्र-व्यवहार द्वारा सम्पर्क स्थापित करें।

अनुभवी लेखकों द्वारा शुद्ध भाषा में छपी हुई सस्ती पुस्तकें

प्रथम प्रश्नपत्र

● भारतीय समाज में शिक्षा — डा० रामपालसिंह वर्मा
(Indian Social Education) — वीणा भास्कर, कु० अंजू वर्मा

विषय-प्रवेश—1. शिक्षा का अर्थ (Meaning of Education) 2. शिक्षा के उद्देश्य तथा ध्येय (Aims and Objectives of Education) 3. आधुनिक भारतीय समाज के मूल्य एवं आकांक्षायें (Values and Aspirations of Present day Indian Society) 4. आधुनिक भारतीय समाज की विशेषतायें (Features of Moderm Indian Society) 5. समाजशास्त्रीय प्रत्यय (Sociological Concepts) 6. शिक्षा तथा सामाजिक परिवर्तन (Education and Social Change) 7. भारतीय समाज में परिवर्तन (Social Change in India) 8. भारतीय समाज में विद्यालय (Schools in Indian Society) 9. औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा (Formal and Non-formal Education) 10. समुदाय एवं विद्यालय (Community and Schools) **परिशिष्ट** 1—समाज का निर्विद्यालयीकरण (De Schooling Society) 2—शिक्षा का भविष्य विज्ञान 3—खुले विश्वविद्यालय 4—सामुदायिक सर्वेक्षण

मूल्य : 16.00
पुस्तकालय संस्करण : 22.50

द्वितीय प्रश्नपत्र

● अधिगम एवं विकास के मनो-सामाजिक आधार — डा० रामपालसिंह वर्मा
(Psycho-Social Bases of Learning and Development) — प्रो० राधावल्लभ उपाध्याय

विषय-प्रवेश—1. मनोविज्ञान का अर्थ एवं क्षेत्र (Meaning and Scope of Psychology) 2. शिक्षा-मनोविज्ञान (Educational Psychology) 3. मनोविज्ञान के सम्प्रदाय (Schools of Psychology) 4. गेस्टाल्ट मनोविज्ञान (Gestalt-Psychology) 5. मनोविश्लेषणवाद (Psycho-Analysis) 6. पियाजे एवं ब्रूनर (Piaget and Bruner) 7. शिक्षा-मनोविज्ञान की उपयोगिता (Utility of Educational Psychology) 8. अभिवृद्धि व विकास के सिद्धान्त (Principles of Growth & Development) 9. वंशानुक्रम एवं वातारण (Heredity & Environment) 10. विकास की अवस्थाएँ : शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था (Stage of Development : Infancy & Childhood) 11. विकास की अवस्थाएँ : किशोरावस्था (Stage of Development : Adolescence) 12. शारीरिक एवं गामक विकास (Physical & Motor Development) 13. मानसिक विकास (Mental Development) 14. सामाजिक विकास (Social Development) 15. संवेगात्मक विकास (Emotional Development) 16. व्यक्तित्व का अर्थ (Meaning of Personality) 17. व्यक्तित्व का माप (Assessment of Personality) 18. व्यक्तित्व की विभिन्नताएँ (Individual Differences) 19. बुद्धि का स्वरूप एवं मापन (Nature and Measurement of Intelligence) 20. अभियोग्यताएं (Aptitudes) 21. अधिगम के सिद्धान्त (Theories of Learning) 22. अधिगम एवं प्रेरणा (Learning and Motivation) 23. समूह प्रक्रिया (Groups Process) 24. विशिष्ट बालक (Special Children)

आकार : डिमाई | पृष्ठ : 360 | मूल्य : 16·00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभवी लेखकों द्वारा शुद्ध भाषा में छपी हुई सस्ती पुस्तकें

तृतीय प्रश्नपत्र

● विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य-शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा

(भारतीय शिक्षा की समस्याओं सहित)

School Organisation & Health Education

(With Problems of Indian Education)

विषय-प्रवेश—1. प्रधानाध्यापक (Headmaster) 2. अध्यापक (Teacher) 3. पाठ्यक्रम-सहगामी क्रियाएँ (Co-Curricular Activities) 4. शारीरिक-शिक्षा (Physical Education) 5. अनुशासन एवं स्वशासन (Discipline and Self-Government) 6. विद्यालय भवन (School Building) 7. प्रयोगशाला एवं साजसज्जा (Laboratory & Equipment) 8. विद्यालय पुस्तकालय (School Library) (9) गृह कार्य (Assigments) 10. मूल्यांकन एवं परीक्षा (Evaluation & Examination) 11. छात्रों का वर्गीकरण एवं क्रमोन्नयन (Classification and Promotion of students) 12. समय-सारणी (Time-Table) 13. विद्यालय-कार्यालय एवं अभिलेख (School-Office and Records) 14. शिक्षा की संवैधानिक व्यवस्थाएँ (Constitutional Provisions for Education) 15. राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता (National and Emotional Integration) 16. भारत में भाषा समस्या (Language Problems in India) 17. छात्र-असंतोष की समस्या (Problems of Students Unrest) 18. शिक्षा में भारतीयकरण की समस्या (Problems of Indianisation of Education) 19. धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की समस्या (Problems of Religious & Moral Education) 20. व्यावसायिक शिक्षा की समस्याएँ (Problems of Vocatical Education) 21. संस्थागत नियोजन (Institutional Planning) 22. स्वास्थ्य-शिक्षा (Health Education) 23. जनसंख्या-शिक्षा की समस्या (Problem of Population Education) 24. यौन-शिक्षा (Sex Education) 25. निर्देशन सेवायें (Guidance Services)

आकार : डिमाई   पृष्ठ : 328   मूल्य : 16.00

पुस्तकालय संस्करण : 22.50

चतुर्थ प्रश्नपत्र

● प्रभावी शिक्षण के आधार
डा० रामपालसिंह वर्मा, डा० देवदत्त शर्मा
प्रो० सत्यदेवसिंह, प्रो० पृथ्वीसिंह

विषय-प्रवेश—1. शिक्षण प्रक्रिया (Teaching Process) 2. शिक्षण हेतु योजना-निर्माण (Planning for Teaching) 3. अधिगम उद्देश्यों का स्वरूप एवं विशेषताएँ (Nature of objectives of Learning and Specifications) 4. शिक्षण रीतियाँ (Teaching Techniques) 5. विशिष्ट-पाठ-योजनाएँ (Specific Lesson Plans) 6. मूल्यांकन एवं मापन (Evaluation and Measurement) 7. विश्वसनीयता एवं वस्तुनिष्ठता (Reliability and Objectivity) 8. मूल्यांकन के प्रमापीकृत उपकरण (Standardised tools of Evaluation) 9. मूल्यांकन के अप्रमापीकृत उपकरण (Non-Standardised tools of Evaluation) 10. शिक्षा में सांख्यिकी (Statistics in Education) 11. सूक्ष्म-अध्यापन (Micro-Teaching) 12. दल-शिक्षण (Team Teaching) 13. क्षेत्राटन (Field Trips) 14. अभिक्रमित अध्ययन (Programmed Learning) 15. कार्य संगोष्ठी (Workshops) 16. परिचर्चा (Discusion)।

आकार-डिमाई   मूल्य : 14.00

पुस्तकालय संस्करण : 20.00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

EDUCATION & PSYCHOLOGY

OUR ENGLISH PUBLICATIONS

1. **Educational Psychology** (*Tenth Edition*) — 32.00
   Dr. S. S. Mathur — *Lib. edn.* 40·00
2. **A Sociological Approach to Indian Education** (*Sixth Edition*) — 28·00
   Dr. S. S. Mathur
3. **Philosophical and Sociological Foundations of Education** (*First Edition*) — 20·00
   Dr. S. P. Chaube, Akhilesh Chaube — *Lib. edn.* 30·00
4. **Principles of Education** — 20·00
   Dr. R. S. Pandey — *Lib. edn.* 30.00
5. **An Introducation to Major Philosophies of Education** (*First Edition, 1982*) — 14.00
   Dr. R. S. Pandey — *Lib. edn.* 20·00
6. **Educational Administration** — 22·00
   S. P. Sukhia — *Lib. edn.* 30·00
7. **Measurement and Evaluation in Psychology and Education** (*First Edition, 1983*) — 25·00
   Dr. Bipin Asthana, Dr. R. N. Agrawal — *Lib. edn.* 35·00
8. **School Health Education and Public Health** — 20·00
   Dr. S. P. Chaube — *Lib. edn.* 30·00
9. **Abnormal Psychology : A Dynamic Approach**
   Dr. Govind Tiwari — (In Press)
10. **Essentials of English Teaching** (*Sixth Edition, 1981*) — 20·00
    R. K. Jain
11. **Teaching English in India** (*First Edition, 1983*) — 12.00
    Dr. (Miss) Abha Rani Bisht
12. **Let Us Learn English** — 14·00
    M. S. Sachdeva

IN Q. A. SERIES

1. **B. Ed. Guide** (*Second Edition, 1981/82*) — 51·00
   N. R. Sharma
2. **Principles of Education** (*Second Edition*)
   P. D. Pathak and G. S. D. Tyagi — 12·00
3. **Basic Education** (*First Edition*)
   Pathak & Tyagi — 5·00
4. **Principles and Practice of Education** (*Revised Second Edition*) — 11·00
   Indra Sharma
5. **Educational Psychology** (*Third Edition*) — 15·00
6. **History and Problems of Indian Education** (*Revised Second Edition*) — 13·50
   Indra Sharma
7. **School Administration and Health Education** (*Enlarged Second Edition*) — 15·00
   Indra Sharma
8. **Teaching of English in India** — 8·00
   P. D. Pathak
9. **Educational and Vocational Guidance** (*First Edition*) — 15·00
   N. R. Sharma

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनौपचारिक शिक्षा : दर्शन तथा शिक्षा-व्यवस्था

डा० नीरजा शुक्ला
लेक्चरर, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली–16

पिछले एक दशक में अनौपचारिक शिक्षा का महत्त्व यकायक बढ़ गया लगता है। ऐसा नहीं है कि इस प्रकार की शिक्षा के विषय में पहले न तो सोचा गया हो, न इसे व्यवहार में लाया गया हो। यह निश्चित है कि इस प्रकार की शिक्षा का विश्वव्यापी आन्दोलन कभी पहले मूर्त्त रूप में प्रकट नहीं हुआ।

अनौपचारिकता का दर्शन

अनौपचारिकता का दर्शन लीक से हटकर सोच पाने का दर्शन है। यदि इसकी आवश्यकता औपचारिकता के विकल्प की तलाश में होती है, तो दूसरी ओर कुछ नया कर पाने का जोश होता है। एक प्रकार का खेद होता है जब कि हम कुछ कर सकते हैं, पर कर नहीं रहे हैं; क्योंकि हमारा प्रत्येक नया कदम अनजान भूमि पर पड़ने वाला है और अज्ञान का भय अपने में रोमांच उत्पन्न कर सकता है। केवल कुछ ही लोग, जो समाज की जरूरत समझते हैं और उस जरूरत को पूरा करने के लिए दृढ़संकल्प हैं, नये कदम उठाते हैं। यह बात अलग है कि ऐसे व्यक्तियों में केवल नवाचार के प्रति आस्था ही नहीं होती वरन् अपने कार्य करने की योग्यता में पूर्ण विश्वास भी होता है। सफलता और असफलता का निर्णय, कार्य करने के पश्चात् ही किया जा सकता है। इसलिये सफलता की लालसा शायद अपने में उत्प्रेरक सिद्ध हो सकती है किन्तु किसी नवाचार का दर्शन नहीं बन सकती।

अनौपचारिकता कई अर्थों में विद्रोह का भी दर्शन है। जो कुछ होता रहा है उससे असन्तोष व्यक्त करने की सदेच्छा इस प्रकार के दर्शन में प्रकट होती है; साथ ही इसमें कई दिशायें और आदर्श भी निहित हैं। औपचारिकता यदि एक ओर व्यावहारिकता को पहचान देती है, तो दूसरी ओर इसमें नये आदर्शों को स्थापित करने की ललक भी होती है। अनौपचारिकता की पहचान किसी भी पद्धति में लचीलापन का समाप्त होना होता है और साथ ही उसमें आस्था भी कृत्रिम हो चली होती है। अनौपचारिकता की नींव सच्ची आस्था और विश्वास होता है। उसका आदर्शवाद केवल इसी बात में है कि जो आदर्श जीवन से दूर हट गये हैं उन्हें पुनः जीवन के पास लाना है। जितने अंश केवल औपचारिक हो चुके हैं उन्हें छोड़ देना है और उनके स्थान पर नये प्रयोगों द्वारा प्रामाणिक अथवा सिद्ध बातें लानी हैं।

अनौपचारिकता का मूल दर्शन गवेषणा, अन्वेषण तथा निरन्तर प्रयास है। गवेषणा अथवा निरन्तर प्रयास का अर्थ—कम खर्च और अधिक लाभ के सिद्धान्त पर चलकर समाज के हित में शैक्षिक अथवा अन्य समस्याओं को सुलझाना है। ये समस्यायें औपचारिकता के कारण भी जन्मी हो सकती हैं अथवा स्वयं समाज के स्वरूप, गठन या आदर्शों के आपसी सम्पर्क से भी उत्पन्न हो सकती हैं; उदाहरण के लिए, औपचारिक शिक्षा की समय-सारणी या पाठ्यक्रम या परीक्षा-प्रणाली ऐसी है कि अनेक छात्र-छात्रायें उन नियमों-उपनियमों में नहीं पढ़ सकते। अनौपचारिकता किस प्रकार शैक्षिक जगत् से हटे हुए इन बच्चों की चिन्ता कर सकती है, यह विषय स्वयं में गवेषणात्मक है। किसी भी समाज या स्वरूप या गठन; जैसे—रंग या जाति-भेद की नीति शिक्षा के लिए कितनी घातक हो सकती है, इसके लिये भारतीयों को अमेरिका जाने की आवश्यकता नहीं है। यदि शिक्षा का कोई ऐसा तरीका निकल आये जो वर्तमान सामाजिक ढाँचे, उसके स्वरूप और हानिकारक व्यवस्थाओं अथवा मूल्यों में आमूल परिवर्तन करके शिक्षा के सहज रूप को सभी को स्वीकार्य बना दे, तो वह व्यवस्था लागू होने के पहले गवेषणात्मक कोटि की होगी। यही खोज, यही प्रयास अनौपचारिकता का मूल मन्त्र है।

यहाँ स्मरण रखना चाहिये कि मानव अपनी सहज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति के कारण किसी भी चीज से अनन्त काल तक प्रसन्न नहीं रह सकता। उसका असन्तोष खीज अथवा नवीन प्रयास का मूल होता है। इस इच्छा का कोई भी स्वरूप क्यों न हो, प्रत्येक स्वरूप मानव को प्रगति के लिए बाध्य करता है। यदि परिवर्तन प्रगति होता, तो जीवन में अनेक ऐसे परिवर्तन सम्भव हैं जो बिना खर्च या अधिक प्रयास के किये जा सकते हैं; किन्तु प्रत्येक परिवर्तन प्रगति नहीं। हमारा प्रगति से अर्थ मात्र परिवर्तन से नहीं वरन् उन सम्भावित उत्तरों से है जो सामाजिक समस्याओं के हल के रूप में आएँगे। और यह हल प्रगति की दिशा में अपने-अपने प्रकार के मील के पत्थर होंगे। चूँकि प्रत्येक खोज का स्वरूप नया होगा, काम करने वाले अनेक होंगे और उनके सामने आने वाली समस्याओं के प्रकार भी भिन्न होंगे, इसलिये यह प्रगति परिभाषा में बँधी प्रगति नहीं हो सकती। अतः एक ओर यदि अनौपचारिकता प्रगति के लिये होती है, तो दूसरी ओर वहाँ अपने पारिभाषिक स्वरूप को शब्दों में बँधा कोई रूप नहीं दे सकती। इसकी यदि कोई परिभाषा की बात हो, तो वह बात इतनी ही होगी—

"जो औपचारिक अधिक या सामान्य मान्यता प्राप्त नहीं है वही अनौपचारिक है।" मान्यता अथवा वैधता प्राप्त करने से पहले किये गये प्रयोग इसी श्रेणी में आते हैं। उन्हें स्थापित होने में काफी समय लगता है।

दर्शन की दृष्टि से उनमें स्वेच्छा का भाव प्रमुख होता है। यह स्वेच्छा यद्यपि अपनी मर्यादाओं में बँधी होती है परन्तु उसे क़ानून की सीमाओं में बँधा या मापा नहीं जा सकता। इसलिये जबकि औपचारिकता सरकारी तन्त्र से सम्बद्ध ही होगी, उसके नियम-उपनियम होंगे। उसका अनौपचारिक रूप प्रायः इस तंत्र में अपनी प्रयोगात्मक स्थिति तक बँधा ही रहता है। इसके लिये इस प्रकार की सीमा-रेखा बनाना आवश्यक नहीं है, फिर भी 'अधिकांश' की संज्ञा से अभिव्यक्त करना ही पड़ जाय, तब इस प्रकार के तन्त्र की परिधियाँ निश्चित करनी पड़ेंगी। यह अपने में इस बात का द्योतक है कि अनौपचारिकता में 'स्वेच्छा' का भाव मूल है, उसमें कवि की सी सृजनात्मकता निहित है और इसलिए इस प्रकार के प्रयोग में तर्क केवल सीमित ज्ञान है। प्रयोग के समाप्त होने पर और उसकी सफलता के स्थापित होने पर तर्क अपने आप उभर कर आ जाता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि औपचारिकता के स्तम्भ तर्क पर और अनौपचारिकता की आधारशिला अथवा बाह्य भूमि तर्क-रहित है। कहने में चाहे कितना ही विचित्र क्यों न लगे, किन्तु सही बात यह है कि जब औपचारिकता का तर्क उसके निरन्तर चलाये जाने तथा सम्मान देने के लिये हैं, जबकि अनौपचारिकता का तर्क उसको स्वीकार करने के लिये होता है।

अनौपचारिकता का दर्शन मानव की सहज आवश्यकता पर आधारित है। यह आवश्यकता किसी भी मूल की क्यों न हो, अन्ततः आदर्श को लेकर चलने की होती है। तर्क, आवश्यकता, नित्य नवीन आधार की खोज में गुम्फित मानव की सहज प्रकृति औपचारिक शिक्षा की पृष्ठभूमि है।

अनौपचारिक शिक्षा के विशिष्ट अंग

(१) इस शिक्षा की सबसे बड़ी पहचान इस बात में है कि इसके द्वारा सीखने (लर्निंग) के नये अवसर मिलते हैं और यह सीखने के अवसर सभी क्षेत्रों में समान रूप से प्राप्त किये जा सकते हैं; उदाहरण के लिए—साक्षरता, खेती, उद्योग, व्यापार अथवा स्वास्थ्य या समाज-सेवा आदि। ध्यान देने की बात है कि यह सब अवसर औपचारिक शिक्षा द्वारा उपलब्ध सेवाओं या सुविधाओं से भिन्न होते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ है कि इनमें लचीलापन और मिलावट काफी हद तक सम्भव है और यही इस प्रकार दी गई शिक्षा का वैशिष्ट्य है।

(२) अनौपचारिक शिक्षा की सुविधा या अवसर कोई भी संस्था या एजेन्सी उपलब्ध करा सकती है। उसका धन या सहयोग सरकारी या गैर-सरकारी किसी भी माध्यम से आ सकता है। इसी प्रकार पढ़ाई के अवसर किसी पूर्व-निर्धारित कार्य-शैली, पाठ्यक्रम के अनुसार भी उपलब्ध कराये जा सकते हैं और अखबार पढ़ने, धार्मिक चर्चा, भाषणबाजी, या पारिवारिक बहस जैसे रूप में भी। इन सबकी अपने-अपने प्रकार से उपयोगिता है।

(३) अनौपचारिक शिक्षा, औपचारिक शिक्षा के नियम नहीं मानती; उदाहरण के लिए—स्कूल या कालेज का पाठ्यक्रम यहाँ नहीं चलता और न प्रवेश या परीक्षा के नियम ही यहाँ चल पाते हैं। बात यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर किसी डिग्री या डिप्लोमा की भी नहीं है।

(४) अनौपचारिक शिक्षा की प्रेरणा अपने ज्ञान में वृद्धि करना है। किसी कौशल को सीखना भी इसका उद्देश्य हो सकता है परन्तु ठीक उसी रूप में नहीं जैसी शिक्षा औपचारिक व्यवस्था के अन्तर्गत दी जाती है।

(५) चूँकि इस शिक्षा में किसी प्रकार का आयु का बन्धन नहीं है—इसलिये अनौपचारिक शिक्षा जीवन-पर्यन्त किसी भी अवस्था से किसी भी वयस तक चल सकती है। साथ-साथ यह मनुष्य की कोई विशेष जरूरत पूरी करने के लिए भी दी जा सकती है। इस प्रकार की लचीली, सुविधाजनक शिक्षा-व्यवस्था होने के कारण ही यह प्रणाली श्रेष्ठ मानी गई है और शायद इसीलिये इसका प्रचार और प्रसार भी अधिक हुआ है।

भारतीय सन्दर्भ में अनौपचारिक शिक्षा

जैसा सभी को ज्ञात है, भारतीय शिक्षा का औपचारिक रूप असफलताओं की श्रृंखलाओं का इतिहास है। शिक्षा का जीवन से सम्बन्ध केवल दूरी का है। पढ़ाई की पहली दो कक्षाओं में काफी संख्या में छात्र स्कूल छोड़ देते हैं और जो शेष रह जाते हैं वे भी कुछ अधिक नहीं सीखते। कक्षा-कार्य अरुचिपूर्ण होता है और अधिकांश छात्रों के लिए उसमें क्रियाशील होने, नया कुछ करने के अवसर ही नहीं मिलते। फिर सामाजिक एवं ऐतिहासिक कारणों से भारतीय जन-संख्या का बहुत बड़ा भाग अशिक्षित है। स्त्रियों और कमजोर वर्गों के लोग न तो स्वयं शिक्षा से अधिक लाभ उठा पाते हैं और न उनके बच्चे ही। स्पष्ट है कि औपचारिक शिक्षा इन समस्त या इनमें से अनेक का सही उत्तर नहीं है।

खेद की बात है कि अनौपचारिक शिक्षा को निर्धनों के लिए दी जाने वाली शिक्षा का पर्याय मान लिया गया है। वैसे यह सही है कि साधन-सम्पन्न लोग औपचारिक शिक्षा से भी सही लाभ उठा लेते हैं। किन्तु असार्थक पाठ्यक्रम, बँधी समय-सारणी, उबाने वाली पाठ्य-पुस्तकें और स्वयं अपने धंधे से विमुख अध्यापक किसी को भी शिक्षा के औपचारिक रूप से असम्पृक्त कर सकते हैं।

सही यह भी नहीं है कि अनौपचारिक शिक्षा केवल मन्द बुद्धि वाले लोगों के लिए है और कुशाग्र बुद्धि वालों के लिए इस शिक्षा में कुछ नहीं है। शिक्षा-सुविधा अथवा उससे होने वाले लाभ केवल आंशिक रूप से ही कुशाग्रता पर आश्रित होते हैं। अपने में यह मान्यता न केवल भ्रामक है वरन् समाज में वर्ग-भेद को ग्राह्य बनाने में सहायक होती है और कदाचित् इसी कारण से अधिक प्रचारित भी है। (क्रमशः)

बी० टी० सी० परीक्षा (द्वि वर्षीय) पाठ्यक्रम के अनुसार
प्रथम वर्ष हेतु

वर्ष १९८३ में प्रकाशित

नवीन प्रश्नोत्तरियाँ

☆ ☆ ☆

● **सरल शिक्षा-शास्त्र** —प्रो० शर्मा एवं सतसंगी ७.५०
● **सरल शिक्षा-मनोविज्ञान** ,, ,, ९.००
● **सरल शिक्षण-सिद्धान्त** ,, ,, ७.५०

सभी पुस्तकें बी० टी० सी० छात्राध्यापकों के लिये सरल एवं सरस भाषा में लिखी गई हैं। छात्रों के लिये नितान्त आवश्यक ये प्रश्नोत्तरियाँ नवीन पाठ्यक्रमानुसार हैं।

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[नवीन पाठ्यक्रमानुसार]

बी. टी. सी. परीक्षा (द्वि-वर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए हमारी प्रकाशित वर्ष १९८३-८४ की पाठ्य एवं सन्दर्भ पुस्तकें

प्रथम वर्ष हेतु

प्रथम प्रश्नपत्र– शिक्षाशास्त्र

बेसिक शिक्षाशास्त्र दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००
बेसिक शिक्षा सिद्धान्त प्रेमदत्त शर्मा ३.५०
शिक्षा के मूल सिद्धान्त डा० रामशकल पाण्डेय २१.००
शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त पाठक, त्यागी २४.००
शिक्षा-सिद्धान्त डा० एस० एस० माथुर १७.००

द्वितीय प्रश्नपत्र–शिक्षा मनोविज्ञान

बेसिक शिक्षा मनोविज्ञान भारद्वाज ७.५०
शिक्षा मनोविज्ञान डा० एस० एस० माथुर २८.००
शिक्षा मनोविज्ञान पी० डी० पाठक १८.००
शिक्षा मनोविज्ञान डा० वर्मा व उपाध्याय १८.००

तृतीय प्रश्नपत्र–शिक्षण सिद्धान्त

बेसिक शिक्षण सिद्धान्त दिनेशचन्द्र भारद्वाज ६.५०
शिक्षण कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन-पद्धतियाँ डा० एस० एस० माथुर १८.००
सफल शिक्षण कला पाठक, त्यागी १६.००

द्वितीय वर्ष हेतु

चतुर्थ प्रश्नपत्र–प्रारम्भिक शिक्षा की समस्यायें तथा अभिनव प्रवृत्तियाँ एवं शैक्षिक मूल्यांकन

प्राथमिक शिक्षा की समस्याएँ गंगामहेश मिश्र एवं अन्य ७.००
शैक्षिक मूल्यांकन एवं परामर्श पी० डी० पाठक ४.००

पंचम प्रश्नपत्र–पाठशाला प्रबन्ध, सामुदायिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा

पाठशाला प्रबन्ध, स्वास्थ्य शिक्षा एवं सामुदायिक संगठन दिनेशचन्द्र भारद्वाज ७.००

खण्ड (ख) शिक्षण विधियाँ

उद्यान-विज्ञान शिक्षण एम० एल० वर्मा ६.००
कृषि शिक्षण तथा बागवानी ,, ,, ६.००
गृह-शिल्प शिक्षण सत्यनारायण दुबे 'शरतेन्दु' ३.००
बी० टी० सी० वाणिज्य शिक्षण उदयवीर सक्सेना ४.००
शिल्प-शिक्षण सत्यनारायण दुबे ८.००
बी० टी० सी० पुस्तक कला शिक्षण ,, ,, ५.००

सहायक पुस्तकें

● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) प्रथम वर्ष [संस्करण १९८३/८४] शर्मा एवं सतसंगी १५.००
● **बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन** (गाइड) द्वितीय वर्ष [संस्करण १९८३/८४] ,, १२.५०

विशेष (१) अध्यापकों से प्रार्थना है कि वह उपहार प्रतियों (स्पेसीमेन) के लिये हमसे सीधे एवं तुरन्त सम्पर्क करें। अधिक पुस्तकें मँगाने पर अधिक कमीशन की भी सुविधा है।
(२) शिक्षण-विधियों के लिये उक्त पुस्तकों के अतिरिक्त अलग-अलग शिक्षण पर अलग-अलग पुस्तकें बी० एड० स्तर की उपलब्ध हैं, कृपया हमको लिखें।

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा, मनोविज्ञान एवं गृहविज्ञान

प्रभावी शिक्षण के आधार (प्रथम संस्करथ, १९८३) डा० रामपालसिंह वर्मा, डा० देवदत्त शर्मा, प्रो० सत्यदेवसिंह, प्रो० पृथ्वीसिंह, डिमाई, पृष्ठ २५२, छात्र संस्करण मूल्य १४.००, पुस्तकालय संस्करण २०.०० (राजस्थान विश्व० के बी० एड० के नवीन पाठ्यक्रमानुसार)

असामान्य मनोविज्ञान (संशोधित नवाँ संस्करण १९८३) डा० लाभसिंह, डा० गोविन्द तिवारी, डिमाई, पृष्ठ ५२२, मूल्य २०.००, पुस्तकालय संस्करण ३०.००

स्वास्थ्य-शिक्षा (संशोधित चौदहवाँ संस्करण, १९८३) डा. (श्रीमती) जी.पी. शैरी, डिमाई, पृ. ४४०, मूल्य १८.००

मातृ-कला एवं शिशु-कल्याण (संशोधित बारहवाँ संस्करण, १९८३) डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी, डिमाई, पृष्ठ ३९२, मूल्य १५.००

Educational Psychology (Revised & Enlarged Tenth edition 1983) Dr. S. S. Mathur, Demy, p. 746, Price Rs. 32.00, Lib. Ed. Rs. 40·00

विविध

हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि (संशोधित एव परिवर्द्धित षष्ठ संस्करण, १९८३) डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, डिमाई, पृष्ठ ५४४, मूल्य २५.५०

रचना रश्मि भाग—१ (संशोधित आठवाँ संस्करण १९८३) परमानन्द गुप्त, क्राउन, पृष्ठ १९०, मूल्य ५.००

रचना रश्मि भाग—२ (संशोधित सप्तम संस्करण १९८३) परमानन्द गुप्त, क्राउन, पृष्ठ, १६०, मूल्य ४·८०

सर्पदंश (उपन्यास) आशापूर्ण देवी, क्राउन, पृष्ठ १३१, मूल्य १८·००

रमइया तोर दुल्हन लुटे बाजार (हास्य व्यंग) के० पी० सक्सेना, क्राउन, पृष्ठ ९६, मूल्य १४.००

महाभारत (ज्ञान विज्ञान) अनु० डा० चन्द्रदत्त पालीवाल, डिमाई, पृष्ठ २२०, मूल्य २७.००

हंस बलाका, आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री, डिमाई, पृष्ठ ४१६, सूल्य १००.००

प्रेम में भगवान तथा अन्य कहानियाँ (कहानियाँ) रूपान्तर जैनेन्द्र कुमार, क्राउन, पृष्ठ २५७, मूल्य ४०.००

कलयुगी अमृत (कहानियाँ) सरोज द्विवेदी, क्राउन, पृष्ठ ६३, मूल्य १५.००

करौंदे का पेड़ (कहानियाँ) मधुसूदन आनन्द, क्राउन, पृष्ठ ८०, मूल्य १५.००

विज्ञप्ति

डॉ० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल, अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, राजा बलवन्तसिंह कॉलेज, आगरा ने "संस्कृत-शोध-सन्दर्भ" पुस्तक तैयार की है। इसका द्वितीय संस्करण अक्टूबर ८३ में प्रकाशित होने की सम्भावना है। इस पुस्तिका में ३० विश्वविद्यालयों में प्रारम्भ से लेकर अद्यतन काल तक होने वाली संस्कृत-शोध के विषयों की सूची है जिन्हें पी-एच. डी. मिल चुकी है और जिनके विषय स्वीकृत हो चुके हैं। (कार्यरत) उन सभी शोधार्थियों के विषयों की ३० वर्गों में विभाजित यह सूची अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है। विद्वानों ने इसकी बहुत प्रशंसा की है किन्तु अब भी इसमें पटना, बिहार, कलकत्ता, शान्ति निकेतन, रोहिलखण्ड, रांची, भागलपुर, दिल्ली आदि अनेक विश्वविद्यालयों की पूर्ण सूची नहीं आ सकी है। अतः सम्बन्धित विभागाध्यक्षों से विनम्र निवेदन है कि वे अविलम्ब कृतकार्य और कार्यरत संस्कृत शोधार्थियों की विषयों की सूची भिजवायें। आभार सहित उन्हें प्रकाशित किया जावेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा संचालित

प्रथमा विशारद साहित्यरत्न

उपवैद्य वैद्य विशारद एवं आयुर्वेदरत्न

आदि परीक्षाओं की

सं० २०४० (१९८३) के लिए

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकों की सूचियाँ

हमारे यहाँ से निःशुल्क उपलब्ध हैं

[सम्मेलन द्वारा (१) प्रथमा, (२) विशारद एवं (३) साहित्यरत्न परीक्षाओं की विवरण पत्रिकाएं हमारे द्वारा प्रथक-प्रथक प्रकाशित की जाती हैं, जो हमारे यहाँ से उपलब्ध हैं।]

अधिक जानकारी हेतु सम्मेलन की बड़ी विवरण पत्रिका ६-०० धनादेश से डाक व्यय सहित भेजकर रजिस्टर्ड डाक द्वारा हमसे प्राप्त करें।

- हम सम्मेलन परीक्षाओं की पुस्तकों के प्रमुख विक्रेता हैं।
- एम० ए० हिन्दी, संस्कृत, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान, बी० टी० सी० तथा बी० एड० की सभी पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें हमारे यहाँ से उचित मूल्य पर प्राप्त होती हैं तथा पुस्तक-सूची निःशुल्क भेजी जाती है।
- हमारे यहाँ पुस्तकें तुरन्त वी० पी० पैकिट द्वारा भेजने की व्यवस्था है।
- ग्राहकों की मांग के अनुसार सही पुस्तकें भेजना हमारी विशेषता है।
- सम्मेलन की परीक्षाओं के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की समस्या के लिये हमारी सेवाएँ सहर्ष प्रस्तुत हैं।

सम्मेलन परीक्षाओं के दिग्दर्शन (गाइडें) नवीन पाठ्यक्रमानुसार सभी तैयार हैं। कृपया पत्र-व्यवहार करें।

हमारी प्रमुख विशेषता है—

- शीघ्र एवं सन्तोषजनक सेवा
- मधुर व्यवहार
- प्रत्येक पत्र का तुरन्त एवं समुचित उत्तर

कृपया एक बार सेवा का अवसर दें।

विनोद पुस्तक मन्दिर

डा० रांगेय राघव मार्ग, आगरा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ
डा० एस० एस० माथुर १८.००

सफल शिक्षण कला
पी० डी० पाठक, त्यागी १६.००

शिक्षण-तकनीकी
(Technology of Teaching)

शिक्षण-तकनीकी
शैलेन्द्र भूषण एवं
डा० अनिलकुमार वार्ष्णेय १०.००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार
डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ १६.००

विद्यालय-प्रशासन
(School Administration)

Educational Administration 22.00
S. P. Sukhia Lib. edn. 30.00

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन
एस० पी० सुखिया १५.५५
पुस्तकालय संस्करण २५.००

शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००

विद्यालय व्यवस्था श्री केशवप्रसाद ७.५०

शिक्षा-प्रशासन डा० उमेशचन्द्र कुदेसिया १२.००

स्वास्थ्य-शिक्षा
(School Hygiene)

स्वास्थ्य-शिक्षा डा० जी० पी० शैरी १६.००

School Health Education & Public Health
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. Edn. 30.00

मापन एवं मूल्यांकन
(Measurement & Evaluation)

शैक्षिक मूल्याँकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.००

Measurement and Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana, Dr. Agrawal 25.00
Lib. edn. 35.00

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८.००

सांख्यिकी
(Statistics)

सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)
डा० एच० के० कपिल २७.७०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
डा० सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा-दर्शन
(Philosophy of Education)

भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ
पाठक एवं त्यागी (प्रेस में)

शिक्षा-दर्शन डा० रामनाथ शर्मा १५.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामशकल पाण्डेय १८.००
पुस्तकालय संस्करण २५.००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, त्यागी १८.००

निर्देशन
(Guidance)

शैक्षिक मापन एवं निर्देशन
उमेश प्रसाद सिंह ४.००

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श
डा० सीताराम जायसवाल १५.००

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
डा० रामपालसिंह वर्मा, उपाध्याय १६.००

Educational & Vocational Guidance
N. R. Sharma 15.00

तुलनात्मक-शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा
डा० सरयू प्रसाद चौबे ४०.००

शिक्षा व्यवस्थाएँ डा० सरयू प्रसाद चौबे १२.००

विषय-शिक्षण—इसके अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, संस्कृत, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान व अंग्रेजी-शिक्षण पर विभिन्न विद्वानों की लिखी सरल भाषा में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

उक्त सभी प्रश्नपत्रों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर रूप में भी पुस्तकें प्राप्य हैं।

सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना टिकट प्रेषण करने का प्रमाण-पत्र संख्या —AG—009

साहित्य-परिचय [अगस्त, 1983] पंजीबद्ध संख्या—L. AG.—038

[पूर्णतः संशोधित एवं परिमार्जित तेरहवाँ संस्करण १९८३]

बी० एड० दिग्दर्शन (गाइड)

सम्पादक
भाई योगेन्द्रजीत
दिनेशचन्द्र भारद्वाज
विनोदकुमार अग्रवाल

विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० एड० परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रमानुसार प्रश्नोत्तर शैली में लिखित प्रशिक्षण विद्यालयों में तहलका मचाने वाली विद्यार्थियों की लोकप्रिय पुस्तक

★

अद्यतन तेरहवें संस्करण में मेरठ, गोरखपुर, फैजाबाद एवं विशेष रूप से म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के नये पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न प्रकरण जोड़कर पुस्तक को अधुनातन रूप दिया गया है।

अनुक्रमणिका

- शिक्षा सिद्धान्त तथा भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक विचारधारा
- शिक्षा मनोविज्ञान
- भारतीय शिक्षा का इतिहास और समस्याएं
- पाश्चात्य शैक्षिक विचारधारा
- विद्यालय प्रशासन, संगठन और स्वास्थ्य-विज्ञान
- शिक्षण-कला एवं विभिन्न विषयों का शिक्षण

प्रमुख विशेषताएँ

☆ प्रस्तुत संस्करण में 'शिक्षा-सिद्धान्त' के प्रथम प्रश्नपत्र में शिक्षा और समाज, शिक्षा और राजनीति, शिक्षा और अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान, नैतिक शिक्षा, शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियाँ—मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक एवं समाहारक तथा स्वतन्त्रता और अनुशासन आदि नवीन अध्यायों का समावेश किया गया है।

☆ द्वितीय प्रश्नपत्र में मनोविज्ञान व्यवहार के रूप में, अध्ययन आदतों का विकास, निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण, समाजमितिक एवं क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रायोजना आदि विशेष प्रकरणों का समावेश।

☆ अन्य प्रश्नपत्रों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, आजीवन शिक्षा, औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा विद्यालय तथा समुदाय, जनसंख्या-शिक्षण, शैक्षिक तकनीकी आदि कतिपय विशिष्ट अध्यायों का उल्लेख विशेष रूप से उ० प्र० एवं म० प्र० की शिक्षा के सन्दर्भ में किया गया है।

☆ इसमें प्रश्नों का विस्तार एवं आकार विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार दिया गया है। जटिल एवं सूक्ष्म विषयों का प्रतिपादन, सरल, स्पष्ट और वैज्ञानिक ढंग से सरल भाषा में किया गया है।

☆ प्रस्तुत संस्करण का मुख्य आकर्षण : शिक्षणकला नामक खण्ड के अन्तर्गत विभिन्न विषयों—हिन्दी, इतिहास, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, गणित तथा गृहविज्ञान की शिक्षण-पद्धतियों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण सामग्री को सरल एवं सुबोध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सूचना—म० प्र० के विक्रम विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का अनुपूरक ३·०० रु० में उपलब्ध है।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण सभी दृष्टियों से उत्तम एवं उपलब्ध गाइडों में सर्वश्रेष्ठ व सस्ता है।

आकार : डिमाई   पृष्ठ संख्या : १४५०   मूल्य : ४५·००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

प्रकाशक एवं मुद्रक : विनोद कुमार अग्रवाल द्वारा कैलाश प्रिंटिंग प्रेस, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्षिक जगत के लोकप्रिय लेखक पी० डी० पाठक
एवं गुरसरन दास त्यागी की
बी० ए० एवं बी-एड० परीक्षा 1983-84 के लिये

छात्रोपयोगी कृतियाँ

● शिक्षा मनोविज्ञान—पी० डी० पाठक

विभिन्न विश्वविद्यालयों के बी० ए०, बी० एड०. विद्यार्थियों में अत्यन्त लोकप्रिय पुस्तक का तेरहवाँ संस्करण 1983; पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ हैं—दैनिक प्रयोग की चलती हुई भाषा, स्पष्टता के लिये दुर्बोध हिन्दी शब्दों के साथ अँग्रेजी के पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग, प्रमुख अनुवादित अवतरणों की मौलिक अंग्रेजी आदि।

आकार डिमाई पृष्ठ संख्या 600 मूल्य : 18.00
पुस्तकालय संस्करण 25.00

● भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं—पी० डी० पाठक

इस पुस्तक का लेखन बी० ए० एवं बी० एड० परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के परिवर्तित स्वरूप को ध्यान में रखकर किया गया है। भारतीय शिक्षा की समस्याओं के सम्बन्ध में विभिन्न समितियों एवं आयोगों; विशेषत: कोठारी कमीशन के विचारों को संकलित करके यथास्थान प्रस्तुत किया गया है। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले विभिन्न परीक्षणों एवं सर्वेक्षणों पर आधारित छात्रों की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिये अधुनातन तथ्यों एवं आँकड़ों को यथास्थान दिया गया है। छात्रगण—भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याओं का गहन एवं विस्तृत अध्ययन करने के लिये इस अकेली पुस्तक पर नि:संकोच रूप से निर्भर हो सकते हैं और प्रश्नों के उत्तर देने में अपनी विशेष योग्यता का परिचय दे सकते हैं।

संशोधित षष्ठ संस्करण 1983 मूल्य : 24.00 पु० सं० 35.00

● शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त—पाठक एवं त्यागी

प्रस्तुत पुस्तक के संशोधित संस्करण में प्रशिक्षण विद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर विषय-सामग्री को परिवर्तित एवं परिवर्द्धित करके पुन: समायोजित करने की यथाशक्ति चेष्टा की गई है। साथ ही पुस्तक की उपयोगिता में वृद्धि करने के लिये शैक्षिक विचारों को भारतीय शिक्षा की पृष्ठ भूमि में विवेचना की गई है। प्रस्तुत संस्करण अधिकांश विश्वविद्यालयों के एम० एड० के छात्रों की आवश्यकता की भी पूर्ति करता है।

आकार डिमाई संशोधित संस्करण मूल्य : 32.00

● सफल शिक्षण कला—पाठक एवं त्यागी

आधुनिक भारतीय शिक्षाविदों द्वारा शिक्षण-कला के प्रति विशेष ध्यान दिया जा रहा है क्योंकि उनको इस तथ्य का पूर्ण अनुभव है कि शिक्षण कला में कार्य दक्षता प्राप्त किये बिना किसी भी अध्यापक का शिक्षण सफल नहीं हो सकता है। वह अपने कार्य का सफल सम्पादन तभी कर सकता है जब शिक्षार्थी शिक्षण-कला के प्रत्येक पाठ से भली-भाँति अवगत हो। उनको इस लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायता देने के विचार से इस पुस्तक की रचना की गई है।

आकार डिमाई मूल्य : 16.00

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों से निवेदन

'साहित्य-परिचय' के पाठकों को विदित हो कि वर्ष 1983 का विशेषांक "शैक्षिक तकनीकी" पर शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है ।

कृपया अपनी विशेषांक की प्रति अग्रिम सुरक्षित करालें । जैसा कि विशेषांक के नाम से ही विदित है कि 'शैक्षिक तकनीकी' विशेषांक अपने आप में ही काफी दुरूह व तकनीकी विषय पर आधारित है, जिस पर हिन्दी में अद्यतन एवं उच्चकोटि की पुस्तकों का अभाव है । निश्चय ही विषय-वस्तु के महत्त्व को देखते हुए इसकी अत्यधिक माँग होना स्वाभाविक ही है ।

यदि आप अभी तक 'साहित्य-परिचय' के सदस्य नहीं हैं, तो मात्र 18.00 रु० वार्षिक शुल्क देकर अपनी विशेषांक की प्रति आज ही रजि० पोस्ट से आरक्षित करालें । जो पाठक सदस्य हैं, और उन्होंने वार्षिक शुल्क मात्र 15.00 ही भेजा है, उनसे निवेदन है कि डाक-व्यवस्था की स्थिति को देखते हुए, वे भी मात्र 4·00 रु० धनादेश अतिरिक्त भेजकर अपनी विशेषांक की प्रति रजि० पोस्ट से आरक्षित करालें । आपको एक वार विशेषांक भेजने पर, किसी कारणवश न मिलने पर, दुबारा विशेषांक की प्रति अमूल्य भेजना सम्भव न हो सकेगा ।

आशा है, आप विशेषांक के महत्त्व को देखते हुए तदनुसार शीघ्र ही धनादेश भेजने की व्यवस्था करेंगे ।

—व्यवस्थापक

बी० ए० गृह-विज्ञान की छात्राओं के लिए—

डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी द्वारा लिखित

गृह-व्यवस्था एवं गृहकला
ग्यारहवाँ संस्करण, १९८३
मूल्य : सोलह रुपये पचास पैसे

पोषण एवं आहार विज्ञान
ग्यारहवाँ संस्करण, १९८३
(प्रेस में)

गृह-विज्ञान साहित्य

वस्त्र-विज्ञान के मूल सिद्धान्त
तेरहवाँ संस्करण, १९८२
मूल्य : आठ रुपये पचास पैसे

मातृकला एवं शिशु कल्याण
बारहवाँ संस्करण, १९८३
मूल्य : पन्द्रह रुपये

स्वास्थ्य विज्ञान तथा जन स्वास्थ्य
जी० डी० सतसंगी
चतुर्थ संशोधित संस्करण, १९८३ मूल्य : ग्यारह रुपये

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-परिचय

[शिक्षा और साहित्य की प्रगति का परिचायक पत्र]

[वर्ष 18 : अंक 9]
सितम्बर, 1983

सम्पादक
विनोद कुमार अग्रवाल
एम० ए०, साहित्यरत्न

स्वामित्व
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

वार्षिक शुल्क : 15·00
रजिस्ट्री से विशेषांक मँगवाने पर 18·00
[विदेशों में—डाक व्यय सहित मात्र 40·00]

साहित्य-परिचय
डा० रांगेय राघव मार्ग
आगरा—2
फोन : 76486

भविष्य विज्ञान और शिक्षा

शिक्षा का सम्बन्ध निश्चय ही भविष्य से होता है। भविष्य की कल्पना करके ही हम किसी शैक्षिक उद्देश्य, शिक्षण-क्रम या शिक्षण-विधि का निश्चय करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में लिया गया 'आज का निर्णय' 'कल का यथार्थ' बन जाता है। आज जो भी कार्य हम शिक्षा के नाम पर कर रहे हैं उन सबका सम्बन्ध भविष्य से होता है और यदि हम भविष्य के आकलन में त्रुटि कर जाएँ, तो निश्चय ही उस त्रुटिपूर्ण भविष्य के सन्दर्भ में दी गई आज की शिक्षा भी त्रुटिपूर्ण हो जाएगी। अतः आज का शिक्षाशास्त्री अपने को उन उत्तरदायित्वों से पृथक नहीं रख सकता जिन्हें भविष्य के निर्माण के सन्दर्भ में उसे वहन करना है।

वुल्फगैंग क्लाफ्की (Wolfgang Klafki) ने शिक्षा को इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना है कि वह समाज एवं व्यक्ति के लिए एक विशिष्ट प्रकार के भविष्य का निर्माण करती है। क्रैम्प (W. Kramp) ने इस पर बल दिया है कि हम बालकों के लिए जिस प्रकार के ज्ञान, योग्यताओं एवं कौशलों के विकास का प्रविधान करते हैं, उनका आधार बालकों का 'भविष्य' होना चाहिए। हमें यह प्रश्न पूछना चाहिए कि बालकों के भविष्य के सम्बन्ध में उन सबका क्या महत्त्व है। शार्ब (A. O. Schorb) का विचार है कि वह शिक्षा व्यर्थ है, जो केवल 'आज' को ही ध्यान में रखती है। शिक्षा का उद्देश्य समाज एवं बालकों के भविष्य का निर्माण करना होना चाहिए। वास्तव में शिक्षा के दो उद्देश्य होने चाहिए—एक तो यह कि बालक उस विश्व के सम्बन्ध में विचार करने के योग्य बन सकें, जिसमें उन्हें आगे जीवन-यापन करना है। दूसरे यह कि वे अपनी शक्तियों का पूरा-पूरा विकास कर परिपक्वता को प्राप्त कर सकें। मैक्समूलर (Maxmuller) के दृष्टिकोण से शिक्षा विकासमान प्रतिक्षण परिणामी विश्व के लिए व्यक्तियों के निर्माण करने के गुरुतर दायित्व को वहन करती है। एतदर्थ शिक्षा-प्रक्रिया साधन है। अतएव 'विश्व' शिक्षा के विषय में पूरी सतर्कता बरतने की अपेक्षा रखता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यदि हम देखें तो ऐसा ज्ञात होता है कि हर युग में हर देश ने अपने बच्चों को जाने अथवा अनजाने उस 'विश्व' के लिए तैयार किया है, जिसकी संकल्पना उन्होंने की है। जिस ढंग से उन्हें तैयार किया गया, उसके आधार पर उस काल में यह

[शेष पृष्ठ ३ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बी० एड० के छात्रों के लिए विशेष सूचना

राजस्थान विश्वविद्यालय के वर्ष 1983-84 के बी० एड० के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

अनुभवी लेखकों द्वारा शुद्ध भाषा में छपी हुई सस्ती पुस्तकें

प्रथम प्रश्नपत्र

● भारतीय समाज में शिक्षा — डा० रामपालसिंह वर्मा

(Indian Social Education) — वीणा भास्कर

प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान विश्वविद्यालय के बी० एड० (नियमित तथा पत्राचार) तथा शिक्षाशास्त्री कक्षाओं के पाठ्यक्रमानुसार अत्यन्त ही सरल तथा सुगम भाषा में लिखी गई है, पुस्तक की भाषा शैली को यथासम्भव आकर्षक तथा बोधगम्य बनाकर 12 अध्यायों में एवं परिशिष्टान्तर्गत चार अध्यायों में सम्पूर्ण सामग्री निहित करके पूर्णतया छात्रोपयोगी बनाने की चेष्टा की गई है।

मूल्य ; 18.00

पुस्तकालय संस्करण 25.00

द्वितीय प्रश्नपत्र

● अधिगम एवं विकास के मनो-सामाजिक आधार — डा० रामपालसिंह वर्मा

Psycho-Social Bases of Learning and Development — प्रो० राधावल्लभ उपाध्याय

प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान विश्वविद्यालय के नवीन पाठ्यक्रमानुसार है एवं लेखकद्वय के पुस्तक लेखन के लम्बे अनुभव का परिणाम है। लेखकद्वय ने प्रस्तुत पुस्तक में अधिगम तथा विकास से सम्बन्धित मनो-सामाजिक प्रत्ययों तथा सम्बन्धों का बड़ा ही सरल एवं बोधगम्य तरीके से प्रस्तुतीकरण किया है तथा सम्पूर्ण विषय सामग्री को 24 अध्यायों के अन्तर्गत निहित करके छात्रोपयोगी बनाने की पूर्ण चेष्टा की गई है।

मूल्य : 16.00

तृतीय प्रश्नपत्र

● विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य-शिक्षा — डा० रामपालसिंह वर्मा

(भारतीय शिक्षा की समस्याओं सहित)

School Organisatiou & Health Education

(With Problems of Indian Education)

प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान विश्नविद्यालय के 1983-84 के बी० एड० के परिवर्तित पाठ्यक्रमानुसार तैयार की गई है। पुस्तक में न केवल विद्यालय संगठन तथा स्वास्थ्य शिक्षा की ही चर्चा की गई है वरन् भारतीय शिक्षा को वर्तमान समय में जिन प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है उनका भी संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित परिचय दिया गया है। विषयवस्तु को और भी अधिक रोचक तथा आकर्षक बनाने की दृष्टि से यथास्थान उदाहरण, रेखाचित्र तथा अभ्यासार्थ प्रश्न दिए गये हैं। पुस्तक में सभी आवश्यक तथ्य संक्षेप में दिए गए हैं किन्तु फिर भी उनमें पर्याप्तता है। विद्यार्थी इससे पूर्णतः लाभान्वित होंगे।

आकार : डिमाई

मूल्य : 16.00, पुस्तकालय संस्करण 22.50

चतुर्थ प्रश्नपत्र

● प्रभावी शिक्षण के आधार — डा० रामपालसिंह वर्मा, डा० देवदत्त शर्मा, प्रो० सत्यदेवसिंह, प्रो० पृथ्वीसिंह

प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के चतुर्थ प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रमानुसार लिखी गई है। शिक्षण एक कार्य ही नहीं अपितु एक कला एवं विज्ञान है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्र-व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना है किन्तु इन परिवर्तनों के लिए शिक्षक तथा छात्र दोनों को ही कठिन परिश्रम करना पड़ता है। इस परिश्रम को कैसे कम किया जाय, कैसे शिक्षण कार्य को सरल, सुगम, आकर्षक एवं बोधगम्य बनाया जाय। इसकी विस्तृत विवेचना प्रस्तुत पुस्तक में की गई है।

आकार-डिमाई

मूल्य : 16.00

पुस्तकालय संस्करण : 22.50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वकथन करना सम्भव था कि 'विश्व' किस प्रकार का होगा। इससे स्पष्ट होता है कि 'विश्व' अथवा भविष्य के पूर्वकथन की सम्भावना पर्याप्ति मात्रा में विद्यमान है।

इन सबके आधार पर यह निष्कर्ष निकालना कठिन नहीं प्रतीत होता कि शिक्षा को भविष्य-मूलक होना चाहिए। हमारा यह युग, विज्ञान का युग है। पूर्व युगों से यह सर्वथा भिन्न एवं विलक्षण है। शिक्षा के क्षेत्र में एक नये प्रकार का परिवर्तन, एक नया विचार निश्चित रूप से विकसित हो रहा है जो शिक्षा को भविष्य से जोड़ने का प्रयत्न कर रहा है। यह आन्दोलन फ्रेयर (Freyer) की पुस्तक 'थ्रेसहोल्ड ऑफ दी एजेज' (Threshold of the Ages) में स्पष्ट परिलक्षित होता है। आज 'गतिशील' (Dynamic), 'चलिष्णुता' (Mobility), 'प्रगति' (Progress) शब्दों का प्रयोग नारे के रूप में हो रहा है। इन सबसे इंगित होता है कि व्यक्ति एवं समाज दोनों ही अपने भविष्य के प्रति अधिक जागरूक होते जा रहे हैं। जो परिवर्तन आज तीव्रता से घटित हो रहे हैं, उनके परिप्रेक्ष्य में सभी क्षेत्रों में ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि भविष्य में बहुत बड़े परिवर्तन होने की सम्भावना है। ज्ञान जिस गति से बढ़ रहा है, तदनुसार घटित होने वाले परिवर्तन का आकलन सिराक्यूज विश्वविद्यालय (Syracuse University) ने अपने एक अध्ययन में प्रस्तुत किया है, जिसे संक्षेप में यहाँ दिया जा रहा है—

(1) एक व्यक्ति जो ज्ञान प्राप्त करता है, यह आधी आयु प्राप्त करते-करते व्यर्थ हो जाता है।

(2) सामानों का एक तिहाई भाग जो आज बाजारों में मिलता है, वह दस वर्ष पूर्व बाजारों में नहीं था।

(3) श्रमिकों का आधा भाग, जो आज उद्योग-धन्धों में लगा है, देश में (अमरीका) प्रारम्भ में नहीं था।

(4) गणित का सर्वाधिक विकास सन् 1900 से अब तक हुआ है।

(5) ज्ञान जो स्नातक अभियन्ता (अमेरिका में) आज प्राप्त कर रहा है, उसका आधा भाग अगले दस वर्षों में बेकार हो जायगा। जिस आधे की आवश्यकता है, उसे कोई नहीं जानता।

यदि उपर्युक्त अध्ययन के द्वारा प्रस्तुत अनुमान सही है तो यह सोचना पड़ता कि इन परिवर्तनों के फलस्वरूप भविष्य की रूपरेखा किस प्रकार की है और तदनुरूप आज की शिक्षा किस प्रकार की होनी चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में माता-पिता एवं विद्यार्थी इस सम्बन्ध में अधिक सजग होते जा रहे हैं कि उनके भविष्य में किस प्रकार के परिवर्तन होंगे और उनसे उनके व्यवसाय, उनकी स्वतन्त्रता, उनके बच्चे एवं परिवार किस प्रकार प्रभावित होंगे।

आज भविष्य के प्रति यह जागरूकता केवल कुछ अस्पष्ट आशाओं एवं आशंकाओं से परिपूर्ण नहीं है अपितु सम्पूर्ण मानवता भविष्य के सन्दर्भ में व्यापक रूप से तथा प्रभावपूर्ण ढंग से प्रत्येक प्रक्रिया को नियोजित करने का प्रयास कर रही है। कुछ विचारकों का मत है कि आज के युग में हर व्यक्ति को यह स्वीकार करना चाहिए कि भविष्य में जो कुछ होगा, वह उसी के कर्मों का परिणाम होगा। भाग्य अथवा अज्ञात शक्ति से उसका कोई सम्बन्ध नहीं होगा।

इस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि भविष्य का चिन्तन, भविष्य का अध्ययन, भविष्य का पूर्वकथन एवं भविष्य के परिप्रेक्ष्य में आज का 'नियोजन' बहुत महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। एतदर्थ मानव जाति की इन सब क्रियाओं को 'संज्ञा' प्रदान करने के प्रयोजन से विचारकों एवं शिक्षाशास्त्रियों ने उन्हें 'भविष्य-विज्ञान' (फ्यूचरालॉजी) के अन्तर्गत समाविष्ट किया है। इस प्रकार 'भविष्य-विज्ञान' ने एक विषय का रूप ग्रहण कर मानव-सभ्यता के क्षितिज पर नवीन सन्दर्भों सहित अपने अस्तित्व का भान करा दिया है। 'भविष्य-विज्ञान' के अन्तर्गत गम्भीरतापूर्वक शिक्षा की विविध समस्याओं का वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाता है।

—डा० रामशकल पांडेय : शिक्षा का भविष्य-विज्ञान—'शिक्षा में नवचिन्तन' से साभार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[नवीन पाठ्यक्रमानुसार]

बी. टी. सी. परीक्षा (द्वि-वर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए हमारी प्रकाशित
वर्ष १९८३-८४ की पाठ्य एवं सन्दर्भ पुस्तकें

प्रथम वर्ष हेतु

प्रथम प्रश्नपत्र– शिक्षाशास्त्र

बेसिक शिक्षाशास्त्र	दिनेशचन्द्र भारद्वाज	७.००
बेसिक शिक्षा सिद्धान्त	प्रेमदत्त शर्मा	३.५०
शिक्षा के मूल सिद्धान्त	डा० रामशकल पाण्डेय	२१.००
शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त	पाठक, त्यागी	२४.००
शिक्षा-सिद्धान्त	डा० एस० एस० माथुर	१७.००

द्वितीय प्रश्नपत्र–शिक्षा मनोविज्ञान

बेसिक शिक्षा मनोविज्ञान	भारद्वाज	७.५०
शिक्षा मनोविज्ञान	डा० एस० एस० माथुर	२८.००
शिक्षा मनोविज्ञान	पी० डी० पाठक	१८.००
शिक्षा मनोविज्ञान	डा० वर्मा व उपाध्याय	१८.००

तृतीय प्रश्नपत्र–शिक्षण सिद्धान्त

बेसिक शिक्षण सिद्धान्त	दिनेशचन्द्र भारद्वाज	६.५०
शिक्षण कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन-पद्धतियाँ	डा० एस० एस० माथुर	१८.००
सफल शिक्षण कला	पाठक, त्यागी	१६.००

द्वितीय वर्ष हेतु

चतुर्थ प्रश्नपत्र–प्रारम्भिक शिक्षा की समस्यायें तथा अभिनव प्रवृत्तियाँ एवं शैक्षिक मूल्यांकन

प्राथमिक शिक्षा की समस्याएँ	गंगामहेश मिश्र एवं अन्य	७.००
शैक्षिक मूल्यांकन एवं परामर्श	पी० डी० पाठक	४.००

पंचम प्रश्नपत्र–पाठशाला प्रबन्ध, सामुदायिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा

पाठशाला प्रबन्ध, स्वास्थ्य शिक्षा एवं सामुदायिक संगठन	दिनेशचन्द्र भारद्वाज	७.००

खण्ड (ख) शिक्षण विधियाँ

उद्यान-विज्ञान शिक्षण	एम० एल० वर्मा	६.००
कृषि शिक्षण तथा बागवानी	,, ,,	६.००
गृह-शिल्प शिक्षण	सत्यनारायण दुबे 'शरतेन्दु'	३.००
बी० टी० सी० वाणिज्य शिक्षण	उदयवीर सक्सेना	४.००
शिल्प-शिक्षण	सत्यनारायण दुबे	८.००
बी० टी० सी० पुस्तक कला शिक्षण	,, ,,	५.००

वर्ष १९८३ में प्रकाशित प्रश्नोत्तरियाँ

● सरल शिक्षा-शास्त्र (प्रथम वर्ष हेतु)	—प्रो० शर्मा एवं सतसंगी	७.५०
● सरल शिक्षा-मनोविज्ञान ,,	,, ,,	९.००
● सरल शिक्षण-सिद्धान्त ,,	,, ,,	७.५०

सहायक पुस्तकें

● बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) प्रथम वर्ष [संस्करण १९८३/८४]	शर्मा एवं सतसंगी	१५.००
● बी० टी० सी० शिक्षा दिग्दर्शन (गाइड) द्वितीय वर्ष [संस्करण १९८३/८४]	,,	१२.५०

विशेष (१) अध्यापकों से प्रार्थना है कि वह उपहार प्रतियों (स्पेसीमेन) के लिये हमसे सीधे एवं तुरन्त सम्पर्क करें। अधिक पुस्तकें मँगाने पर अधिक कमीशन की भी सुविधा है।

(२) शिक्षण-विधियों के लिये उक्त पुस्तकों के अतिरिक्त अलग-अलग शिक्षण पर अलग-अलग पुस्तकें बी० एड० स्तर की उपलब्ध हैं, कृपया हमको लिखें।

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनौपचारिक शिक्षा : दर्शन तथा शिक्षा-व्यवस्था

डा० नीरजा शुक्ला
लेक्चरार, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली-16

[गतांक से आगे]

केन्द्रीय शिक्षा-सलाहकार समिति की सिफारिशें

इससे पूर्व कि हम कुछ प्रयोगों, उनकी उपयोगिता और लाभ-हानि के विषय में चर्चा करें, हमें केन्द्रीय शिक्षा-सलाहकार समिति के १६ जुलाई, १९७६ के सुझाव एवं अनुमोदन की चर्चा कर लेनी चाहिए। इसका महत्त्व इसलिये भी है कि भारतीय शिक्षाविदों तथा शिक्षा में निर्णय करने वाले लोगों ने इस सन्दर्भ में क्या चर्चा की और क्या संकल्प किये।

केन्द्रीय शिक्षा-सलाहकार समिति ने अनौपचारिक शिक्षा की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। परन्तु उनका मत था कि इस प्रोग्राम को और अधिक विस्तृत रूप से चलाने के लिए काफी अनुभवशील तथा कर्मठ कार्य-कर्त्ताओं की आवश्यकता होगी। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर अनौपचारिक शिक्षा को स्वीकार करने योग्य धरातल बनाना होगा। इसका अर्थ हुआ कि राज्य, जिला तथा ग्राम-स्तर पर सभी को अनौपचारिक शिक्षा को स्वीकार कराना होगा। यदि ऐसा हुआ, तो छठी पंचवर्षीय योजना में इसे एक व्यापक कार्यक्रम के रूप में मान्यता मिल जाएगी। इसी को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय शिक्षा-सलाहकार समिति ने १६ जुलाई, १९७६ को एक निश्चय किया।

इसी समिति ने अनौपचारिक शिक्षा की परिभाषा तथा विचार में दो संशोधन प्रस्तुत किये।

समिति का मत था कि अनौपचारिक शिक्षा औप-चारिक शिक्षा के विकल्प और सहयोग दोनों रूपों में मानी जाती है। किन्तु इस वर्तमान स्थिति की दो कमजोरियाँ हैं। एक, इस अनौपचारिकता को बड़ी संकीर्ण दृष्टि से देखा जाता है और इसके अर्थ भी गलत ही समझे जाते हैं। जैसा हम ऊपर भी कह आये हैं, ठीक उसी प्रकार इस समिति ने यह बताने की कोशिश की कि यह शिक्षा-व्यवस्था मात्र निर्धनों के लिए नहीं है और न इसे घटिया शिक्षा मानना ही उचित है। यह न परम्परावादी पढ़ाई-लिखाई और हिसाब वाली शिक्षा है और न इसमें औपचारिक पाठ्यक्रमों जैसी विशेषता ही है। इस समिति को सबसे बड़ा दुःख यह था कि प्रायः औपचारिक और अनौपचारिक व्यवस्थाओं में भेद नहीं रह पाता। अनौपचारिक एक सीमा पर जाकर औपचारिक ही हो जाती है।

इस समिति ने इस बात पर बल दिया है कि यह शिक्षा किसी भी उम्र वाले युवक और वृद्ध व्यक्ति के लिए बड़ी उपयोगी और कारगर है। जो कोई भी किसी उपयोगी कौशल या लाभप्रद जानकारी की तलाश में होगा, उसके लिये यह शिक्षा सबसे उपयुक्त साबित होगी। विशेष रूप से यह कहना आवश्यक है कि अनौपचारिकता साक्षरता के विरुद्ध नहीं है। किन्तु इस प्रकार की शिक्षा का कार्यक्रम बोलचाल की भाषा की सीमा-रेखा में ही प्रस्तुत किया जाता है। आदि-वासी इलाकों में अनौपचारिक शिक्षा को औपचारिक शिक्षा के लिए पृष्ठभूमि तैयार करनी होगी। अनौप-चारिक शिक्षा की सबसे बड़ी जिम्मेदारी यही है कि जहाँ समाज में आपसी दूरियाँ काफी अधिक हैं वहाँ इसे इन दूरियों को कम भी करना है। इस शिक्षा की अपनी सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यहाँ पढ़ाने पर नहीं, सीखने पर बल दिया जाता है। एक दिन यही शिक्षा समाज की आपसी दूरियाँ कम करेगी और औप-चारिक शिक्षा में सुधार के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। एक दिन वह सम्भावित भविष्य भी इस राष्ट्र की पहुँच में होगा जबकि हम "सीखने वाला समाज", अर्थात् निरन्तर पढ़ाई और नवीन कौशल सीखने वाला समाज बन पायेंगे।

इस समिति की दूसरी आपत्ति यह थी कि इस प्रकार की शिक्षा को शिक्षा-अधिकारियों, अध्यापक वर्ग अथवा समाज में कोई अधिक स्वीकृति नहीं मिली है। यदि राज्य के शिक्षा-अधिकारी और केन्द्रीय सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि इसे स्वीकृति या मान्यता प्रदान नहीं करते, तो यह शिक्षा भारतीय शिक्षा-प्रणाली का एक जरूरी अंग कभी नहीं बन सकेगी।

इसीलिए इस समिति ने कुछ प्राथमिकतायें निर्धारित की हैं। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी आवश्यकतायें होंगी। उनका पता लगाकर काम करना अधिक लाभ-प्रद होगा। किन्तु राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का निर्धारण निम्नलिखित आधार पर करना होगा :—

(१) राष्ट्रीय हित में हम लोगों को उस प्रकार के कार्यक्रम स्वीकार करने और लागू करने चाहिए जो हमारे पिछड़े वर्ग और निर्धन लोगों के लिए उचित हों। इस बात की जानकारी सभी को है कि इस देश में सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े लोगों की संख्या काफी है। यदि औपचारिक शिक्षा इन लोगों का हित नहीं कर पाई है, तो कम से कम अनौपचारिक शिक्षा को इस वर्ग-विशेष के लाभ की बात सोचनी चाहिए।

(२) ऐसे कार्यक्रम लेने चाहिये जो परिवार-नियोजन के विषय को सम्मान देते हों।

(३) विभिन्न कार्यक्रम बच्चों, स्त्रियों और नौजवानों की आवश्यकताओं से सम्बद्ध होने चाहिए। विशेष रूप से यह ध्यान रखना चाहिये कि लोगों को नौकरी या अन्य पेशे में लगाने में इस प्रकार के प्रोग्राम मदद दे सकें।

(४) खेतिहर मजदूरों, औद्योगिक कर्मचारियों तथा ग्रामीण और भूमिहीनों की भलाई वाले कार्यक्रमों को भी लेना पड़ेगा ताकि राष्ट्र की आर्थिक प्रगति सम्भव हो सके।

अनौपचारिक शिक्षा को राष्ट्रीय प्रोग्राम माना गया है और केन्द्रीय शिक्षा-सलाहकार समिति ने सिफारिश की है कि यह प्रत्येक जिले और राज्य में लागू होनी चाहिये। इस प्रोग्राम को अधिक वरीयता देनी चाहिये और पाँचवीं पंचवर्षीय योजना की शेष अवधि में इसे अधिकांश स्थानों में लागू कर लेना चाहिये।

इस समिति की महत्त्वपूर्ण सिफारिश तो यह है कि जिले, राज्य और राष्ट्रीय पैमाने पर सर्वेक्षण किये जायें। ये सर्वेक्षण न केवल स्थानीय आवश्यकताओं के हों, वरन् स्थानीय सम्भावनाओं के भी होने चाहिये। केन्द्रीय सरकार को चाहिये कि वह राज्य सरकारों और अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं को निरन्तर सहायता देती रहे। इस समिति ने स्वीकार किया है कि इस अनौपचारिक शिक्षा की सफलता इस शिक्षा के लिए कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षित होने पर निर्भर करती है। ऐसे पाठ्यक्रमों की आवश्यकता होगी जिनके द्वारा विशेष योग्यता की दक्षता देना सम्भव हो।

एक सिफारिश यह भी थी कि इस प्रोग्राम की सफलता की देखरेख, रख-रखाव आदि के लिए एक निरीक्षक-वर्ग अथवा निरीक्षण-संगठन की आवश्यकता होगी। इस निरीक्षण वर्ग का प्रमुख कार्य होगा कि वह इन समस्त कार्यक्रमों को भली-भाँति देखे, उसका मूल्यांकन करे और एक स्थान से नियन्त्रण भी कर पाये। इसलिए मान लिया गया कि प्रत्येक राज्य में एक प्रशासन एकक होना चाहिये। यह एकक सारे प्रोग्रामों को एक सूत्र में बाँधने के लिए जिम्मेदार होगा और समय-समय पर मूल्यांकन भी करता रहेगा। साथ-साथ यह भी कहा गया है कि प्रत्येक राज्य में एक साधन केन्द्र होना चाहिए जिसके लिये सरकार स्वेच्छा से कार्य करने वाली किसी संस्था को धन दे दे; या फिर सरकार स्वयं प्रशिक्षण दे, पाठ्यक्रम बनाये और सीखने के भिन्न-भिन्न कार्यक्रम चालू करे।

यहाँ इस बात को नहीं भूलना चाहिये कि औपचारिक शिक्षा से बाहर कार्य करने वाली संस्थाओं की अनौपचारिक शिक्षा के लिये विशेष भूमिका है। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को नये प्रकार से सीखने वाले के स्वागत के लिये द्वार खोल देने चाहिये। स्कूलों, उद्योगों, पुस्तकालयों और अन्य इसी प्रकार की संस्थाओं को सीखने के नये अवसर प्रदान करने चाहिये। ऐच्छिक संस्थाओं को इस सन्दर्भ में काफी बड़ी और महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए सरकार को चाहिये कि वह इन संस्थाओं को बहुत अधिक सहयोग देने के लिये आमंत्रित करे। कारण भी सीधा-सा है। यदि वह अनौपचारिक शिक्षा इतने बड़े स्तर पर लागू होनी है तो आवश्यक है कि प्रत्येक ऐच्छिक एवं सरकारी संस्था का सहयोग मिले। इस सलाहकार समिति की एक सिफारिश यह भी थी कि पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में अनौपचारिक शिक्षा के लिये और अधिक धन देने की व्यवस्था करनी चाहिये। शिक्षा-मन्त्रालयों के बजट से अतिरिक्त विकास के प्रत्येक कार्यक्रम को इस अनौपचारिक शिक्षा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिन्न अंग मानना चाहिये। ऐसे कदम भी उठाने चाहिये जिससे स्थानीय या ऐच्छिक स्रोतों से भी धन मिलना प्रारम्भ हो जाय। संक्षेप में धनाभाव के कारण इतनी महत्त्वपूर्ण बात पीछे नहीं रह जानी चाहिए।

साथ-साथ केन्द्रीय, राज्य एवं स्थानीय स्तर के अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों में एक तालमेल होना बहुत आवश्यक है। यह तालमेल न केवल साधनों में होना चाहिये वरन् प्रत्येक संस्था और कार्यक्रम को सुनियोजित सूत्र में बँधा होना चाहिए। केन्द्रीय शिक्षा-सलाहकार समिति से बाहर और बाद की बातों पर भी यहाँ विचार करना होगा। राष्ट्रीय स्तर पर अनौपचारिक शिक्षा का महत्त्व और उसकी भूमिका स्वीकार करना अत्यन्त आवश्यक था और उचित ही हुआ कि उसके सन्दर्भ में इस स्तर पर सिफारिशें भी की गईं। परन्तु यहाँ दो बातें कहना आवश्यक होगा :—

(१) किसी कार्यक्रम की सफलता केवल सिफारिशों पर ही निर्भर नहीं करती। उसके लिये कर्मठ, लगन वाले और प्रशिक्षित कार्यकर्त्ता भी होने चाहिये।

(२) आज किसी भी शिक्षा के नवाचार के लिए केवल राष्ट्रीय या स्थानीय दृष्टिकोण से देखना, सोचना आवश्यक नहीं है। वस्तुस्थिति तो यह है कि यदि हम इन संकीर्ण मनोभावों और संकुचित दृष्टिकोण से देखना बन्द कर दें तो शिक्षा की प्रत्येक समस्या के अन्तर्राष्ट्रीय रूप को पहचानने में सहायता मिलेगी।

उदाहरण के लिए—जब लाल चीन में गाँव के डाक्टरों (बेयरफुट डाक्टर्स) को १० अथवा १५ दिनों के प्रशिक्षण के बाद राष्ट्रीय स्वास्थ्य-सेवा में लगाया गया, तो इस बात पर सम्पूर्ण विश्व में अपने-अपने प्रकार से प्रतिक्रियाएँ हुईं, किन्तु यह समाधान अनौपचारिक शिक्षा का ही परिणाम था। इसी प्रकार जब रूस में नये प्रशासन ने जनक्रान्ति के बाद (१९१७) गाँवों में साक्षरता का अपना अभियान चलाया, तो भी विश्व-व्यापी प्रतिक्रिया हुई। इस शिक्षा का उद्देश्य साक्षरता के सीमित दायरे के बाहर था। इसका अर्थ राजनीतिक शिक्षा देना था। लोगों को बताना था कि राजनीतिक परिवर्तन से क्या लाभ हुए या होने वाले थे। स्पष्ट है कि इस प्रकार की शिक्षा साक्षर बनाने के औपचारिक कार्य से कहीं अधिक थी। इंग्लैंड में भी क्लबों, स्कूलों और विश्वविद्यालयों में औपचारिकता से हट कर शिक्षा का प्रबन्ध किया गया। यह सब अनौपचारिक शिक्षा के प्रारम्भिक रूप थे।

यह समझना भूल होगी कि केवल विकसित राष्ट्रों में ही इस प्रकार की अनौपचारिक शिक्षा का प्रसार अथवा प्रचार हुआ। सत्य तो यह है कि सभी देशों में, चाहे वह विकसित हो अथवा विकासशील, इस दिशा में प्रगति हुई है। ●

Educational Psychology

Tenth Revised & Enlarged Edition 1983

By **Dr. S. S. Mathur**

Size Demy ● **pp. 732** ● **Price : Rs. 32.00** **Lib. Ed. Rs. 40.00**

● The Tenth Edition of this Book is completely revised and modified. In it a number of changes have been incorporated. These include some additions in the chapter on motivation, personality, exceptional children and statistics.

● This book follows its unique style in presenting the Subject matter of human-learning. Its main emphasis is towards the understanding of the human-child—who has to be educated through formal and informal agencies.

● The present edition lays stress on the concepts of self-actualization. There is no doubt in it that in our country, there is great need to stress that our teacher may truly become self-actualizing persons. This book may leads towards this development & emergence of such teachers.

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA–2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार—

छात्रों एवं पुस्तकालयों के लिये हमारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी प्रशिक्षण साहित्य

☆ ☆ ☆

भारतीय शिक्षा
(Indian Education)

भारतीय शिक्षा के प्रवर्त्तक
सं० डा० आत्मानन्द मिश्र — १५.००

शिक्षा में नव चिन्तन
सं० डा० रामपालसिंह — २०.००

आदि और मध्ययुगीन भारत में शिक्षा
डा० सरयूप्रसाद चौबे — १४.००

आधुनिक भारतीय शिक्षा [इतिहास और समस्याएँ]
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी — १६.००

भारतीय शिक्षा का इतिहास
बी० पी० जौहरी, पी० डी० पाठक — १५.६५
पुस्तकालय संस्करण — २२.५०

भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ
पी० डी० पाठक — २४.००
पुस्तकालय संस्करण — ३५.००

भारतीय शिक्षा की सामयिक समस्याएँ
रामखेलावन चौधरी, राधावल्लभ उपाध्याय — १५.००

भारतीय शिक्षा (प्राचीन से वर्तमान काल तक)
डा० सरयू प्रसाद चौबे — १४.००

हमारी शिक्षा समस्याएँ
डा० सरयू प्रसाद चौबे — १८.००

विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री
डा० रामशकल पांडेय — १२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग एवं समितियाँ
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी — १७.००
पुस्तकालय संस्करण — २२.००

भारतीय शिक्षा के आयोग : कोठारी कमीशन
पी० डी० पाठक एवं त्यागी — ९.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
(Educational Psychology)

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर — २८.००
पुस्तकालय संस्करण — ४०.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर — १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
पी० डी० पाठक — १८.००
पुस्तकालय संस्करण — २५.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा — १८.००
राधावल्लभ उपाध्याय — पु० सं० २८.००

Educational Psychology — 32.00
Dr. S. S. Mathur — Lib. Edn. 40.00

शिक्षा-सिद्धान्त और शिक्षणकला
(Principles and Methods of Education)

शिक्षा के सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी — १५.००

शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, गुरसरनदास त्यागी — ३२.००

शिक्षा-सिद्धान्त
डा० एस० एस० माथुर — १७.००

शिक्षा के मूल सिद्धान्त
डा० रामशकल पाण्डेय — २१.००
पुस्तकालय संस्करण — २८.००

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
डा० सरयूप्रसाद चौबे — २०.००
पुस्तकालय संस्करण — २४.००

Philosophical and Sociological Foundations of Education
Dr. S. P. Chaube, — 20.00
Akhilesh Chaube — Lib. edn. 30.00

An Introduction to Major Philosophies of Education
Dr. R. S. Pandey — 14·00
Lib. Edn. 20·00

Principles of Education — 20.00
Dr. R. S. Pandey — Lib. Edn. 30.00

A Sociological Approach to India Education
Dr. S. S. Mathur — 28.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण-कला, शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियाँ
डा० एस० एस० माथुर १८.००

सफल शिक्षण कला
पी० डी० पाठक, त्यागी १६.००

शिक्षण-तकनीकी
(Technology of Teaching)

शिक्षण-तकनीकी
शैलेन्द्र भूषण एवं
डा० अनिलकुमार वार्ष्णेय १०.००

शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार
डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ १६.००

विद्यालय-प्रशासन
(School Administration)

Educational Administration 22.00
S. P. Sukhia Lib. edn. 30.00

विद्यालय प्रशासन एवं संगठन
एस० पी० सुखिया १५.५५
पुस्तकालय संस्करण २५.००

शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

विद्यालय-संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा
डा० रामपालसिंह वर्मा १२.००

विद्यालय व्यवस्था श्री केशवप्रसाद ७.५०

शिक्षा-प्रशासन डा० उमेशचन्द्र कुदेसिया १२.००

स्वास्थ्य-शिक्षा
(School Hygiene)

स्वास्थ्य-शिक्षा डा० जी० पी० शैरी १६.००

School Health Education & Public Health
Dr. S. P. Chaube, 20.00
Akhilesh Chaube Lib. Edn. 30.00

मापन एवं मूल्यांकन
(Measurement & Evaluation)

शैक्षिक मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.००

Measurement and Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana, Dr. Agrawal 25.00
Lib. edn. 35.00

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० आर० एन० अग्रवाल,
डा० बिपिन अस्थाना १८.००

सांख्यिकी
(Statistics)

सांख्यिकी के मूल तत्त्व (सामाजिक विज्ञानों में)
डा० एच० के० कपिल ३५.००

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० (श्रीमती) प्रीती वर्मा,
डा० डी० एन० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
डा० सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा-दर्शन
(Philosophy of Education)

भारत में शिक्षा-दर्शन और शैक्षिक समस्याएँ
पाठक एवं त्यागी (प्रेस में)

शिक्षा-दर्शन डा० रामनाथ शर्मा १५.००

शिक्षा-दर्शन डा० रामशकल पाण्डेय १८.००
पुस्तकालय संस्करण २५.००

शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त
पी० डी० पाठक, त्यागी १८.००

निर्देशन
(Guidance)

शैक्षिक मापन एवं निर्देशन
उमेश प्रसाद सिंह ४.००

शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श
डा० सीताराम जायसवाल १५.००

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन
डा० रामपालसिंह वर्मा, उपाध्याय १६.००

Educational & Vocational Guidance
N. R. Sharma 15.00

तुलनात्मक-शिक्षा

तुलनात्मक शिक्षा
डा० सरयू प्रसाद चौबे ४०.००

शिक्षा व्यवस्थाएँ डा० सरयू प्रसाद चौबे १२.००

विषय-शिक्षण—इसके अन्तर्गत हिन्दी-शिक्षण, इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र, भूगोल, विज्ञान, जीव-विज्ञान, गणित, संस्कृत, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान व अंग्रेजी-शिक्षण पर विभिन्न विद्वानों की लिखी सरल भाषा में पुस्तकें उपलब्ध हैं।

उक्त सभी प्रश्नपत्रों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रश्नोत्तर रूप में भी पुस्तकें प्राप्य हैं।

सूचीपत्र निःशुल्क मंगायें

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SECOND REVISED & ENLARGED EDITION

B. Ed. GUIDE

For

Students of Indian Universities

By

Indra Sharma, *M. Sc., B. Ed.*

&

N. R. Sharma, *M. A., L. T.*

Ex. Assistant Professor of Education

R. B. S. College, Agra.

(Retired) Principal, Senior Secondary Schools, Delhi.

The present edition of the book has been written according to the recent syllabi prescribed by various universities of India, especially those of Agra, Kanpur, Meerut, Gorakhpur, Nagpur, Vikram, Shivaji, Bombay and Poona. Every effort has been taken to present the entire subject- matter systematically in four parts on Principles of Education and Techniques of Teaching, Educational Psychology, Problems of Indian Education, Educational Administration and Health Education in a lucid style :

The other characteristics of the book are as follows :—

- The course content in each paper has been put at one place.
- Only standard books have been consulted in writing of the answers.
- Questions have been solved at length and where necessary hints have been given to avoid duplication.
- Though the book is in question-answer form, yet coherence of treatment has been preserved.
- The language is simple and clearly intelligible to an average student.
- One of the authors claims to have a long teaching experience in a training college of U. P. and an administrative experience in Senior Secondary Schools of Delhi.

It is sincerely hoped that the book will be warmly welcomed and will prove beneficial to students. Any suggestions for the improvement will be thankfully received.

Size Demy   Page 1250   Price Rs. 51.00

VINOD PUSTAK MANDIR, AGRA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण व्यवसाय तथा शिक्षण पाठ्यक्रम के प्रति बी० एड० एवं एम० एड० छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक मूल्यांकन

डा० एम० ए० शाह
डा० संतोष गाबा

आज शिक्षण-व्यवसाय के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्तियाँ प्रचलित हैं। एक ओर जहाँ देश की शिक्षा-नीति अस्त-व्यस्त हो गई है और दूसरी तरफ बेरोज़गारी की स्थिति में जिस व्यक्ति को जो व्यवसाय मिलता है, वह उसका चयन कर लेता है। एक और तथ्य जिससे हम इन्कार नहीं कर सकते हैं—वह है सरकार की नीति। सरकार अनेक आयोगों की नियुक्ति करके भी, उनके सुझावानुसार चयनात्मक पद्धति को देशव्यापी नहीं बना सकी है। इस प्रकार एक ओर व्यक्ति अपनी योग्यताओं के अनुकूल व्यवसाय का चयन नहीं कर पाता है तथा दूसरी ओर अनेक व्यवसायों में ऐसे व्यक्तियों का आगमन हो जाता है जो उस पद के लिये सर्वथा उपयोगी नहीं होते हैं। शिक्षण-व्यवसाय भी इसका अपवाद नहीं है। इतना ही नहीं, प्रशिक्षणार्थियों के दृष्टिकोण में भी पारस्परिक अन्तर होता है। दूसरा कारण प्रशिक्षण विद्यालयों की अनेक क्रियाओं और प्रक्रियाओं में अन्तर होने के कारण उनकी व्यावसायिक पाठ्यक्रम तथा व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर आ जाता है। जैसा कि शिक्षा-आयोग (1966) में स्वीकार किया गया है—"शिक्षा के गुणात्मक एवं राष्ट्रीय विकास में उसके योगदान को प्रभावित करने वाले उसके विभिन्न अंगों में शिक्षक की योग्यता, गुण तथा चरित्र निस्सन्देह ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। अध्यापन व्यवसाय में पर्याप्त संख्या में योग्य अध्यापकों की नियुक्ति, उनके लिए सर्वोत्तम व्यावसायिक साधनों की उपलब्धि और पूर्ण प्रभावी ढंग से काम कर सकने के लिये सन्तोषप्रद स्थितियाँ पैदा करने से अधिक महत्त्वपूर्ण बात दूसरी नहीं है।"[1] यह बात शिक्षकों के बारे में जितनी सही है उससे कहीं अधिक शिक्षक-प्रशिक्षकों के बारे में है, क्योंकि शिक्षकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने वाले शिक्षक प्रशिक्षक ही होते हैं। शिक्षकों के दृष्टिकोण में भी सुधार तभी सम्भव है जब उन्हें व्यवसाय का शिक्षण सफल रीति से दिया जाय। आवश्यक परिवर्तन लाने की प्रवृत्ति और व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति तभी आ सकती है जब सरकार और समाज व्यवसाय के अनुकूल मानसिक योग्यताओं वाले व्यक्तियों का चयन करें तथा प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली छात्राओं को प्रशिक्षण महाविद्यालयों की विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए एक जैसा वातावरण देने का प्रयास करें, जिससे समाज देश में शिक्षा का गुणात्मक विकास हो सके। किसी भी व्यवसाय के गुणात्मक विकास के लिये आवश्यक है, उस व्यवसाय के अनुकूल अभिवृत्ति।

आज के मनोवैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि बालक जन्म के साथ ही शक्तियों के समूह को अपने साथ लाता है। शक्तियों को विकसित करने के लिए, जो वातावरण छात्र को उपलब्ध होता है, उसके अनुकूल और प्रतिकूल जो क्रिया-प्रतिक्रिया करता है, उसे व्यवहार कहते हैं। यही वातावरण-जनित व्यवहार उसकी सकारात्मक और नकारात्मक अभिवृत्ति बनाने में सहायक होता है। जैसा कि आलपोर्ट ने भी परिभाषित किया है—"State of readiness organized through experience exerting a directive and dynamic influence upon the individual's response toward all objects or situations with which it is related."[1]

1. Report of the Education Commission 1964-66, Published by Ministry of Education, Government of India, 1966.

1. Allport, Gordon W.: Attitudes, Inc. Murchison (ed.). A Handbook of Social Psychology, Worecster, Mass: Clark University Press, 1935.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यवहार को प्रभावित करने वाले तीन तत्त्व हैं, जिसके ऊपर मनोविज्ञान के सभी पहलू आधारित हैं। किसी भी प्रतिक्रिया के लिये सबसे पहले किसी उत्तेजना से प्रभावित होने का स्तर आता है जिसे उत्तेजित करने वाली स्थिति (Affective) कहते हैं। इसके पश्चात् ज्ञानात्मक (Cognitive) स्थिति है जो किसी भी स्थिति में वातावरण को समझने तथा उसके अनुकूल व्यवहार करने में सहायक होता है। अन्तिम स्तर कृति (Action) है, जिसके कारण बालक के व्यवहार को एक विशेष स्थिति में रास्ता मिल जाता है, जिसके आधार पर वह कार्यक्षेत्र में अग्रसर हो जाता है। तब कार्यक्षेत्र में प्रवेश की क्षमता के अनुकूल उसमें उसकी अभिवृत्ति का निर्माण होता है तथा तदनुसार उनके व्यक्तित्व का विकास भी सम्भव हो पाता है।

शोधकर्त्ताओं द्वारा इस समस्या का चयन इस आधार पर किया गया—प्रथम जब उनमें से एक ने प्रशिक्षण विद्यालय में एक छात्रा के रूप में प्रवेश किया, तब उसने पाया कि उत्साह एवं उमंग में आये हुए कुछ छात्राओं के उमंग एवं उत्साह में वृद्धि हुई और कुछ छात्राओं में इसके विपरीत व्यवसाय के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति का विकास हुआ। दूसरा, स्वयं शिक्षक बनने पर तथा छात्र-छात्राओं के निकट सम्पर्क आने पर अनुभव द्वारा ज्ञात हुआ कि केवल एक विद्यालय-स्तर पर यह अन्तर दृष्टिगत नहीं होता अपितु अन्तर-विद्यालयों में भी, प्रशिक्षण महाविद्यालयों की विभिन्नताओं के कारण छात्र-छात्राओं की अभिवृत्ति में अन्तर दृष्टिगत होता है।

अतः इस समस्या "शिक्षण-व्यवसाय तथा शिक्षण-पाठ्यक्रम के प्रति बी० एड० एवं एम० एड० छात्राओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक मूल्यांकन" ज्ञात करने हेतु मेरिन डी० आई बैस्टा के परीक्षण के आधार पर छः अंक मापनी (6 Points) एक अभिवृत्ति मापनी बनाई गई। इस मापनी के दो भाग किए गये। प्रथम भाग में शिक्षण-व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति तथा दूसरे भाग में शिक्षण-पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति मूल्यांकन हेतु प्रश्नों का निर्माण किया गया।

प्रथम भाग में ग्यारह प्रश्न मेरिन डी० आई बैस्टा की प्रश्नावली के थे तथा छः प्रश्न उसमें और जोड़े गये। दूसरे भाग की प्रश्नावली के निर्माण से पूर्व विभिन्न प्रशिक्षण महाविद्यालयों से पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सुझाव माँगे गये और उन सुझावों के आधार पर प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नावली तैयार हो जाने पर मूल्यांकन हेतु श्रीमती भगवती देवी जैन कन्या महाविद्यालय, आगरा तथा राजा बलवन्त सिंह प्रशिक्षण महाविद्यालयों की तीस महिला प्रशिक्षार्थियों पर एक Pilot Study की गई और प्राप्तांकों के आधार पर Inter Item Correlation ·46 से ·83 प्राप्त हुआ। इस आधार पर प्रश्नावली को उपयुक्त मानकर आगरा विश्वविद्यालय के अध्यापक-प्रशिक्षण केन्द्रों की 658 महिला छात्राओं पर परीक्षण किया गया, जिसके परिणाम अधोलिखित हैं:—

तालिका नं० 1

टी रेशों द्वारा प्राप्त शिक्षण व्यवसाय तथा शिक्षण पाठ्यक्रम में अन्तर
(एम० एड० छात्राओं का)

विद्यालय		M	S. D.	df	t
धर्म समाज कालेज, अलीगढ़	शिक्षण व्यवसाय	74·65	12·00	15	1·06
	शिक्षण पाठ्यक्रम	70·30	10·05	15	
श्रीमती बैंकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा	शिक्षण व्यवसाय	77·60	16·50	10	·56
	शिक्षण पाठ्यक्रम	81·20	11·90	10	
महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, आगरा	शिक्षण व्यवसाय	75·5	11·30	17	·55
	शिक्षण पाठ्यक्रम	73·55	9·10	17	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका नं० 2

टी रेशों के द्वारा प्राप्त शिक्षण व्यवसाय तथा शिक्षण पाठ्यक्रम में अन्तर

(बी० एड० छात्राओं का)

विद्यालय		M	S. D.	df	t	
1. श्रीमती वैंकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा	शिक्षण व्यवसाय	74·325	6·615	86	1·06	P=
	शिक्षण पाठ्यक्रम	73	7·39	86		
2. श्रीमती भगवती देवी जैन कन्या महाविद्यालय, आगरा	शिक्षण व्यवसाय	69·25	11·85	114	3·04	P= ·01
	शिक्षण पाठ्यक्रम	73·625	10·35	119		
3. महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, आगरा (छात्रावास)	शिक्षण व्यवसाय	70·65	14·40	75	1·8	P=
	शिक्षण पाठ्यक्रम	74·75	13·10	75		
4. महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, आगरा	शिक्षण व्यवसाय	75·30	10·30	88	2·05	P= ·02
	शिक्षण पाठ्यक्रम	78·20	9·50	88		
5. किशोरी रमण महिला महाविद्यालय, मथुरा	शिक्षण व्यवसाय	69·40	12·35	73	1·6	P=
	शिक्षण पाठ्यक्रम	72·00	11·30	73		
6. टीकाराम महिला विद्यालय, अलीगढ़	शिक्षण व्यवसाय	72·90	10·50	83	2·3	P= ·02
	शिक्षण पाठ्यक्रम	76·90	12·40	83		
7. धर्म समाज कालेज, अलीगढ़	शिक्षण व्यवसाय	75·55	11·45	34	2·66	P= ·02
	शिक्षण पाठ्यक्रम	76·85	17·00	34		
8. श्री वार्ष्णेय कालेज, अलीगढ़	शिक्षण व्यवसाय	68·70	14·10	27	1·07	P= ·01
	शिक्षण पाठ्यक्रम	72·45	11·55	27		
9. राजा बलवन्त सिंह कालेज, आगरा	शिक्षण व्यवसाय	73·95	12·50	20	·96	P= ·01
	शिक्षण पाठ्यक्रम	77·55	11·45	20		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112995
१४

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालिका नं० 3

...टी रेशों द्वारा प्राप्त शिक्षण व्यवसाय के बी० एड० छात्राओं की अभिवृत्ति

	बैकुण्ठी देवी	बी० डी० जैन	महिला प्र० विद्यालय	किशोरी रमण	टीकाराम	धर्म समाज	वार्ष्णेय
बी० डी० जैन	3·59 P=·01						
महिला प्रशि० वि०	·69	4·28 P=·01					
किशोरी रमण	2·84 P=·01	·09 P=	3·40 P=·01				
टीकाराम	1·00	2·5 P=·05	1·63	2·02 P=·03			
धर्म समाज	·54	2·82 P=·02	·11	2·51 P=0·2	1·18 P=		
वार्ष्णेय कालेज	2·29 P=·01	·12 P=	2·33 P=·02	·23 P=	1·07 P=	2·06 P=·05	
राजा बलवन्त सिंह	·122	1·22 P=	·45 P=	1·44 P=	·35 P=	·46 P=	1·36 P=

तालिका नं० 4

टी रेशों द्वारा प्राप्त शिक्षण पाठ्यक्रम के प्रति बी० एड० छात्राओं की अभिवृत्ति

	बैकुण्ठी देवी	बी० डी० जैन	महिला प्रशि० विद्यालय	किशोरी रमण	टीकाराम	धर्म समाज	वार्ष्णेय कालेज
बी० डी० जैन	·62 P=·01						
महिला प्रशिक्षण विद्यालय	4·33 P=·01	3·23 P=·01					
किशोरी रमण	·71	·94	3·60 P=·01				
टीकाराम	2·75 P=·05	1·89 P=	·75 P=	2·45 P=·05			
धर्म समाज कालेज	1·22	1·08	·45	1·53	1·6		
वार्ष्णेय कालेज	·25 P=·01	·48 P=·01	1·94 P=·01	·17 P=·01	1·72 P=·01	1·22 P=·01	
राजा बलवन्त सिंह	1·72 P=	1·48 P=	·25 P=	1·9 P=	·23 P=	·18 p=0·1	1·54 P=

इन तालिकाओं को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि संस्थागत भेदों के कारण अभिवृत्तियों में बहुत-कुछ अन्तर आ जाता है। व्यक्तियों के समान संस्थाओं की भी अपनी एक विशिष्टता होती है और इस विशिष्टता के कारण उससे सम्बन्धित सभी अंशों (Elements) उप रसका प्रभाव पड़ता है और इससे इन अंशों अर्थात् अध्यापक-अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति भी प्रभावित होती है और यही अभिवृत्ति अनेक छात्राओं में भी हस्तान्तरित होती है, जो दूसरी संस्थाओं के छात्राओं से भिन्न कर देती है।

तालिका नं० 1, 3 और 4 को देखने से ज्ञात होता है कि एम० एड० की छात्राओं में भिन्नता कम होती है और उसका कारण यह हो सकता है कि सभी विद्यालयों में एम० एड० की कक्षायें नहीं होती हैं, जिसके कारण छात्र एक दूसरे विद्यालयों में पाते हैं और उनकी विद्यालय सम्बन्धी भिन्नता का प्रभाव बहुत-कुछ निष्पक्ष हो जाता है। यही कारण है कि इस अध्ययन में यह भिन्नता बहुत कम पाई गई है। ●

—अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविज्ञान के श्रेष्ठ प्रकाशन

मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त
डा० जे० डी० शर्मा २५.००

नैदानिक-मनोविज्ञान
डा० रामपाल सिंह वर्मा २५.००
प्रा. ले. : डा० एम. ए. शाह पु० सं० ३५.००

मनोविज्ञान के समकालीन सम्प्रदाय
डा० आर० के० ओझा १०.००

मनोविज्ञान के सम्प्रदाय
डा० रामपालसिंह वर्मा ६.५०

आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान २०.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३०.००

सामान्य मनोविज्ञान
डा० एस० एस० माथुर २०.००

सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा
भाई योगेन्द्रजीत १०.००

असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार २१.२५
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी पु० सं० ३२.००

असामान्य मनोविज्ञान (बी० ए० के लिए) २०.००
डा० लाभसिंह, डा० तिवारी पु० सं० २८.००

Abnormal Psychology : A dynamic Approach Dr. Govind Tiwari (In Press)

समाज मनोविज्ञान : प्रारम्भिक अध्ययन
डा० एस० एस० माथुर १४.००

समाज मनोविज्ञान (For Advanced Study)
डा० एस० एस० माथुर २५.००

शिक्षा-मनोविज्ञान २८.००
डा० एस० एस० माथुर पु० सं० ४०.००

शिक्षा-मनोविज्ञान (संक्षिप्त संस्करण)
डा० एस० एस० माथुर १७.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
प्रो० पी० डी० पाठक १८.००

शिक्षा-मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह वर्मा, १८.००
डा० राधावल्लभ उपाध्याय पु० सं० २८.००

Educational Psychology 32.00
Dr. S. S. Mathur Lib. edn. 40.00

बाल मनोविज्ञान : बाल विकास
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव २२.५०

बाल मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १७.००

बाल विकास तथा पारिवारिक सम्बन्ध
डा० सरयूप्रसाद चौबे १५.००

सांख्यिकी के मूल तत्त्व
डा० एच० के० कपिल ३५.५०

मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १७.००

प्रारम्भिक सांख्यिकी
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव १०.००

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग
सुरेश भटनागर ७.००

शिक्षा में सरल सांख्यिकी
डा० रामपालसिंह वर्मा ८.००

शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार
डा० गोविन्द तिवारी १८.००

मनोविज्ञान शोध-विधियाँ
प्रो० एम० ए० हकीम, बिपिन अस्थाना १५.००

शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व
एस० पी० सुखिया
वी० पी० मेहरोत्रा, आर० एन० मेहरोत्रा (प्रेस में)

आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान २४.००
डा० प्रीती वर्मा, डा० श्रीवास्तव पु० सं० ३५.००

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
प्रो. एम. ए. हकीम, डा० बिपिन अस्थाना १४.००

औद्योगिक मनोविज्ञान २०.००
डा० आर० के० ओझा पु० सं० २५.००

विकासात्मक मनोविज्ञान
भाई योगेन्द्रजीत १५.००

व्यावहारिक मनोविज्ञान
डा० रामपालसिंह,
प्रो० सत्यदेवसिंह, डा० देवदत्त शर्मा २०.००

शैक्षिक मूल्यांकन
डा० रामपालसिंह वर्मा १०.००

मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
डा० अग्रवाल, डा० बिपिन अस्थाना १८.००

Measurement & Evaluation in Psychology & Education
Dr. Bipin Asthana, Dr. Agarwal 25.00
Lib. edn. 35.00

मनोवैज्ञानिक परीक्षण डा० एम. ए. शाह १७.००
कुमारी कुसुम माथुर पु० सं० २५.००

मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल मूल्यांकन
डा० रामपाल सिंह वर्मा ६.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य का विद्यार्थी उपयोगी प्रकाशन

पुस्तक	लेखक	मूल्य
कादम्बरी कथामुखम्	डा० कृष्ण अवतार बाजपेयी	१२.००
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ	डा० जयकिशन प्रसाद	१८.००
संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	डा० बाबूराम त्रिपाठी	१६.००
संस्कृत नाट्य साहित्य	डा० जयकिशन प्रसाद	१२.००
प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह, उषा यादव	२८.००
भारतीय संस्कृति	डा० राजकिशोरसिंह	२०.००
संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० राजकिशोरसिंह	१२.००
संस्कृत व्याकरणम्	डा० बाबूराम त्रिपाठी	२४.००
भारतीय दर्शन	डा० रामकृष्ण आचार्य एवं बाबूराम त्रिपाठी	१२.००
संस्कृत निबन्धांजलिः	डा० रामकृष्ण आचार्य	१५.००
ऋक्-सूक्त-समुच्चयः	डा० रामकृष्ण आचार्य	२०.००
मेघदूतम् [सम्पूर्ण, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	९.००
मेघदूतम् [पूर्वमेघ, सटीक]	डा० रामकृष्ण आचार्य	६.५०
संस्कृत वाङ्मय : मौखिकी	डा० गोविन्द त्रिगुणायत	६.००
वैदिक साहित्य का इतिहास	डा० राजकिशोर सिंह	८.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० द्वारिकाप्रसाद	९.००
काव्यप्रकाश : एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	(प्रेस में)
ध्वन्यालोकः एक अध्ययन	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००
कालिदास और अभिज्ञान शाकुन्तलम्	डा० जयकिशन प्रसाद	५.५०
चतुर्वेद	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
कालिदास और मेघदूत	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
सुबोध संस्कृत भाषा-विज्ञान	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
साहित्य दर्पण : एक अध्ययन	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
संस्कृत निबन्ध कौमुदी	डा० बाबूराम त्रिपाठी	५.५०
रघुवंशम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	४.५०
रघुवंशम् [द्वितीय सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
रघुवंशम् [१३ वाँ सर्ग]	डा० रामकृष्ण आचार्य	३.००
अभिज्ञान शाकुन्तलम् : चतुर्थ अंक	डा० रामकृष्ण आचार्य	४.००
अपरीक्षितकारकम् (पंचतन्त्र से)	डा० पारसनाथ द्विवेदी	४.५०
शिशुपालवधम् महाकाव्यम् [सर्ग १, २]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	१०.००
शिशुपाल वधम् [सर्ग १]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
कुमार सम्भवम् [प्रथम सर्ग]	डा० जयकिशन प्रसाद	६.००
कुमार सम्भवम् [पंचम सर्ग]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	६.००
किरातार्जुनीयम् [प्रथम सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
किरातार्जुनीयम् [द्वितीय सर्ग]	पं० वेणीमाधव शास्त्री मुसलगाँवकर	६.००
भारतीय दर्शन (प्रश्नोत्तर)	डा० राजकिशोरसिंह	८.००
भारतीय संस्कृति [प्रश्नोत्तर में]	डा० जयकिशन प्रसाद	५.००
प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास तथा संस्कृत साहित्य का इतिहास	डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल	७.००
व्याकरण कौमुदी [भाग—१]	डा० बाबूराम त्रिपाठी	३.००
भरतमुनि प्रणीतम्–नाट्यशास्त्रम् [प्रथम एवं द्वितीय अध्याय]	डा० पारसनाथ द्विवेदी	५.००
संस्कृत गद्य रत्नाकर : दिग्दर्शन [आ० वि० प्रकाशन सं० ७० की सम्पूर्ण टीका]	डा० शर्मा, खण्डेलवाल	८.००

विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशिक्षण साहित्य (Methods of Teaching) सम्बन्धी

उपयोगी प्रकाशन

पुस्तक	लेखक	मूल्य
भाषा 1, 2 की शिक्षण विधियाँ एवं पाठ-नियोजन	डा० लक्ष्मीनारायण शर्मा	20.00
हिन्दी-शिक्षण	डा० रामशकल पाण्डेय	12.50
हिन्दी भाषा-शिक्षण	भाई योगेन्द्रजीत	16.00
मातृभाषा-शिक्षण	के० क्षत्रिया	16.00
इतिहास शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	12.00
इतिहास-शिक्षण की रूपरेखा	भाई योगेन्द्रजीत	8.00
सामाजिक अध्ययन का शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	9.00
शिक्षक महाविद्यालयों में सामाजिक अध्ययन शिक्षण	सतगुरु शरण, दिनेश प्रकाश शर्मा	8.00
नागरिक शास्त्र का शिक्षण	गुरसरनदास त्यागी	9.00
नागरिक शास्त्र शिक्षण-कला	डा० उमेश चन्द्र कुदेसिया	(प्रेस में)
भूगोल-अध्यापन	जगदीश प्रसाद वर्मा	14.00
भूगोल-शिक्षण	एच० एन० सिंह	9.00
नवीन विज्ञान-शिक्षण	रावत एवं अग्रवाल	8.50
विज्ञान-शिक्षण	डी० एस० रावत	9.00
जीव विज्ञान-शिक्षण	शैलेन्द्र भूषण	7.50
गणित-शिक्षण	रावत एवं अग्रवाल	10.00
संस्कृत-शिक्षण	डा० रामशकल पाण्डेय	9.40
गृह विज्ञान-शिक्षण	डा० जी० पी० शैरी	11.50
वाणिज्य शिक्षण	उदयवीर सक्सेना	7.00
अर्थशास्त्र-शिक्षण	गुरुसरनदास त्यागी	9.00
समाज-शिक्षा	तेजसिंह तरुण	6.00
Essentials of English Teaching	R. K. Jain	20.00
Teaching English in India	Abha Rani Bisht	12.00
Let us Learn English	M. S. Sachdeva	14.00

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की परीक्षाओं के लिए

सं २०४० सन् (१९८३) के नवीन पाठ्यक्रमानुसार

दिग्दर्शन (गाइडें)

पुस्तक	लेखक	मूल्य
● प्रथमा दिग्दर्शन (गाइड) अनुपूरक सहित	प्रो० श्रीभगवान शर्मा	२७.५०
● मध्यमा दिग्दर्शन (गाइड) अनुपूरक सहित	डा० कृष्णदेव शर्मा	३२.५०
● साहित्यरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड अनुपूरक सहित	,,	३५.००
● साहित्यरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड अनुपूरक सहित	,,	३५.००
● उपवैद्य दिग्दर्शन (गाइड)	वैद्य अनिलकुमार व्यास	१५.००
● वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	वैद्य शिवकुमार व्यास	१५.००
● वैद्य विशारद दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खंण्ड	,,	२२.५०
● आयुर्वेदरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—प्रथम खण्ड	वैद्य भूदेव शर्मा व्यास	२५.००
● आयर्वेदरत्न दिग्दर्शन (गाइड)—द्वितीय खण्ड	,,	३५.००

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना टिकट प्रेषण करने का प्रमाण-पत्र संख्या—AG-009

साहित्य-परिचय [सितम्बर, 1983] पंजीबद्ध संख्या—L. AG.-038

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा संचालित

☼ प्रथमा ☼ विशारद ☼ साहित्यरत्न

☼ उपवैद्य ☼ वैद्य विशारद एवं ☼ आयुर्वेदरत्न

आदि परीक्षाओं की

सं० २०४० (१९८३) के लिए

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकों की सूचियाँ

हमारे यहाँ से निःशुल्क उपलब्ध हैं

[सम्मेलन द्वारा (१) प्रथमा, (२) विशारद एवं (३) साहित्यरत्न परीक्षाओं की विवरण पत्रिकाएं हमारे द्वारा प्रथक-प्रथक प्रकाशित की जाती हैं, जो हमारे यहाँ से उपलब्ध हैं।] अधिक जानकारी हेतु सम्मेलन की बड़ी विवरण पत्रिका ६-०० धनादेश से डाक व्यय सहित भेजकर रजिस्टर्ड डाक द्वारा हमसे प्राप्त करें।

☼ हम सम्मेलन परीक्षाओं की पुस्तकों के प्रमुख विक्रेता हैं।

☼ एम० ए० हिन्दी, संस्कृत, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान, बी० टी० सी० तथा बी० एड० की सभी पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें हमारे यहाँ से उचित मूल्य पर प्राप्त होती हैं तथा पुस्तक-सूची निःशुल्क भेजी जाती है।

☼ हमारे यहाँ पुस्तकें तुरन्त वी० पी० पैकिट द्वारा भेजने की व्यवस्था है।

☼ ग्राहकों की मांग के अनुसार सही पुस्तकें भेजना हमारी विशेषता है।

☼ सम्मेलन की परीक्षाओं के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की समस्या के लिये हमारी सेवाएँ सहर्ष प्रस्तुत हैं।

सम्मेलन परीक्षाओं के दिग्दर्शन (गाइडें) नवीन पाठ्यक्रमानुसार सभी तैयार हैं। कृपया पत्र-व्यवहार करें।

हमारी प्रमुख विशेषता है—

- शीघ्र एवं सन्तोषजनक सेवा
- मधुर व्यवहार
- प्रत्येक पत्र का तुरन्त एवं समुचित उत्तर

कृपया एक बार सेवा का अवसर दें।

विनोद पुस्तक मन्दिर

डा. रांगेय राघव मार्ग, आगरा.

प्रकाशक एवं मुद्रक—विनोद पुस्तक मन्दिर ... प्रेस, आगरा—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar